सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

इंदौर

सोमवार, 18 अगस्त, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 308, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

ट्रंप-पुतिन की बेनतीजा बातचीत का भारत पर क्या होगा असर ?

दीपक मंडल

अलास्का के एंकोरेज में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की आमने-सामने मुलाक़ात का कोई ठोस नतीजा सामने नहीं आया। ट्रंप ने कहा, 'कोई समझौता तब तक नहीं होगा, जब तक असल में समझौता नहीं हो जाता।' वहीं पुतिन ने कहा कि संघर्ष (रूस-यूक्रेन) ख़त्म करने के लिए उसके 'मूल कारण' को ख़त्म करना होगा। इस बैठक के नतीजों का भारत में भी बेसब्री से इंतजार था। ऐसा इसलिए क्योंकि बातचीत से चंद दिन पहले ही अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने ये कहकर खलबली मचा दी थी कि अगर ट्रंप और पुतिन की बातचीत में कुछ नतीजा निकलकर नहीं आया तो भारत पर टैरिफ़ और बढ़ा दिया जाएगा। क्या अब भारत अमेरिका की ओर से घोषित 50 फ़ीसदी टैरिफ़ में राहत की उम्मीद कर सकता है?

अलास्का में पुतिन के साथ बैठक के लिए जाते वक्त एयर फ़ोर्स वन से फ़ॉक्स न्यूज़ को दिए इंटरव्यू में डोनाल्ड ट्रंप ने भारत का ज़िक्र किया। उन्होंने कहा, 'असल में उन्होंने (रूस) एक ऑयल क्लाइंट खो दिया है, यानी भारत, जो लगभग 40 फ़ीसदी तेल ले रहा था। चीन, जैसा कि आप जानते हैं, काफ़ी मात्रा में ले रहा है... और अगर मैंने सेकेंडरी सेंक्शंस लगाए तो यह उनकी नज़र से बेहद विनाशकारी होगा। अगर मुझे करना पड़ा तो मैं करूंगा, शायद मुझे ऐसा न करना पड़े।'

वहीं पुतिन के साथ मुलाक़ात के बाद फ़ॉक्स न्यूज़ को दिए एक अन्य इंटरव्यू में उन्होंने कहा 'अब मुझे शायद दो या तीन हफ़्ते या कुछ और समय बाद इस बारे में सोचना पड़ेगा, लेकिन हमें अभी इसके बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं है।' हालांकि ट्रंप के इस जवाब से ये पता नहीं चलता कि वो चीन के खिलाफ़ सेकेंडरी टैरिफ़ रोकने की बात कर रहे हैं या भारत के खिलाफ़।

'पिछले दिनों भारत और अमेरिका के बीच संबंधों में आई तल्खी को देखते हुए कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि अलास्का में पुतिन के साथ मीटिंग के बाद अमेरिका और भारत के रिश्ते और ख़राब हो सकते हैं। वॉशिंगटन डीसी स्थित विल्सन सेंटर के निदेशक माइकल कुगलमैन ने एक्स पर लिखा, अब अमेरिका-भारत के बीच और तनाव बढ़ सकता है।' विशेषज्ञों का कहना है कि ट्रंप भारत की रणनीतिक स्वायत्तता को नज़रअंदाज़ करते आ रहे हैं।

ट्रंप की इस नीति के बाद भारत के लिए ये ज़रूरी हो गया कि वो अमेरिका के साथ अपने संबंधों की समीक्षा पर विचार शुरू कर दे। 'जेएनयू के स्कूल ऑफ़ इंटरनेशनल स्टडीज़' में एसोसिएट प्रोफ़ेसर अरविंद येलेरी ने कहा, 'अब रूस और चीन कह रहे हैं कि हमने आपको (भारत) पहले ही आगाह किया था कि अमेरिका पर भरोसा न करें। दोनों देश अब भारत का समर्थन करते नज़र आ रहे हैं। दोनों ने कहा है कि रणनीतिक स्वायत्तता भारत का हक़ है। अमेरिका इसे नज़रअंदाज नहीं कर सकता।'

मौजूदा हालात के बीच एक सवाल ये भी उठ रहा है कि क्या भारत अमेरिका का दामन छोड़ अब रूस का और क़रीबी हो जाएगा? रूस से भारत के रिश्ते पुराने हैं। भारत लंबे समय तक सामरिक और आर्थिक तौर पर रूस पर काफ़ी अधिक निर्भर था। लेकिन तीन दशक पहले भारत ने अमेरिका के साथ भी रिश्ते मज़बूत करने की शुरुआत की। भारत को अपने आर्थिक उदारीकरण में इसका काफ़ी फ़ायदा मिला। उसे अमेरिका से नई टेक्नोलॉजी भी मिली। भारतीय पेशेवरों को अमेरिका में बड़ी तादाद में नौकरियां मिलीं। लेकिन भारत के खिलाफ़ ट्रंप के हाल के कुछ कदमों के बाद ये कहा जाने लगा है कि वो एक बार फिर रूस के क़रीब जा सकता है। हालांकि कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि रूस अमेरिका का विकल्प नहीं हो सकता।

विदेश और रणनीतिक मामलों पर रिसर्च करने वाली संस्था अनंता सेंटर की सीईओ इंद्राणी बागची ने कहा, 'रूस ने खुद को बेहद कमज़ोर बना लिया है। उसके पास अब क्या है? रूस के और नज़दीक जाकर भारत को क्या मिलेगा? रूस अब पूरी तरह से चीन पर निर्भर है और चीन और भारत के बीच सीमा विवाद के चलते तनाव बढ़ गया है। उनका कहना है कि चीन से टकराव की हालत में रूस खुलकर भारत का पक्ष लेगा, ये कह पाना संभव नहीं है। जबकि अमेरिका के साथ भारत के अच्छे रिश्तों की गुंजाइश अभी भी बची हुई है। सामरिक और रणनीतिक रिश्ते टैरिफ़ से तय नहीं होते। भारत में टैरिफ़ बहुत ऊंचे हैं। तो क्या इससे भारत के दूसरे देशों के साथ संबंध बिगड़ गए हैं। भारत को अब जाग जाना चाहिए और अपने आर्थिक सुधारों को और तेज़ करना चाहिए।'

ट्रंप और पुतिन की मुलाक़ात के बाद एक और बड़ा सवाल ये उठ रहा है कि क्या इस बातचीत के बाद यूक्रेन के खिलाफ़ रूस का रवैया नरम हो सकता है। क्योंकि ट्रंप ने कहा है कि ज़ेलेंस्की और पुतिन के बीच सीधी बातचीत होनी चाहिए। फॉक्स न्यूज़ को दिए इंटरव्यू में उन्होंने इसके संकेत दिए। विशेषज्ञों का मानना है कि पुतिन का अमेरिका आकर ट्रंप से बात करना बेहद अहम घटनाक्रम है। हालांकि वो ये मानते हैं कि पूरी दुनिया को ये पता था कि पहली ही मुलाक़ात में रूस-यूक्रेन युद्धविराम को लेकर किसी सकारात्मक नतीजे की उम्मीद नहीं की जा सकती।

यूरोप के नेताओं ने एक साझा बयान जारी कर यूक्रेन की संप्रभुता के प्रति अपना अटूट समर्थन दोहराया है। इन मुल्कों ने कहा कि रूस यह तय नहीं कर सकता कि यूक्रेन भविष्य में नेटो या यूरोपीय संघ से कैसे जुड़ेगा। वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की ने ट्रंप के इस प्रस्ताव का स्वागत किया कि बातचीत में यूक्रेन भी शामिल हो, लेकिन उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि सुरक्षा गारंटी सुनिश्चित करने के लिए यूरोप की भागीदारी ज़रूरी है। ट्रंप के बाद के बयान से अमेरिका और यूरोप के रिश्तों में दरार और बढ़ सकती है। ट्रंप ये शर्त लाद सकते हैं कि रूस यूक्रेन का जीता हुआ हिस्सा रख ले तभी शांति हो सकती है। इस पर यूरोपीय देश कभी सहमति नहीं देंगे।

दूसरा अहम मुद्दा नेटो के भीतर अमेरिका और यूरोपीय देशों के बीच टकराव है। ट्रंप ने बार-बार कहा है कि यूरोप को अपनी सुरक्षा का खर्चा बढ़ाना होगा। दूसरी ओर यूरोप के नेता चाहते हैं कि रूस-यूक्रेन युद्ध ख़त्म हो लेकिन इसमें यूक्रेन को कॉम्प्रोमाइज़ न करना पड़े। अरविंद येलेरी का कहना है कि यूरोप अब एक स्विंग स्टेट की तरह व्यवहार नहीं कर सकता है। उसे भारत, चीन और दूसरे उभरते देशों के साथ रिश्ते मज़बूत करने होंगे।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

'मेड इन इंडिया' सामान ही खरीदें

● स्वदेशी का जिक्र कर पीएम मोदी ने की व्यापारियों से अपील

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को दिल्ली-एनसीआर में दो प्रमुख राजमार्ग परियोजनाओं का उद्घाटन किया। परियोजना का उद्घाटन के बाद उन्होंने लोगों को संबोधित किया। संबोधन के दौरान उन्होंने 'वोकल फॉर लोकल' के मंत्र पर जोर दिया। पीएम मोदी ने कहा कि देश के लोगों ने वोकल फॉर लोकल के मंत्र के साथ खादी को अपनाया। हमारा मेड इन इंडिया यूपीआई दुनिया का सबसे बड़ा रियल-डिजिटल पेमेंट प्लेटफॉर्म बन गया है। पीएम मोदी ने इशारों इशारों में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को संदेश भी दे दिया। पीएम मोदी ने कहा कि आप भारत में रहकर भारत का ही प्रोडक्ट खरीदें। स्वदेशी चीजें को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देंगे। पीएम मोदी ने आगे कहा कि आप लोग वोकल फॉर लोकल पर ध्यान दें।

विकास क्रांति की गवाह बन रही है दिल्ली

प्रधानमंत्री ने कहा कि अगस्त का यह महीना आजादी और क्रांति के रंग में रंगा हुआ है। आजादी के इस त्योहार के बीच आज देश की राजधानी दिल्ली विकास क्रांति की गवाह बन रही है। उन्होंने आगे कहा कि दुनिया, भारत को देखती है परखती है, तो उसकी पहली नजर हमारी राजधानी दिल्ली पर पड़ती है। इसलिए हमें दिल्ली को विकास का ऐसा मॉडल बनाना होगा, जहां हर कोई महसूस करे कि हां, यह एक विकसित देश की राजधानी है।

बता दें कि जिन दो प्रमुख राजमार्ग परियोजनाओं का उद्घाटन हुआ है वो द्वारका एक्सप्रेसवे का दिल्ली खंड और अर्बन एक्सटेंशन रोड-2 है।

खिलौनों से लेकर एक्सपोर्ट तक बदली तस्वीर

पीएम ने आगे कहा कि एक दशक पहले तक भारत खिलौने भी बाहर से मंगाता था। आज हालात बदल चुके हैं और देश 100 से अधिक देशों में खिलौने निर्यात कर रहा है। उन्होंने कहा की यह बदलाव इस बात का सबूत है कि भारत आत्मनिर्भर बन रहा है और दुनिया को लोकल प्रोडक्ट्स से जोड़ रहा है। मोदी ने कहा-जीएसटी में नेक्स्ट जेनरेशन रिफॉर्म होने जा रहा है। दीवाली में डबल बोनस मिलने वाला है। इसका पूरा प्रारूप राज्यों को भेज दिया है। इसका फायदा सभी को होगा। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि यूपीए सरकार के दौरान फाइलें चलती थीं, लेकिन उन पर काम हमने किया।

सीपी राधाकृष्णन होंगे एनडीए के उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार

जेपी नड्डा ने किया ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। रविवार को भाजपा कार्यालय में संसदीय बोर्ड की बैठक हुई। प्रधानमंत्री मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा बैठक में शामिल थे। भाजपा संसदीय बोर्ड की बैठक में आखिरकर महाराष्ट्र के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन एनडीए की तरफ से उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार का ऐलान हो गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा की बैठक में इस पर सहमति बनी। नड्डा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इसका ऐलान किया। राधाकृष्णन 21 अगस्त को नामांकन दाखिल करेगा। इस दौरान एनडीए शासित राज्यों के सभी मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री भी शामिल होंगे। उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए 9 सितंबर को वोटिंग होगी। उसी दिन काउंटिंग भी होगी। नामांकन दाखिल करने की आखिरी

तारीख 21 अगस्त है। 25 अगस्त तक उम्मीदवारी वापस ली जा सकती है। दरअसल, जगदीप धनखड़ ने 21 जुलाई की रात अचानक उपराष्ट्रपति के पद से इस्तीफा दे दिया था। 74 साल के धनखड़ का कार्यकाल 10 अगस्त 2027 तक था।

सुप्रभात

प्रेम एक ऐसा स्वाद है
जिसे जीभ नहीं चखती,
मन चखता है
इसलिये हम
प्रेम के आदी नहीं होते
उसके वशीभूत हो जाते हैं
जहाँ उससे
निकल पाने के सारे उपाय
निरुत्तर होते हैं
क्योंकि वो भी प्रेम में होते हैं।

– अनामिका चक्रवर्ती 'अनु'

'वोट अधिकार यात्रा' का हो गया आगाज

● लालू बोले-बीजेपी और एनडीए को उखाड़ फेंको ● राहुल ने कहा-ये संविधान को बचाने की लड़ाई है

तेजस्वी ने चुनाव आयोग को केन्द्र की कठपुतली बताया

पटना (एजेंसी)। बिहार में स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर, सामान्य शब्दों में वोटर लिस्ट रिवीजन) के खिलाफ राहुल गांधी की 'वोट अधिकार यात्रा' सासाराम से शुरू हुई। यहां के सुआरा हवाई अड्डा ग्राउंड में हुई जनसभा में राहुल बोले, ये संविधान को बचाने की लड़ाई है। पूरे देश में बीजेपी-आरएसएस संविधान को मिटाने पर तुले हैं। जहां भी चुनाव होता है, ये जीतते हैं। महाराष्ट्र में ओपिनियन पोल कह रहे थे, महागठबंधन चुनाव जीतेगा। लोकसभा में महागठबंधन जीतता है, लेकिन 4 महीने में उसी क्षेत्र में हम हारते हैं। हमने पता लगवाया तो

पता चला 1 करोड़ नए वोटर जादू से पैदा हो गए। बिहार की जनता वोटों की चोरी नहीं करने देगी। क्योंकि गरीब-कमजोर लोगों के पास सिर्फ वोट का हक है। आयोग जो कर रहा है, वो सबको पता है। इलेक्शन कमीशन को हम ये नहीं करने देंगे। नरेंद्र मोदी जी और एनडीए अरबपतियों के साथ सरकार चलाती है। आप का पूरा धन 5-6 अरबपतियों को दिया जाता है।

लागल-लागल झुलनिया में धक्का, बलम कलकत्ता चलल

सासाराम की सभा में लालू यादव ने मंच से बैठ कर ही बोलना शुरू किया। उन्होंने केंद्र और बिहार सरकार पर जोरदार हमला बोला। लालू यादव ने मंच से बैठ कर ही बोलना शुरू किया। उन्होंने कहा कि चोरों को हटाइए और बीजेपी को भगाइए। हम लोगों की राष्ट्रीय एकता पार्टी है, जो हम लोगों का उसको जिताइए। किसी भी कीमत पर वोट चोरी करने वाली भाजपा को आने नहीं देना है। सब लोग अभी से एक हो जाइए। एक होकर के राहुल गांधी, तेजस्वी यादव सभी मिल के एकजुट होकर, खरगे जी सबलोग मिलकर, इसको उखाड़ कर फेंकिए। लोकतंत्र को और मजबूत होने दीजिए। फिर होने अपना फेमस डायलॉग सुनाया... लागल-लागल झुलनिया में धक्का, बलम कलकत्ता चलल।

मध्यप्रदेश को बनायेंगे मिल्क केपिटल : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

दुग्ध उत्पादन के जरिए बढ़ायेंगे पशुपालकों की आय, गाय का दूध भी खरीदेगी सरकार

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश को विकास की नई ऊंचाइयों तक पहुंचाना हमारी प्राथमिकता है। आज प्रदेश का हर कोना विकास कार्यों से सज-संवर रहा है। हम प्रदेश के किसानों और पशुपालकों की आय बढ़ाकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में प्रयास कर रहे हैं। दुग्ध उत्पादन में तेजी लाकर हम वर्ष 2028 तक मध्यप्रदेश को मिल्क केपिटल बनाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सिर्फ भैंस का नहीं, हमारी सरकार अब गाय का दूध भी खरीदेगी। हम गाय के दूध की खरीदी की कीमत भी ज्यादा देंगे। डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना के जरिए हमने तय किया है कि 25 गाय और 42 लाख रुपये तक की गौशाला यूनिट स्थापित करने पर दूध और अन्य उत्पाद तो पशुपालक के होंगे, सरकार पशुपालक को 10 लाख रुपये प्रोत्साहन अनुदान के रूप में देगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि बड़ी गौशालाओं के निर्माण पर सरकार निवेश लागत की 25 प्रतिशत तक की निवेश राशि अनुदान के रुप में माफ करेगी। मुख्यमंत्री ने स्थानीय जनप्रतिनिधियों की मांग पर क्षेत्र के धार्मिक स्थल कोटेश्वर एवं विरुपाक्ष महादेव में विकास कराने की बात कही।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को रतलाम ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र के कुंडाल गांव में आयोजित विकास कार्यों के लोकार्पण एवं भूमिपूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने रिमोट का बटन दबाकर करीब 246 करोड़ रुपए की लागत वाले विभिन्न 57 विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया। इसमें 158.64 करोड़ के 37 कार्यों का लोकार्पण और 87.27 करोड़ लागत के कार्यों का भूमि-पूजन शामिल है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने क्षेत्रीय ग्रामीणों की सुविधा के लिए प्रस्तावित 113 करोड़ रुपये की पेयजल योजना और मोरकुंडवा सिंचाई योजना को भी मंजूरी दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि रतलाम और खाचरोद के बीच परीक्षण कराकर 220 करोड़ रुपये की लागत से फोरलेन रोड़ बनाई जाएगी। उन्होंने कहा कि सैलाना के लोग चिंता न करें, जनहित में सरकार हर घड़ी उनके साथ खड़ी है। खरमोर पक्षी अभयारण्य के कारण सैलानावासियों को हो रही परेशानी का समुचित समाधान निकालकर कठिनाई दूर की जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हम बहुत जल्द मुख्यमंत्री सुगम परिवहन बस सेवा योजना के जरिए प्रदेश में फिर से सार्वजनिक बस परिवहन सेवा प्रारंभ कर रहे हैं।

यूरोप की सबसे ऊंची चोटी पर गूंजा 'जय श्रीराम'

● हरियाणवी ने फहराया तिरंगा, चोटी पर किया भारत माता का जयघोष

रेवाड़ी (एजेंसी)। हरियाणा के पर्वतारोही नरेंद्र यादव ने 15 अगस्त को सुबह सवा 9 बजे यूरोप की सबसे ऊंची माउंट एल्ब्रूस की चोटी पर तिरंगा फहराया। चोटी पर पहुंचते ही जय श्रीराम और भारत माता का जयघोष किया। साथ ही नशा मुक्ति का संदेश दिया। रूस में

स्थित इस चोटी पर यह उनकी तीसरी चढ़ाई थी। वह इस पर सबसे ज्यादा चढ़ाई करने वाले पहले भारतीय बन गए हैं। यह उनके नाम 24वां वर्ल्ड रिकॉर्ड होगा। यह काकेशस पर्वत श्रेणी में आता है। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 18,150 फीट है। यूरोप और एशिया की सीमा पर स्थित है, लेकिन एल्ब्रूस का पश्चिमी हिस्सा भौगोलिक रूप से यूरोप में गिना जाता है। इस कारण से यह यूरोप का सबसे ऊंचा पर्वत माना जाता है। अभियान को लीड करने के लिए 30 वर्षीय नरेंद्र यादव ने जिस 12 सदस्यीय दल का नेतृत्व किया, उसमें नेपाल, स्वीडन, रूस, बंगलादेश, ऑस्ट्रेलिया और चिली के पर्वतारोही शामिल रहे। अब अक्टूबर में इससे भी चुनौतीपूर्ण अभियान पर जाएंगे, जिनमें ज्वालामुखी पर्वतों की चढ़ाई शामिल है।

अब जम्मू-कश्मीर के कठुआ में तीन जगह फट गए बादल

● 7 लोगों की मौत, कई घायल, कुल्लू में भी तबाही

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में रविवार सुबह बादल फटा है। जम्मू-कश्मीर में बादल फटने की ये बीते 3 दिन में दूसरी घटना है। रविवार को कठुआ जिले में बॉर्डर से सटे इलाके में 3 जगह बादल फटा। जोद घाटी इलाके में 7 लोगों की मौत हो गई और कई घायल हैं। जोद के अलावा मथरे चक, बगार्ड-चंगड़ा और दिलवान-हुटली में भी लैंडस्लाइड हुई।

14 अगस्त को भी जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ के चसोटी में भी ऐसी ही घटना हुई थी। लैंडस्लाइड के बाद जोद गांव का शहर से संपर्क टूटा गया था, काफी मशक्कत के बाद रेस्क्यू टीम गांव पहुंची। घरों में कई फीट तक पानी-मलबा भरा है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 35 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ सोमवार, 18 अगस्त 2025

> जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
>
> चाणक्य नीति

अब बहुत जल्द बदलने वाला है पीएमओ का पता !

● 78 साल बाद नए जगह पर शिफ्ट होने वाला है प्रधानमंत्री कार्यालय

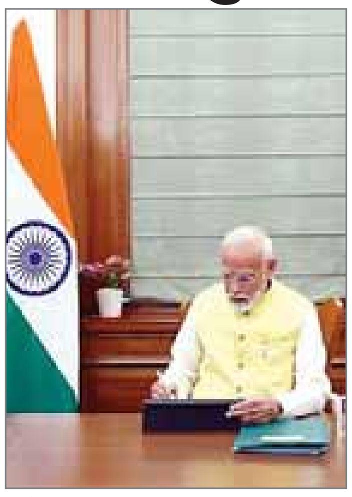

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री कार्यालय यानी (पीएमओ) का पता बदलने वाला है। वर्तमान में पीएमओ साउथ ब्लॉक में स्थित है जो अगले महीने एग्जिक्यूटिव एन्कलेव में शिफ्ट हो जाएगा। सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट के तहत तैयार किए गए इस नए एन्क्लेव में प्रधानमंत्री कार्यालय के अलावा कैबिनेट सचिवालय, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय और एडवांस कॉन्फ्रेंसिंग सुविधा भी होगी। गौरतलब है कि नया पीएमओ प्रधानमंत्री के आवास से ज्यादा नजदीक है। साउथ ब्लॉक स्थित पीएमओ में आधुनिक सुविधाओं की कमी है। वहीं, जगह की भी कमी महसूस की जा रही है। जानकारी के मुताबिक, नए पीएमओ का नामकरण भी कुछ नया किया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने अपने तीसरे कार्यकाल से पहले संबोधन में कहा था कि पीएमओ

जनता का होना चाहिए। यह मोदी का पीएमओ नहीं है। हाल ही में प्रधानमंत्री मोदी ने गृह मंत्रालय और कार्मिक मंत्रालय के नए कार्यालय 'कर्तव्य भवन-3' का उद्घाटन करते हुए कहा कि प्रशासनिक मशीनरी अभी भी ब्रिटिश कालीन इमारतों से काम कर रही है, जहां रोशनी और वेंटिलेशन की कमी है सूत्रों के मुताबिक, नए पीएमओ को नया नाम भी दिया जा सकता है, जो 'सेवा' की भावना को दर्शाए। प्रधानमंत्री ने कहा था,पीएमओ जनता का होना चाहिए।संग्रहालय' का रूप दिया जाएगा। इस परियोजना के तहत राष्ट्रीय संग्रहालय और फ्रांस म्यूजियम्स डेवलपमेंट के बीच समझौता हुआ है। सरकार का कहना है कि यह संग्रहालय भारत की सांस्कृतिक धरोहर है।

खराब जीवनशैली, खानपान से युवा भी बन रहे शिकार

25 साल के ग्राफिक डिजाइनर की कार्डियक अरेस्ट से मौत

भोपाल (नप्र)। राजधानी में एक निजी कंपनी में काम करने वाले 25 वर्षीय ग्राफिक डिजाइनर कपिल चौरसिया का गुरुवार को हृदय गति रुकने (कार्डियक फेलियर) से निधन हो गया। सहकर्मियों के अनुसार, कपिल अचानक कार्यस्थल पर बेहोश होकर गिर पड़े।

मौके पर उनके टीम लीडर यश पाल और अन्य ऑफिस के साथियों ने उन्हें तत्काल निजी अस्पताल ले जाया, जहां डॉक्टरों ने बताया कि वे इतने गंभीर स्वास्थ्य मामले का उपचार करने में सक्षम नहीं हैं। इसके बाद सहकर्मी उन्हें सीधे तुलसी नगर स्थित जेपी अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

यह स्थिति सिर्फ कपिल चौरसिया की नहीं है, बल्कि युवाओं में तेजी से हार्ट फेलियर की घटनाएं बढ़ रही हैं। इसके पीछे खराब खानपान, शारीरिक गतिविधि की कमी, धूम्रपान और तनाव दिल की बीमारियों के मुख्य कारण हैं। मोटापा, हाई ब्लड प्रेशर, डायबिटीज और हाई कोलेस्ट्रॉल भी दिल की बीमारियों को बढ़ावा देते हैं। इसके अलावा जेनेटिक कारणों से भी दिल की बीमारी का खतरा रहता है।

हार्ट अटैक की समस्या पुरुषों में ज्यादा

नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन में प्रकाशित एक शोध के अनुसार हार्ट अटैक की समस्या पुरुषों में ज्यादा होती है। लेकिन ऐसी महिलाएं जिनमें ब्लड प्रेशर या डायबिटीज की अनुवांशिक बीमारी का इतिहास रहा हो या साइको सोशल डिस्ट्रेस ज्यादा हो, वे ज्यादा रिस्क में रहती हैं। वहीं, अल्कोहल और स्मोकिंग करने वाले पुरुषों में ज्यादा रिस्क होता है।

भागदौड़ भरी जिंदगी से होने वाला तनाव, अनियमित खानपान, नशा और अपर्याप्त नींद यह सब हृदय से जुड़ी बीमारियों को बढ़ावा देते हैं। इन सभी कारणों से शरीर में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ती है, जो नसों में प्लाक बनाती है। इससे हार्ट अटैक का रिस्क बढ़ता है।

15 अगस्त पर 'पाकिस्तान मोहल्ला' का खात्मा !

● बीजेपी एमएलए पूर्णेश मोदी की मौजूदगी में रखा गया नया नाम

अहमदाबाद/सूरत (एजेंसी)। गुजरात की हीरा नगरी में 79वें स्वतंत्रता दिवस पर बड़ा बदलाव हुआ। आजादी के बाद से पाकिस्तानी मोहल्ले के तौर पुकारे जाने वाले एक क्षेत्र को नया नाम दिया गया। सूरत शहर के रांदेर इलाके के रामनग में स्थित पाकिस्तान मोहल्ले का नाम आधिकारिक तौर पर बदल दिया गया। बीजेपी के विधायक और पूर्ण मंत्री पूर्णेश मोदी की मौजूदगी में इस क्षेत्र का नाम पाकिस्तान मोहल्ले से हिन्दुस्तानी मोहल्ला किया गया। भाजपा विधायक पूर्णेश मोदी ने स्थानीय निवासियों की उपस्थिति में एक नए साइनबोर्ड का उद्घाटन किया। नए बदलाव के बाद अब लोग अपने दस्तावेजों में पाकिस्तानी मोहल्ले की जगह पर नए नाम को अपडेट कराने के लिए उत्सुक है। सोमवार से इसके लिए लोग आवेदन जाम करेंगे, ताकि उनके आधार के पते से पाकिस्तानी शब्द हट जाएगा। सूरत में इस मोहल्ले की जड़ें विभाजन से जुड़ी हुई थीं। जब कई सिंधी शरणार्थी सूरत में आकर बस गए थे। उन्होंने रामनगर नाम से एक कॉलोनी बसाई थी, जिसमें लगभग 600 घर थे। समय के साथ इस कॉलोनी का एक हिस्सा पाकिस्तान मोहल्ले के नाम से लोकप्रिय हो गया। इस इलाके का नाम बदलने के पहले के प्रयास में आंतरिक चौराहे का नाम हेमू कलानी चौक रखा गया, लेकिन यह काफी लोकप्रिय नहीं हो पाया।

रेल की चेन खींची तो सीधा पहुंचेंगे जेल

भोपाल डिविजन में सिर्फ 7 महीने में 3,383 लोगों ने की चैन पुलिंग, हजारों पर कार्रवाई

भोपाल (नप्र)। अगर आप सोचते हैं कि ट्रेन की अलार्म चेन खींचना मामूली बात है, तो यह आंकड़े आपकी सोच बदल देंगे। भोपाल रेल मंडल में केवल जुलाई 2025 तक 3,383 बार अलार्म चेन खींची गई और इनमें से 2,981 मामलों में यात्रियों पर कार्रवाई हो चुकी है। कई को जुर्माना भरना पड़ा तो कुछ को जेल की हवा तक खानी पड़ी।रेलवे ने साफ कर दिया है कि अब इस लापरवाही को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

भारतीय रेल ने यह सुविधा यात्रियों की सुरक्षा और आपातकालीन मदद के लिए दी है, लेकिन हाल के दिनों में लोग इसे शरारत या व्यक्तिगत सुविधा के लिए इस्तेमाल करने लगे हैं। कोई यात्री देर से स्टेशन पर पहुंचा, किसी का परिजन छूट गया या फिर गलत डिब्बे में बैठने की वजह से ट्रेन रोकनी थी, ऐसे कारणों से अलार्म चेन खींचने के मामले लगातार बढ़ रहे हैं।

रानी कमलापति, भोपाल, इटारसी, विदिशा, बीना, हरदा, गुना और शिवपुरी जैसे बड़े स्टेशनों पर यह समस्या सबसे ज्यादा सामने आई है। वरिष्ठ मंडल सुरक्षा

आयुक्त डॉ. अभिषेक के निर्देश पर रेलवे सुरक्षा बल ने अब चेकिंग और जागरूकता अभियान तेज कर दिया है। यात्रियों को बताया जा रहा है कि अलार्म चेन का गलत इस्तेमाल न केवल अपराध है बल्कि यह सैकड़ों यात्रियों की यात्रा को प्रभावित कर देता है।

घर से नाराज होकर भागा नाबालिग

स्टेशन पर यात्रियों की भीड़ में घूम रहा था; आरपीएफ ने कोलार पुलिस को सौंपा

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल रेलवे स्टेशन पर 15 अगस्त को यात्रियों की भीड़ के बीच रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के जवानों को एक नाबालिग बालक संदिग्ध हालत में घूमता हुआ नजर आया। जवानों ने तुरंत सतर्कता दिखाते हुए उसे अपने संरक्षण में लिया और पूछताछ शुरू की।

बालक ने अपना नाम करण बैरवा (14), निवासी कुरावर सामपुर, भोपाल बताया। उसने कहा कि वह घर से नाराज होकर भाग आया था।

आरपीएफ पोस्ट पर सहायक उपनिरीक्षक संजय कुमार जनोरिया ने विस्तार से पूछताछ की, इस दौरान बालक ने अपने परिजनों का मोबाइल नंबर भी बताया। नंबर पर संपर्क साधकर आरपीएफ ने उसके पिता भूरेलाल को सूचना दी। पिता ने बताया कि उनका बेटा 14 अगस्त की शाम करीब 4 बजे से लापता था और इस संबंध में थाना कोलार, भोपाल में अपहरण का मामला धारा 137(2) बीएनएस के तहत दर्ज कराया गया था। परिवार को बेटे के मिलने की जानकारी मिलते ही पिता भूरेलाल थाना कोलार पुलिस के उपनिरीक्षक के साथ आरपीएफ पोस्ट पहुंचे।

कांग्रेस नेता को रास नहीं आया पीएम मोदी का भाषण

बेंगलुरु (एजेंसी)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व राज्यसभा सांसद बीके हरिप्रसाद ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को भारतीय तालिबान करार देते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा है। हरिप्रसाद का यह बयान उस वक्त

आया है 15 अगस्त को प्रधानमंत्री ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले से संबोधन में संघ की सराहना की थी। न्यूज एजेंसी से बातचीत में हरिप्रसाद ने कहा,आरएसएस देश में शांति भंग करने की कोशिश कर रहा है। मैं सिर्फ इतना कहूंगा कि संघ भारतीय तालिबान है और प्रधानमंत्री उसकी प्रशंसा कर रहे हैं।

झूठे आरोपों से डरता नहीं है चुनाव आयोग

● हम अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटेंगे ● कहा-न पक्ष-न विपक्ष, हमारे लिए तो सब समकक्ष

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार में वोटर लिस्ट का स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन शुरू होने के बाद से लगातार कांग्रेस नेता राहुल गांधी और आरजेडी नेता तेजस्वी यादव समेत तमाम विपक्षी दल चुनाव आयोग पर हमलावर हैं। वोट चोरी और वोटर लिस्ट में गड़बड़ी जैसे आरोपों का सामना कर रहे चुनाव आयोग ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर सभी आरोपों का सिलसिलेवार जवाब

दिया। इस साल 18 फरवरी को चुनाव आयुक्त से मुख्य चुनाव आयुक्त का पदभार संभालने के बाद सीईसी ज्ञानेश कुमार की यह पहली प्रेस कॉन्फ्रेंस है। जिसमें उन्होंने आयोग के ऊपर लगातार किए जा रहे हमलों का करारा जवाब दिया और बताया कि बिहार मे क्यों एसआईआर हो रहा है।

● **बिहार में क्यों हो रहा एसआईआर, यह भी बताया**- बिहार में मतदाता पुनरीक्षण को लेकर लगातार उठाए जा रहे सवाल पर मुख्य चुनाव आयुक्त ने कहा, पिछले दो दशकों से लगभग सभी राजनीतिक दल मतदाता सूची में सुधार की मांग करते रहे हैं। इसी मांग को पूरा करने के लिए चुनाव आयोग ने गहन पुनरीक्षण की शुरुआत बिहार से की है। एसआईआर की प्रक्रिया में सभी मतदाता, बूथ लेवल ऑफीसर और सभी राजनीतिक दलों द्वारा नामित 1.6 लाख बीएलओ ने मिलकर एक प्रारूप सूची तैयार की है।

पानी में उगने वाली विदेशी ड्रग्स पहुंच रही राजस्थान

● विदेशों से खाली मकानों के एड्रेस पर हो रही डिलीवरी

जयपुर (एजेंसी)। पानी में उगने वाला विदेशी गांजा (हाइड्रोपोनिक वीड) पार्सल के जरिए राजस्थान में डिलीवर किया जा रहा है। रेव पार्टियों में इस्तेमाल होने वाली ये गांजे की एक महंगी किस्म है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत 1 करोड़ रुपए प्रति किलो है। एयरपोर्ट पर सख्ती के चलते अब इस नशे की खेप खाली मकानों के पतों पर पार्सल में मंगवाई जा रही है। पड़ताल में सामने आया कि जयपुर

स्थित विदेशी पोस्टऑफिस में थाईलैंड से हाइड्रोपोनिक वीड के पार्सल आ रहे हैं। ड्रग्स के जो पार्सल जयपुर और उदयपुर के एड्रेस पर आते थे, वह अब जोधपुर के पतों पर भेजे जा रहे हैं। पिछले एक महीने में ऐसे दो संदिग्ध पार्सल एनसीबी के हाथ लगे हैं, जिनकी जांच की जा रही है। आशंका है यूनिवर्सिटी एरिया में स्टूडेंट्स को इस महंगे नशे की लत लगाई जा रही है। विदेशों से आ रहे ड्रग्स के ये पार्सल कितनी बड़ी चुनौती बन गए हैं। राजस्थान में इसका बढ़ता चलन कितना खतरनाक साबित हो रहा है। शिकंजा कसने के बावजूद कैसे तस्कर हर बार पैटर्न बदल रहे हैं। हाइड्रोपोनिक मरिजुआना भी कहा जाता है।

यूपी चुनाव : मिशन 2027 के लिए कांग्रेस का नया 'दांव'

पंचायत से विधानसभा तक संगठन पर फोकस

'वोट चोरी' बनेगा चुनावी मुद्दा, तैयारी हुई तेज

मेरठ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की राजनीति में कांग्रेस एक बार फिर बड़ा दांव खेलने की तैयारी में जुट गई है। 2027 के विधानसभा चुनावों को देखते हुए पार्टी ने न सिर्फ 403 सीटों पर अपनी रणनीति बना ली है, बल्कि इस बार संगठन को जमीनी स्तर से खड़ा करने की ठोस योजना भी तय की है। कांग्रेस का मकसद साफ है पंचायत से लेकर विधानसभा तक ऐसा ढांचा खड़ा करना जो सिर्फ चुनावी मौसम में नहीं, बल्कि हर वक्त सक्रिय रहे। कांग्रेस ने 2027 की रणनीति का आधार बनाया है 'संगठन सृजन अभियान'। इसके तहत बूथ से लेकर मंडल स्तर तक पूरी संरचना को नया रूप दिया जा रहा है। हर विधानसभा क्षेत्र को तीन श्रेणियों ए, बी और सी में बांटकर अलग-अलग रणनीति बनाई गई है। ब्लॉक और वार्ड स्तर पर नई नियुक्तियां की जा रही हैं।

● **कांग्रेस का फोकस मुस्लिम, दलित और पिछड़े समाज पर**- कांग्रेस ने संकेत दे दिए हैं कि उसकी राजनीति सिर्फ पारंपरिक वोट बैंक तक सीमित नहीं रहेगी। पार्टी मुस्लिम समाज के साथ-साथ दलित और पिछड़े वर्ग पर भी विशेष ध्यान देने जा रही है। हर जिले में 'संगठन सृजन कोऑर्डिनेटर' नियुक्त होंगे, जो लगातार रिपोर्ट देंगे। वहीं पूर्व सांसद, पूर्व विधायक और वरिष्ठ नेताओं को जिला-दर-जिला जिम्मेदारी दी जा रही है ताकि जमीनी स्तर पर पार्टी को मजबूत किया जा सके।

एलएलबी छात्र की हत्या करने वाले अरेस्ट

3 निगरानीशुदा बदमाशों ने पेट्रोल पंप पर की थी वारदात, अलग-अलग स्थानों पर काटी फरारी

भोपाल (नप्र)। भोपाल में पेट्रोल पंप पर पहले पेट्रोल डलवाने के विवाद में लॉ स्टूडेंट के सीने में छुरी मारकर हत्या करने वाले तीन आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों ने वारदात के बाद सीहोर के कुबेरेश्वर धाम सहित मंडीदीप, बैरसिया और अन्य स्थानों पर फरारी काटते रहे। पुलिस टीम लगातार उनका पीछा कर रही थी। भोपाल लौटते ही पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। तीनों आरोपियों के खिलाफ पूर्व में भी गंभीर अपराध दर्ज हैं।

थाना प्रभारी महेश लिल्हारे ने बताया कि घटना 6 अगस्त की सुबह करीब 4 बजे की है। फरियादी अनमोल दुबे अपने दोस्त संस्कार बबेले (22) के साथ एक्टिवा पर पेट्रोल भरवाने पेट्रोल पंप पहुंचे थे। इसी दौरान एक्टिवा पर आए तीन बदमाशों ने पहले पेट्रोल डलवाने की बात को लेकर विवाद शुरू कर दिया। बदमाशों ने गाली-गलौज करते हुए दोनों दोस्तों को धमकाया और अचानक हमला कर दिया।

बीच-बचाव करने आए अनमोल पर भी छुरी से हमला किया गया, जबकि संस्कार के सीने और माथे पर वार कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया गया। अस्पताल ले जाने पर उसकी मौत हो गई। संस्कार इंदौर का रहने वाला था और प्राइवेट कॉलेज से बीए एलएलबी की पढ़ाई कर रहा था। घटना के बाद अयोध्या नगर पुलिस ने तत्काल हत्या का केस दर्ज कर तीन अलग-अलग टीमें गठित कीं। पुलिस ने सीसीटीवी कैमरों की मदद से उनकी पहचान की थी।

हत्या, लूट, चोरी, मारपीट जैसे केस दर्ज- गिरफ्तार आरोपियों में मुख्य आरोपी संजू सेन (24) निवासी पूजा कॉलोनी करोंद निशातपुरा है, यह थाने का निगरानी शुदा बदमाश है। इसके खिलाफ हत्या, लूट, चोरी और मारपीट जैसे कई गंभीर अपराध दर्ज हैं। दूसरा आरोपी दीपक वंशकार (24) आदर्श अस्पताल के पीछे करोंद, निशातपुरा है, इसके खिलाफ 9 अपराध दर्ज हैं। वहीं तीसरा आरोपी शुभम उर्फ नरसिमा (25) करोंद, निशातपुरा का रहने वाला है, इसके खिलाफ 3 अपराध दर्ज हैं।

कपड़ा-फुटवियर से लेकर घी-मक्खन तक हो जाएंगे सस्ते

● जीएसटी प्रणाली में शुरू हुई बदलाव की तैयारी ,होगा बड़ा असर

नई दिल्ली (एजेंसी)। जीएसटी प्रणाली से 12 और 28 प्रतिशत कर वाले स्लैब को समाप्त करने पर कपड़ा-फुटवियर से लेकर घी-मक्खन तक सस्ते हो जाएंगे। 1000 रुपये से अधिक कीमत वाले शर्ट-पैंट और फुटवियर खरीदने पर 12 प्रतिशत टैक्स लगता है, जबकि 1000 रुपये से कम कीमत वाले शर्ट-पैंट व फुटवियर पर पांच प्रतिशत जीएसटी देना पड़ता है। अब सभी प्रकार के शर्ट-पैंट और फुटवियर पर पांच प्रतिशत टैक्स लगेगा। सरकार की ओर से जारी नए प्रस्ताव के मुताबिक, 12 प्रतिशत के स्लैब में शामिल 99 प्रतिशत उत्पादों को पांच प्रतिशत कर की श्रेणी में शामिल कर दिया जाएगा। ऐसे में दैनिक रूप में इस्तेमाल होने वाले सैकड़ों उत्पादों पर अब पहले के मुकाबले सात प्रतिशत तक कम टैक्स लगेगा और ग्राहकों को कम कीमत चुकानी होगी। इनमें मुख्य रूप से ड्राइ फ्रूट, सभी प्रकार के पैक्ड नमकीन, प्रोसेस्ड फूड, चटनी, जैम, जेली, पैक्ड नारियल पानी, पैक्ड जूस, 20 लीटर वाली पानी की पैक्ड बोतल, पास्ता, पेंसिल, टूथ पाउडर, जूट व काटन का हैंडबैग, शॉपिंग बैग, मोमबत्ती, टायलेट में इस्तेमाल होने वाले सामान, मच्छरदानी, म्यूनीज, विभिन्न प्रकार की आयुर्वेदिक व अन्य दवाइयां, पास्ता, परदा, किचनवेयर, फसल काटने वाली मशीन सस्ते होंगे।

● **12 की जगह पांच प्रतिशत वसूला जाएगा जीएसटी**- 12 प्रतिशत की जगह इन उत्पादों पर अब पांच प्रतिशत जीएसटी वसूला जाएगा। ऐसा नहीं है कि इन उत्पादों को जीएसटी से पूरी तरह मुक्त कर दिया गया है। जीएसटी राजस्व में 28 प्रतिशत के स्लैब की हिस्सेदारी 11 प्रतिशत है और इसके उत्पादों को 18 प्रतिशत में शामिल कर दिया जाएगा। 28 प्रतिशत में काफी कम उत्पाद शामिल है। इनमें से कई उत्पादों पर 40 प्रतिशत जीएसटी लगाने का प्रस्ताव है। वित्त वर्ष 2024-25 में जीएसटी का मासिक औसत संग्रह 1.8 लाख करोड़ रहा है। जीएसटी राजस्व में 12 प्रतिशत स्लैब की हिस्सेदारी पांच प्रतिशत है और इस हिसाब 1.8 लाख करोड़ में उनकी हिस्सेदारी नौ हजार करोड़ रुपये होती है। डेलाइट के पार्टनर (अप्रत्यक्ष कर) हरप्रीत सिंह ने बताया कि सरकार के नए प्रस्ताव को देखते हुए राजस्व नुकसान का हिसाब लगाया जा रहा है और मोटे तौर पर यह नुकसान मासिक रूप से चार हजार करोड़ रुपये का दिख रहा है। 28 प्रतिशत में शामिल कई उत्पादों को सरकार 40 प्रतिशत में डाल सकती है। अभी इस दिशा में विचार चल रहा है। सिंह ने बताया कि रोजमर्रा के उत्पादों के सस्ता होने से कुछ समय बाद इनकी बिक्री में भी बढ़ोतरी की उम्मीद है।

इंदौर रेलवे स्टेशन पर प्लेटफार्म बदलाव से यात्री सुविधाएं बढ़ेंगी

क्रॉस यार्ड मूवमेंट के कारण देरी वाली ट्रेनें समय पर

इंदौर। पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल द्वारा इंदौर रेलवे स्टेशन से संचालित होने वाली कुछ प्रमुख गाड़ियों के प्लेटफार्म में किए गए बदलाव से यात्रियों को बेहतर सुविधाएं प्राप्त होने के साथ ही ट्रेनों की समय पालन में भी उल्लेखनीय सुधार होने की उम्मीद की जा रही है। पूर्व में गाड़ी संख्या 12415 इंदौर-नई दिल्ली एक्सप्रेस, 22944 इंदौर-दौंड एक्सप्रेस, 20957 इंदौर-नई दिल्ली एक्सप्रेस, 22465 इंदौर-कोचुवेली एक्सप्रेस तथा 79306 रतलाम-डॉ अम्बेडकर नगर (महू) डेमू जैसी गाड़ियां पीक समय में अधिक क्रॉस यार्ड मूवमेंट के कारण विलंबित होती थीं। अब इनके प्लेटफॉर्म बदलने के चलते ये गाड़ियां समय पर चल सकेंगी। इससे यात्रियों को उनके गंतव्य तक समय से पहुंचने में सहायता मिलेगी। गाड़ी संख्या 22944 इंदौर-दौंड एक्सप्रेस तथा 19315 इंदौर-असारवा एक्सप्रेस ट्रेनें, जो रेशनलाइज रैक लिंक के अंतर्गत चलती हैं। जिनके नेम बोर्ड समान होने के कारण यात्रियों में भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती थी, अब उस स्थिति में भी सुधार होगा। इससे रेल मदद पर आने वाली शिकायतों में भी कमी आएगी। कुछ ट्रेनों के प्लेटफार्म नंबरों में परिवर्तन किए जाने से यार्ड में

अब जेड टाइप क्रॉस मूवमेंट नहीं होगा जिससे डिटेंशन घटेगा, संरक्षा में सुधार होगा और भविष्य में नई गाड़ियों या त्योहारों के समय चलाई जाने वाली विशेष गाड़ियों के संचालन में आसानी होगी। इसके अलावा गाड़ी संख्या 12962 इंदौर-मुंबई सेंट्रल अवंतिका एक्सप्रेस तथा 22944 इंदौर-दौंड जैसी गाड़ियां, जो पूर्व में क्रॉस मूवमेंट के कारण विलंबित होती थीं, अब अधिक समय की बचत के साथ सुचारू रूप से चलेंगी। इसके अलावा ये ट्रेनें प्लेटफॉर्म पर पहले से लगाई जा सकेंगी। जिससेयात्रियों को बैठने में सुविधा रहेगी। गाड़ी संख्या 22944 इंदौर-दौंड एक्सप्रेस को प्लेटफार्म 2 से प्लेटफार्म 4 पर स्थानांतरित किए जाने से यात्रियों को फुट ओवर ब्रिज चढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। साथ ही एम्प्टी कोचिंग रैक की प्लेसमेंट के दौरान होने वाले क्रॉस मूवमेंट की समस्या भी समाप्त होगी। गाड़ी संख्या 79306 रतलाम-डॉ अम्बेडकर नगर (महू) डेमू को पिक समय में आउटसाइड रखने की समस्या भी अब नहीं रहेगी, जिससे दैनिक यात्रियों को आवाजाही में सुविधा होगी। इसके साथ ही इंदौर स्टेशन पर चल रहे स्टेशन पुनर्विकास कार्यों के दौरान यात्रियों को होने वाली असुविधाओं को भी प्लेटफॉर्म परिवर्तन के चलते कम किया जा सकेगा। रेल प्रशासन यात्रियों की सुविधा एवं संरक्षा को प्राथमिकता देता है तथा भविष्य में भी इसी दिशा में कार्य करता रहेगा। यात्रियों से सहयोग की अपेक्षा की जाती है।

इंदौर इलाके में साल भर में अचानक हुई 191 मौतों का कारण नशा, सर्वे से स्पष्ट

पोस्टमार्टम में पता चला कि मौत से पहले हार्ट की आर्टरी ब्लॉक हुई

इंदौर। शहर में अचानक हुई मौतों को लेकर एक नया तथ्य सामने आया कि ऐसी मौतों में पुरुषों की संख्या बहुत ज्यादा है। 191 मौतों में से 90 फीसदी वे पुरुष थे, जो मादक पदार्थों के सेवन के आदी थे। डॉक्टरों का मानना है कि अचानक हुई मौतों में इसका एक बड़ा कारण शराब, भांग और अन्य मादक पदार्थों का सेवन है। ये तथ्य एमजीएम मेडिकल कॉलेज के डॉक्टरों (एमवायएच) की रिसर्च में सामने आए। फॉरेंसिक मेडिसिन विभाग के डॉ सूर्य प्रकाश के निर्देशन में डॉ बीके सिंह (एचओडी) और डॉ तपन सिंह पेंड्रो ने यह रिसर्च की गई। इसमें 2023 और 2024 में अचानक हुई 191 मौतों के कारणों को लेकर अध्ययन किया गया। इसमें मौत से जुड़े अहम तथ्य मिले। पता चला कि अचानक मौत से पहले इनके हार्ट की आर्टरी ब्लॉक हुई, जिससे सांस लेने में तकलीफ हुई और ब्रेन ने काम करना बंद कर दिया।

ऐसे की गई यह रिसर्च

जिन 191 लोगों की अचानक मौत हुई। वे इंदौर, खंडवा, खरगोन, धार, झाबुआ, अलीराजपुर और बुरहानपुर के रहने वाले थे। इनकी डेड बॉडी

जब पोस्टमार्टम के लिए आई, तो पुलिस परिजन के बयान के आधार पर पंचनामा बनाती है। लेकिन, इन मामलों में डॉक्टरों ने परिवार से मरीज की हिस्ट्री भी बारीकी से जानी, क्योंकि उनके लिए यह रिसर्च थी। इनमें परिजन से कई बिंदुओं पर जानकारी ली गई।

समाज के लिए यह सबक

डॉ अशोक यादव (सुपरिटेंडेंट, एमवायएच) ने बताया कि दो साल में अचानक हुई मौत के मामलों में जो शव पोस्टमार्टम के लिए आए, उन पर रिसर्च किया गया। इसमें पता चला कि 50 प्रतिशत से ज्यादा लोग किसी न किसी प्रकार का नशा करते थे। यह समाज के लिए चेतावनी है। परिजन समझते हैं कि संबंधित की मौत का कारण हार्ट अटैक या कार्डियक अरेस्ट था। यह सही भी है, लेकिन इसमें नशा भी एक बड़ा कारण रहा।

जब चोरी का हार मिल गया तो नौकरानी को माफ किया

जेवर पहनने के शौक में नौकरानी ने वारदात की

इंदौर। जेवर पहनने का शौक पूरा करने के लिए नौकरानी ने सोने के जेवर चुरा लिए। जब पुलिस ने पूछताछ की तो उसने अपराध करना कबूला, लेकिन जेवर की मालिक ने उसे सलाखों के पीछे जाने से रोक लिया। जेवर मिलने से खुद पीड़िता ने उसे (नौकरानी को) अपने किए पर माफ कर दिया। तुकोगंज पुलिस को फरियादिया निशा पति विमल झुनझुनवाला निवासी पलासिया ने बताया कि उसके घर में 12-13 लाख रुपए का हार था। घर में उसके अलावा पति, जो सिविल कांट्रेक्टर है और बेटा कनिष्क रहता है। हार चोरी होने पर उसने घर में काम करने वाले नौकर-नौकरानी एवं ड्राइवर पर शंका प्रकट की थी।

पूछताछ के लिए थाने बुलाया- शिकायत पर सीआई सेल के प्रधान आरक्षक देवेंद्र, राजीव यादव और आरक्षक राहुल जाट ने एक्शन लेते हुए ड्राइवर, नौकर और नौकरानी को पूछताछ के लिए थाने बुलाया। पूछताछ में नौकरानी ने कबूला कि चुराया गया हार अपने घर में छिपाकर रखा है। तब पुलिस ने नौकरानी के घर से हार बरामद किया। फरियादी को हार दिखाया तो उसने पहचान करते हुए बताया कि 10-12 साल पहले उसने 10 लाख रुपए का लिया था। वर्तमान में उक्त जेवर की कीमत 15 लाख के आसपास है। अपना हार पाकर फरियादी महिला ने पुलिस की प्रशंसा की। पूछताछ में नौकरानी ने गहने पहनने की इच्छा होने की वजह से चोरी करना बताया था। साथ ही यह कहा कि वह कुछ दिन पहनने के बाद वापस करने वाली थी। यह सुनकर फरियादी ने किसी प्रकार की कार्रवाई कराने से इनकार कर दिया।

'एमवाय' की नर्सिंग अफसर से मारपीट

इंदौर। एमवाय अस्पताल में नर्सिंग आफिसर के साथ पति ने आईसीयू वार्ड में आकर मारपीट की। गार्ड की मदद से उसे अस्पताल से बाहर निकाला गया। इसके बाद आरोपी पति ने मोबाइल पर जान से मारने की दी। संयोगितागंज पुलिस के मुताबिक फरियादी शालिनी पांडे मूल रूप से धार जिले की रहने वाली है। वह वर्तमान में रेडियो कॉलोनी में रहती है। पति दीपक तंवर के खिलाफ पुलिस ने केस दर्ज किया है। फरियादी ने बताया कि उन्होंने कुक्षी कोर्ट में जुलाई 2025 में तलाक को लेकर केस लगाया है, जो विचाराधीन है। इस बात से नाराज होकर गुरुवार दोपहर जब वह आईसीयू में ड्यूटी कर रही थी, तो वहां पति आया और मारपीट करने लगा।

एक्टिवा सवार व्यापारी को ट्रक ने रौंदा

इंदौर। लसूड़िया इलाके में शुक्रवार सुबह ऑटो पार्ट्स व्यापारी की मौत हो गई। वह स्कूटर एक्टिवा (एमपी-09 एसवाय 6255) से दुकान जा रहे थे, तभी पीछे से आए ट्रक ने उन्हें टक्कर मार दी। घटना देवास नाके के पास सुंदरलाल कनेरिया निवासी स्कीम नंबर 114 है। इसी दौरान अज्ञात ट्रक ने उनकी गाड़ी को टक्कर मारी, जिससे वह सड़क पर गिर गए। घटना के बाद ट्रक चालक फरार हो गया।

सम्पत्ति को लेकर मां से अभद्रता की

इंदौर। बेटे ने पैतृक संपत्ति को लेकर मां के साथ अभद्रता की। बेटे की करतूतों से परेशान होकर मां ने पुलिस की शरण ली। विजयनगर पुलिस को फरियादी किरण बाई पति स्व. रमेशचंद्र बाथम निवासी शीतल नगर ने बताया कि उसका क्षेत्र में छोटा सा मकान है। पति की सालों पहले मौत हो गई है। वह अपने तीन बेटों के साथ रहकर जीवन यापन करती है। जिस मकान में वह रहती है, उसकी रजिस्ट्री उसके नाम है। कुछ माह पहले उसने अपने मकान का हिस्सा बराबर मात्रा में तीनों बेटों को कर दिया था। दो बेटे तो अपने हिस्से के मकान में परिवार के साथ रहते हैं, लेकिन एक बेटा प्रकाश की नीयत में खोट आ गया। उसने मां को झांसे में लेते हुए कहा कि तुम कुछ दिन दूसरे भाइयों के पास रहो, मैं आपके लिए एक कमरा बना दूंगा। बाद में प्रकाश ने खुद के हिस्से में निर्माण कर लिया। अपने वादे के मुताबिक, मां को कमरा बनाकर नहीं दिया। जब पीड़िता ने विरोध किया तो उसके साथ अभद्र व्यवहार किया। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

मां ने जन्मदिन के दिन ही अपनी दो साल की बेटी को मार डाला

इंदौर। एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई। एक मां ने अपनी ही 2 साल की बेटी को मौत के घाट उतार दिया। वजह महज इतनी थी कि बच्ची अपने जन्मदिन पर रो रही थी। यह घटना तेजाजी नगर थाना क्षेत्र की है, जहां निर्दयी मां ने बच्ची के रोने की आवाज से तंग आकर उस पर डंडे से हमला कर दिया। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और आरोपी मां को हिरासत में ले लिया। घटना के अनुसार, 2 साल की मासूम राधिका अपने जन्मदिन के दिन घर में खेल रही थी। लेकिन, किसी वजह से वह रोने लगी। बच्ची की रोने की आवाज से उसकी मां इतनी परेशान हो गई कि उसने क्रोध में आकर डंडा उठाया और राधिका के सिर पर जोरदार प्रहार किया। हमले से बच्ची गंभीर रूप से घायल हो गई और उसकी मौत हो गई। शाम को जब पिता घर लौटे, तो घर के अंदर की हालात देख उनके होश उड़ गए। उनकी प्यारी बच्ची मृत अवस्था में पड़ी थी। सदमे में पिता ने तुरंत पड़ोसियों को सूचित किया. पुलिस को बुलाया गया।

सिक्योरिटी गार्ड की हत्या मामले में एक बरी, दूसरे को उम्रकैद

परिवार की एक महिला को लेकर आरोपी से विवाद

इंदौर। चार साल पुराने सिक्योरिटी गार्ड हत्याकांड में जिला कोर्ट ने अहम फैसला सुनाया है। मुख्य आरोपी आशीष पिता भागचंद विश्वकर्मा (34) निवासी अमन नगर, मूसाखेड़ी को हत्या का दोषी पाते हुए उम्रकैद की सजा सुनाई गई। उसका साथी अभिषेक पिता कैलाश खांडे (29) निवासी आलोक नगर, मूसाखेड़ी को सबूतों के अभाव में बरी कर दिया गया। अदालत ने पाया कि अभिषेक की उंगली पर मौजूद चोट ताज़ा नहीं थी, जबकि आरोप था कि हत्या के समय उसकी उंगली कट गई थी। अभिषेक पर आरोप था कि वह वारदात में शामिल था और छुरी से हमला करते समय उसकी उंगली कट गई थी। पुलिस ने उसका इलाज भी कराया था। सुनवाई में बचाव पक्ष के वकील

विवाद महिला को लेकर

तिलक नगर पुलिस ने 13 मार्च 2021 को स्कीम 94 स्थित मिनियस पॉवर प्रा लि ऑफिस की पहली मंजिल से सिक्योरिटी गार्ड रामजी कृष्णमुरारी शुक्ला का शव बरामद किया था। वह 12 मार्च की रात ड्यूटी पर था और सुबह मृत अवस्था में मिला। जांच में सामने आया कि रामजी के परिवार की एक महिला को लेकर आरोपी आशीष से विवाद चल रहा था। आशीष उस महिला से एकतरफा प्रेम करता था और शादी करना चाहता था। आरोप है कि इसी विवाद के चलते उसने अपने साथी अभिषेक के साथ मिलकर छुरी और हथौड़े से रामजी की हत्या कर दी।

अपूर्व जैन ने इलाज करने वाले डॉक्टर जितेंद्र तोमर से पूछताछ में साबित किया कि अभिषेक की उंगली पर ताज़ा चोट नहीं थी। डॉक्टर ने माना कि चोट पुरानी थी और हाथ पर कट के निशान भी नहीं थे। इसी वजह से कोर्ट ने अभियोजन का दावा खारिज कर उसे बरी कर दिया।

उम्र कैद की सजा सुनाई

मामले में कंपनी के ही सिक्योरिटी गार्ड धर्मेंद्र मिश्रा निवासी देव नगर की रिपोर्ट पर हत्या का केस दर्ज किया गया। पुलिस ने आशीष और अभिषेक दोनों को गिरफ्तार किया था। चार साल चली सुनवाई के बाद 11 अगस्त को कोर्ट ने आशीष को आजीवन कारावास की सजा सुनाई, जबकि अभिषेक को बरी कर दिया।

हाई कोर्ट में आवारा कुत्तों के मामले की सुनवाई, रिव्यू याचिका का हल

सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद नई याचिका की छूट

इंदौर। शहर में बढ़ रही आवारा कुत्तों की समस्या को लेकर हाई कोर्ट इंदौर में डबल बेंच ने रिव्यू याचिका पर सुनवाई की। कोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट का अंतिम फैसला आने के बाद नई याचिका लगाने की स्वतंत्रता देते हुए रिव्यू याचिका का निपटारा कर दिया। जस्टिस विवेक रूसिया और जस्टिस गजेंद्र सिंह की युगल पीठ में यह सुनवाई हुई। याचिका पूर्व पार्षद महेश गर्ग की ओर से एडवोकेट प्रतीक माहेश्वरी ने दायर की थी। इसमें कहा गया था कि शहर में आवारा कुत्तों की संख्या लगातार बढ़ रही है और हर महीने सैकड़ों लोग उनके हमलों का शिकार हो रहे हैं।

नगर निगम द्वारा इस पर रोकथाम के लिए कोई ठोस व्यवस्था नहीं है और मेडिकल सुविधाएं भी अपर्याप्त हैं। एडवोकेट माहेश्वरी ने दलील दी कि बीते वर्षों में 50 हजार से ज्यादा लोग डॉग बाइट का शिकार हुए हैं और कई लोगों की जान भी जा चुकी है। 2023 में बने नए नियमों का पालन भी नहीं हो रहा। उन्होंने बताया कि सुप्रीम कोर्ट में भी इसी तरह के मामले की सुनवाई चल रही है, और पूर्व आदेश में हाई कोर्ट को परिस्थिति अनुसार विचार करने की छूट दी गई थी।

पति से विवाद के बाद महिला ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली

महिला के भाई का आरोप, जीजा करता था प्रताड़ित

इंदौर। पारिवारिक विवाद में महिला ने जहर खाकर जान दे दी, जिससे उसकी मौत हो गई। घटना के बाद मृतका के भाई ने जीजा पर प्रताड़ित करने का आरोप लगाया है। हीरानगर पुलिस ने बताया कि घटना शुक्रवार को न्यू गौरी नगर में हुई। यहां की रहने वाली सोनम (30) पत्नी कैलाश सूर्यवंशी को जहरीला पदार्थ खाने के बाद निजी अस्पताल में भर्ती कराया था। पुलिस जांच में सामने आया है कि महिला ने गेहूं में रखने वाली दवाई खा ली थी। वह अपने पति और दो बच्चों के साथ रहती थी। महिला का पति होटल में काम करता है और घटना के समय घर पर नहीं था। बेटे ने पिता को फोन कर बताया कि मां ने कुछ खा लिया है। इसकी जानकारी महिला के भाई अजय को भी दी गई। पति के आने से पहले ही अजय बहन को निजी अस्पताल ले गया था।

पति ने लोन लिया- घटनास्थल से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। पति ने कुछ साल पहले मकान बनाने के लिए 9 लाख रुपए का लोन लिया था। घटना वाले दिन पति के काम पर जाने से पहले पत्नी ने उसके लिए चाय-नाश्ता भी बनाया था। अजय ने बताया कि भानजे आयुष ने मुझे कहा कि मम्मी-पापा के बीच झगड़ा हुआ था। झगड़े के बाद पापा कहकर चले गए कि 'गोली खाकर मर जाना।' पिछले कुछ दिनों से उनका रोजाना विवाद हो रहा था। मेरी बहन मुझे कुछ नहीं बता पाई।

शहर में रुक-रुककर रिमझिम का दौर जारी, औसत 14 इंच बारिश

अभी भी सीजन के औसत के हिसाब से पानी 7 इंच कम

इंदौर। इन दिनों शहर में रिमझिम बारिश का दौर चल रहा है। शनिवार सुबह से मौसम साफ था। लेकिन, दोपहर बाद कई हिस्सों में रुक-रुककर रिमझिम होती रही। मौसम वैज्ञानिकों ने अगले 4 दिन बारिश के आसार जताए हैं। इसके पूर्व शुक्रवार को भी सुबह से अच्छी धूप रही और दोपहर तक मौसम साफ रहा। इसके बाद रुक-रुककर रिमझिम होती रही। इसके सहित इस सीजन में अब तक 351.6 मिमी (करीब 14 इंच) बारिश हो चुकी है। इंदौर में सीजन की 15 अगस्त तक औसत बारिश 21.4 इंच बारिश हो जाती है लेकिन इस बार 14 इंच ही बारिश हुई है। इस लिहाज से अभी औसत कोटे से 7 इंच कम बारिश हुई है। अभी अगस्त का आधा

माह बाकी है। ऐसे में आने वाले दिनों में झड़ी लगी तो कोटा बराबरी का हो सकता है।

यह सिस्टम एक्टिव- मौसम वैज्ञानिक अजय कुमार शुक्ला के मुताबिक ओडिशा में एक सिस्टम बना है जो मप्र और छत्तीसगढ़ में सक्रिय हो रहा है। वहीं बारिश करने वाली द्रोणिका भी मालवा-निमाड़ में एक्टिव है। इसके चलते अगले पांच दिन इंदौर और आसपास के क्षेत्रों में अच्छी बारिश के आसार हैं। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई सुरेंद्रन के मुताबिक मध्य प्रदेश से एक टर्फ गुजर रही है। वहीं, एक मानसून टर्फ और साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम भी एक्टिव है। इस वजह से बारिश का दौर बना हुआ है। लो प्रेशर एरिया की भी एक्टिविटी है। इंदौर में हल्की हारिश के आसार हैं।

जल्द ही कोटा पूरा होगा- वैज्ञानिकों के अनुसार अगस्त के दूसरे पखवाड़े में तेज बारिश का दौर शुरू होगा, जो आखिरी तक चलता रहेगा। ऐसे में कई जिलों में बारिश का कोटा अगस्त में ही पूरा हो जाएगा। इंदौर में अगस्त माह में औसत 28 इंच बारिश का रिकॉर्ड है, जो साल 1944 में दर्ज किया गया था। 24 घंटे में सबसे ज्यादा बारिश का रिकॉर्ड 22 अगस्त 2020 को बनाया था। इस दिन साढ़े 10 इंच पानी गिरा था। पिछले 10 साल में दो बार 17 इंच से ज्यादा बारिश हो चुकी है। इंदौर में अगस्त की औसत बारिश 10 से 11 इंच है। महीने में 12 से 13 दिन तक बारिश होती है।

शादी का झांसा देकर युवती से रेप रिपोर्ट दर्ज; पुलिस ने जांच शुरू की

इंदौर। विजय नगर पुलिस ने 21 साल की युवती की शिकायत पर उसके दोस्त के खिलाफ रेप का केस दर्ज किया। आरोपी ने शादी का झांसा देकर युवती के साथ दुष्कर्म किया और उसके प्रेग्नेंट होने के बाद शादी से इंकार कर दिया। युवती ने हिंदू जागरण मंच के कार्यकर्ताओं से मदद मांगी और वह उसे थाने लेकर पहुंचे। विजय नगर पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। युवती मूलतः खंडवा की है और पिछले कुछ साल से इंदौर में जॉब कर रही है। उसने पुलिस को बताया कि सुंदर नगर निवासी विकास सागौर ने उसके साथ दुष्कर्म किया। वह एक कैफे में जाती थी, वहीं विकास से पहचान हुई। कुछ दिन की मुलाकात के बाद दोनों ने मोबाइल नंबर शेयर किया और फिर लगातार बात होने लगी। विकास ने एक दिन

शादी करने की इच्छा बताई, तो मना कर दिया। फिर वह बार-बार शादी करने का कहने लगा, तो हां कर दिया।

युवती को होटल में रखा- युवती ने बताया कि 8 जनवरी 2025 को विकास विजयनगर इलाके की एक होटल लेकर गया। यहां पर संबंध बनाए। इसके बाद इसी होटल में करीब डेढ़ माह साथ में रखा। इस दौरान शादी की बात की, तो विकास ने कहा कि कोर्ट में पेपर तैयार हो रहे हैं, थोड़ा समय लगेगा। फिर पीड़िता चंद्रनगर में किराए के कमरे में रहने लगी। 18 जुलाई को विकास कमरे पर आया और जबरदस्ती संबंध बनाए। युवती को एक माह बाद प्रेग्नेंसी का पता चला। उसने विकास को बताया, तो उसने अबॉर्शन कराने को कहा। आरोपी ने कहा कि मेरा नाम किसी को बताया, तो जिंदा नहीं छोड़ूंगा।

राजावत के पास पहुंची युवती- विकास द्वारा शादी से इंकार किए जाने और धमकाने के बाद युवती हिंदू जागरण मंच के कार्यकर्ता मानसिंह राजावत के पास पहुंची और पूरी बात बताई। युवती को राजावत विजय नगर थाने ले गए और युवती ने आरोपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई।

42 अफसरों का एक दिन का वेतन कटेगा

इंदौर। तहसीलदार और नायब तहसीलदार 6 अगस्त से काम नहीं कर रहे हैं। इस वजह से राजस्व मामलों के निपटारे में लगातार आ रही दिक्कतों को देखते हुए कलेक्टर आशीष सिंह ने जिले के 42 तहसीलदार और नायब तहसीलदारों का एक दिन का वेतन काटने का आदेश दिया है। मध्य प्रदेश राजस्व अधिकारी (कनिष्ठ प्रशासनिक सेवा) संघ, जिला इकाई इंदौर की अपील पर 6 अगस्त से सभी राजस्व अधिकारी (आपदा प्रबंधन के कामों को छोड़कर) अपने नियमित कामकाज से दूर हैं। राजस्व अधिकारियों के कामकाज रोक देने से बड़ी संख्या में मामले पेंडिंग हो गए हैं। इससे आम लोगों को काफी परेशानी हो रही है। कलेक्टर ने इसे सरकारी जिम्मेदारी से लापरवाही और अनुशासनहीनता माना है। इसी कारण उन्होंने 42 तहसीलदार और नायब तहसीलदारों का एक दिन का वेतन काटने का आदेश जारी किया।

संपादकीय

मोदी और आरएसएस!

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा इस साल 15 अगस्त पर लाल किले की प्राचीर से जो अपना 11वां भाषण दिया, उसमे सबसे ज्यादा चर्चा मोदी के मातृ संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की रही। समर्थकों का तर्क है कि चूंकि मोदी को मोदी बनाने वाला भी आरएसएस ही है, अतः इस विशाल अशासकीय संगठन के सौ साल पूरे होने पर स्वतंत्रता दिवस के भाषण में उसका उल्लेख करना स्वाभाविक ही है। जबकि इसके आलोचकों का कहना है कि यह स्वतंत्रता दिवस का ही अपमान है, क्योंकि मोदी ने जिस आरएसएस की चर्चा की उसका आजादी के आंदोलन में कोई योगदान नहीं है। उसने स्वतंत्रता संग्राम के समय अंग्रेजों का साथ दिया तथा जिसका नाम गांधी हत्या में भी आया था। इस राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप को अलग रखें तो गंभीर राजनीतिक समीक्षक इस बात का संजीदगी से विश्लेषण कर रहे हैं कि मोदी ने इस बार ही आरएसएस का नाम क्यों लिया। अब तक वो बतौर प्रधानमंत्री लाल किले से देश को 11 बार संबोधित कर चुके हैं। लेकिन संघ का कभी जिक्र नहीं किया, जबकि वो स्वयं संघ के प्रचारक रहे हैं। जहां तक संघ के सौ साल पूरे होने की बात है तो यह महज आंकड़ा है, क्योंकि खुद संघ मानता है कि उसका अंतिम लक्ष्य देश में हिंदू राष्ट्र की स्थापना है, जो अभी बहुत दूर है। इसलिए संघ की शताब्दी पर जो कार्यक्रम हो रहे हैं, उसमें कोई भारी तामझाम या दिखावेबाजी नहीं है। इससे लगता है कि स्वतंत्रता दिवस के भाषण में संघ का नाम लेने को लेकर मोदी पर शायद ही कोई दबाव रहा होगा। तो फिर मोदी ने ऐसा क्यों कहा? प्रधानमंत्री ने कहा कि आज मैं बहुत गर्व के साथ एक बात का ज़िक्र करना चाहता हूं। आज से सौ साल पहले एक संगठन का जन्म हुआ, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जिसका सौ साल की राष्ट्र की सेवा का एक बहुत ही गौरवपूर्ण स्वर्णिम पृष्ठ है। व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण के संकल्प को लेकर के, सौ साल तक मां भारती का कल्याण का लक्ष्य लेकर के, लक्ष्यावधि स्वयं सेवकों ने मातृभूमि के कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। सेवा, समर्पण, संगठन और अप्रतिम अनुशासन इस संगठन की पहचान रहे हैं।' मोदी द्वारा राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में संघ का उल्लेख करने के पीछे पिछले कुछ समय से भाजपा और संघ के बची कई मुद्दों को लेकर चल रही तनातनी है। पिछले साल 2024 के लोकसभा चुनावों में बीजेपी के बहुमत हासिल ना कर पाने के पीछे बड़ी वजह ये मानी गई थी कि संघ ने बीजेपी के लिए उस तरह से ज़मीनी स्तर पर काम नहीं किया जिसकी उम्मीद बीजेपी कर रही थी। लोकसभा चुनाव के दौरान ही बीजेपी नेता जेपी नड्डा का वो विवादित बयान भी आया था जिसमें उन्होंने बीजेपी के सक्षम होने और उसे आरएसएस की ज़रूरत ना होने की बात कही थी। हालांकि तब संघ ने नड्डा के बयान को 'पारिवारिक मामला' बताते हुए कहा था कि संघ ऐसे मुद्दों पर सार्वजनिक मंचों पर चर्चा नहीं करता। लेकिन इस चौंकाने वाले बयान के बाद नड्डा पर किसी तरह की कोई कार्रवाई नहीं हुई और न ही उन्होंने इसके लिए किसी तरह की सफाई दी। इसका सीधा अर्थ यह है कि नड्डा ने यह बयान दिया नहीं था, बल्कि उनसे दिलवाया गया था। इससे संघ में यह संदेश गया कि उसकी भूमिका को लेकर बीजेपी में नए सिरे से सोचा जा रहा है। जनता में संदेश गया कि मोदी और संघ में पटरी नहीं बैठ रही है। ऐसा लगता है कि पीएम मोदी 2029 तक पद सुरक्षित रखना चाहते हैं। कितने सफल होंगे, यह देखने की बात है।

सवालों के घेरे में राष्ट्रीय चुनाव आयोग

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं और केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

भारतीय संविधान द्वारा इसे इतना समर्थ बनाया गया है कि यह आयोग देश को नेतृत्व के लिए सुअवसर निरपेक्ष रूप से प्रदान करे। मताधिकार का अधिकार तो देश के नागरिकों को प्राप्त है। लेकिन यह आयोग चुनाव की संपूर्ण प्रक्रिया संपन्न करने की जिम्मेदारी लेता है। प्राप्त सबसे बड़े जनाधिकार वाली पार्टी या दल देश में सरकार बनाते हैं व नेतृत्व करते हैं। इस देश का संविधान राष्ट्रीय चुनाव आयोग को मताधिकार की मौलिकता की छूट देता है। यह प्रक्रिया कई दशकों से चुनाव आयोग द्वारा निभाई जा रही है। देखा जाए तो देश में डिजिटलाइजेशन के बाद व्यापक स्तर पर चुनाव संपन्न करने हेतु बदलाव हुए हैं। यह सब चुनाव को सरल बनाने, पारदर्शी बनाने एवं शीघ्र परिणाम तक पहुँचने के लिए बदलाव लाए गए हैं।

आज़ भारत में राष्ट्रीय चुनाव आयोग, मतदान, मतदान प्रक्रिया, चुनाव परिणाम आरोप-प्रत्यारोप के बीच संघर्ष कर रहा है। यह संघर्ष एक स्वायत्त संस्था का है। भारत में संविधान के अनुच्छेद 324 के तहत एक निर्वाचन आयोग का गठन किया गया है, जो एक स्वायत्त संवैधानिक संस्था है। इसे इतना ही न समझें अपितु यह देश भर में संघ और राज्य निर्वाचन प्रक्रियाओं को संचालित करता है। निर्वाचन आयोग भारत में लोक सभा, राज्य सभा, राज्यों की विधान सभाओं, देश में राष्ट्रपति और उप-राष्ट्रपति के पदों के लिए भी होने वाले निर्वाचनों का भी संचालन करता है। भारतीय संविधान द्वारा इसे इतना समर्थ बनाया गया है कि यह आयोग देश को नेतृत्व के लिए सुअवसर निरपेक्ष रूप से प्रदान करे। मताधिकार का अधिकार तो देश के नागरिकों को प्राप्त है। लेकिन यह आयोग चुनाव की संपूर्ण प्रक्रिया संपन्न करने की जिम्मेदारी लेता है। प्राप्त सबसे बड़े जनाधिकार वाली पार्टी या दल देश में सरकार बनाते हैं व नेतृत्व करते हैं। इस देश का संविधान राष्ट्रीय चुनाव आयोग को मताधिकार की मौलिकता की छूट देता है। यह प्रक्रिया कई दशकों से चुनाव आयोग द्वारा निभाई जा रही है। देखा जाए तो देश में डिजिटलाइजेशन के बाद व्यापक स्तर पर चुनाव संपन्न करने हेतु बदलाव हुए हैं। यह सब चुनाव को सरल बनाने, पारदर्शी बनाने एवं शीघ्र परिणाम तक पहुँचने के लिए बदलाव लाए गए हैं।

अब राष्ट्रीय चुनाव आयोग की पारदर्शिता पर सवाल उठा है। विपक्ष के नेता राहुल गाँधी ने कर्नाटक के महादेवपुरा के चुनाव प्रक्रिया का विश्लेषण किया। उन्होंने एक प्रोफेसर की भांति पॉवर-प्वाइंट प्रेजेंटेशन के ज़रिए मीडिया के सामने यह बताया कि चुनाव आयोग किस प्रकार व्यापक पैमाने पर धांधली करके सत्तारूढ़ सरकार की सहायता किया और उसी का परिणाम है कि देश में एक पार्टी की सरकार अपनी जगह बनायी है। आरोप यह है कि एक ही नाम के लोग कई जगह मतदान हेतु पहचान-पत्र प्राप्त किए हैं। किसी मकान का नंबर शून्य है और किसी मकान में 80 लोग मताधिकार हेतु पहचान-पत्र धारक हैं जबकि वह एक कमरे का ही मकान है। ऐसे अनेक प्रश्न एलओपी राहुल गाँधी की ओर से उठाये गए हैं जिसका उत्तर चुनाव आयोग देने में विवश है।

आरोप-प्रत्यारोप की पूरी झड़ी सी लग गयी है। राष्ट्रीय चुनाव आयोग की ओर से यह कह दिया गया कि विपक्ष के नेता राहुल गाँधी अपने प्रश्नों के साथ शपथ पत्र प्रस्तुत करें जिस पर चुनाव आयोग उचित कार्रवाई कर सके। यद्यपि चुनाव आयोग के गाइडलाइंस में इस तरह का शपथ-पत्र विशेष हेतु के लिए राजनीतिक पार्टियों या दलों द्वारा देय होते हैं। प्रश्न खड़ा करने पर ऐसे शपथ पत्र की आवश्यकता नहीं होती, यह देश के चुनाव विशेषज्ञों का भी मानना है। फिलहाल इस सबके साथ देश में बड़ा बवंडर अब

बिहार में खड़ा हो गया है जहाँ चुनाव आयोग ने एसआईआर के पहले चरण के बाद जो ड्राफ्ट मतदाता सूची जारी की है उसमें 65 लाख मतदाता सूची से बाहर हो गए हैं। देश के चुनाव विश्लेषक योगेन्द्र यादव जब कोर्ट में अपना पक्ष रख रहे थे तो उन्होंने दो ऐसे मतदाता को कोर्ट में पेश कर दिया जिनका नाम सूची से बाहर कर दिया गया है और वे दोनों चुनाव आयोग के अनुसार मृत बताए गए हैं। देश में रासबिहारी मृतक का नाम आप सबने सुना होगा। वह अपने सभी दस्तावेज़ में पट्टीदारों दवा मृत घोषित कर दिए गए थे। वह हर बार देश के वीआइपी के विरोध में अपना चुनाव लड़ने हेतु पर्चा इसलिए दायर करते थे जिससे उन्हें यह समझ लिया जाए कि वह मृत नहीं है, जिंदा हैं। अब जब सूची में ही मृत जिन्हें घोषित करके बाहर कर दिया गया है वह रासबिहारी मृतक से भी ज्यादा मरे हैं। रासबिहारी मृतक आजमगढ़ उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे जिन पर पंकज त्रिपाठी अभिनीत एक फिल्म भी बनायीं गयी थी।

दिल्ली गर्म है। वैसे तो दिल्ली में बहुत बारिस है लेकिन सांसद चुनाव आयोग के इस रवैये को लेकर इतना आक्रामक हैं कि वे धरना प्रदर्शन कर रहे हैं। वे चुनाव आयुक्त से मिलकर बात करने हेतु बैरीक्रेटर लांघकर चुनाव भवन तक जाने की कोशिश कर रहे हैं। यह सब दिल्ली में हो रहा है। विपक्ष का यह कहना है कि सत्ता पक्ष चुनाव आयोग से मिला हुआ है। आरोप, आरोपित व मुद्दे सब एक ही तवे पर पक रहे हैं। आरोप को एक दम से ख़ारिज भी करने में कोई सक्षम नहीं है। बिहार में हाल ही में किया जा रहा चुनाव आयोग का प्रयोग आयोग को सबसे ज्यादा संदेह के घेरे में खड़ा कर दिया है। राजनीति का बाण अब चुनाव आयोग को घायल करते जा रहा है लेकिन उसकी भी अपनी अकड़ है जो उसकी अस्मिता को भले डुबो दे लेकिन वह ठीक करने के लिए कोई भी अपनी बात भारत की जनता के सामने नहीं रख रहा है।

राहुल गाँधी की मजबूती और साफगोई से अपनी बात रखने की पूरे देश में प्रशंसा हो रही है। उनके ऊपर विश्वास बढ़ा है जनता का और जनता के मन में भी विभिन्न प्रकार के सवाल उनके प्रेस कांफ्रेंस के बाद उठे हैं जिसे सत्तारूढ़ पार्टी द्वारा तत्काल भले भरपाई न करनी पड़े लेकिन आने वाले समय में उसे इसका प्रभाव झेलना पड़ेगा। ऐसे में सरकार की भी यह कोशिश होनी चाहिए कि वह चुनाव आयोग को निरपेक्ष बर्ताव करने की अपील करे।

चुनाव आयोग की विश्वसनीयता लोकतंत्र से जुड़ी हुई है। लोकतंत्र की मजबूती से जुडी हुई है। यदि लोकतंत्र को स्वस्थ रखना है तो चुनाव आयोग का यह दायित्व है कि वह सभी आरोपों से खुद को बरी करे और एक निरपेक्ष दृष्टि के साथ चुनाव संपन्न कराये, सही परिणाम घोषित करे, देश की जनता के मताधिकारों का सही प्रयोग व उनका सही सम्मान चुनाव आयोग की प्रथम जिम्मेदारी है। चुनाव आयोग स्वयं प्रश्नांकित हो गया तो उस देश का लोकतंत्र व लोकतांत्रिक व्यवस्था व सभ्यता का अपमान होता है। ऐसे में स्वायत्त संस्थाओं की भी इज्जत तभी होगी जब वह अपनी इज्जत स्वयं करना जानेंगी। सरकारें आती-जाती रहती हैं। देश में जनता का स्वभाव व निर्णय ही सर्वोपरि है, यह ख्याल रखना ज़रूरी है। चुनाव आयोग में इसलिए अब व्यापक सुधार की आवश्यकता है जिसमें अब संविधान व संसद से यह पारित होना चाहिए कि चुनाव आयोग में सीईसी की नियुक्ति भले सरकार करे लेकिन इसके साथ कुछ ऐसी व्यवस्थाएं बहाल की जाएँ जिससे आयोग की स्वायत्ता व पारदर्शिता दोनों बनी रहे।

फिलहाल, देश में विगत कुछ हफ़्तों से चुनाव आयोग व उसके तंत्र पर जो सवाल उठे हैं, उससे देश की जनता के भीतर कई प्रकार के प्रश्न घर कर गए हैं। चुनाव आयोग को संशय की दृष्टि से देख रहे हैं। जनता को अब लगने लगा है कि उनके साथ छलावा हुआ है। जनता में विविध प्रकार की बहस है। राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियां व दल, चुनाव आयोग, सरकार व सुप्रीम कोर्ट के सभी गतिविधियों व निर्णयों पर जनता की नज़र है। जनता आने वाले समय में सही और गलत का फैसला तो कर देगी लेकिन यदि समय रहते जिम्मेदार संस्थाएं, पार्टी, नेता, सरकार, सुप्रीम कोर्ट व बौद्धिक समाज इस विपरीत बहस पर पूर्णतया सत्यान्वेषी नहीं होंगे तो इससे भारत का नुकसान होगा। हमारे लोकतंत्र व संवैधानिक व्यवस्था को सवालों के घेरे में रखकर पूरी दुनिया देखेगी जो कि भारत के हित में नहीं है।

15 अगस्त के बाद क्या?

दृष्टिकोण

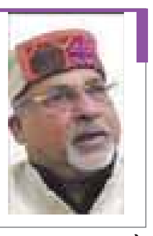

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

15 अगस्त बीत गया। पंद्रह अगस्त भारत के आरोह-अवरोह भरे सुदीर्घ इतिहास का महत्वपूर्ण दिनांक है। शायद सबसे मानीखेज तारीख। इस दिन वैश्विक-परिदृश्य में एक ऐसा राष्ट्र उभरा, जिसने सत्याग्रह के बूते आजादी पाई थी और इस उपलब्धि में किसी एक समुदाय, कौम या वर्ग का नहीं, अपितु समग्र समाज का योगदान था। विश्व में सैन्य कार्रवइयों विद्रोह और छल-छदम से आजादी हासिल करने अथवा सत्ता-परिवर्तन की परंपरा रही है, लेकिन भारत का स्वतंत्रता-पर्व विरल और अभूतपूर्व प्रसंग था। हाड़मांस के एक कृशकाय व्यक्तित्व ने अपने तपपूत अथक प्रयासों से उस बर्बर कुटिल सत्ता से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया, जिसके वैश्विक साम्राज्य में सूरज नहीं डूबता था। अंग्रेजों की विदाई तय थी, क्योंकि कोई भी सत्ता एक वर्ग, एक वर्ण, एक समूह, एक बल से लड़ सकती है, लेकिन कोटि-कोटि जनों के उस जागृत बल से नहीं लड़ और जीत सकती, स्वतंत्रता ही जिसका एकमेव अभीष्ट था। अपने इसी अपूर्व उपक्रम से गांधी महान है। वह अलीक शख्सियत हैं। सहस्राब्दी के महानायक है। मनुष्य की मुक्ति और उत्थान के तमाम योद्धाओं से भिन्न और अतुल्य है। उनसा तेजोमय व्यक्तित्व विश्व-इतिहास में दूसरा नहीं है। बहरहाल, अब हम आजाद हैं। हम और हमारे समवयस्क लोग स्वतंत्र भारत में जनमें हैं, लिहाजा हम लोग खुशकिस्मत हैं। बिलाशक आजादी नेमत हैं, ऐसी नेमत, जिसकी महत्ता और कीमत को कूता नहीं जा सकता। वह अमूल्य और गर्वीली है। वह लाखों लोगों की शहादत और त्याग का नतीजा है। आजादी हमारी आत्मिक वृत्ति है। सिर्फ जातियां या कौमें ही आजादी नहीं चाहतीं। हर कोई बंधनों से मुक्ति चाहता है। गुलाम दासता की बेड़िया तोड़ना चाहते हैं। परिन्दे क़फ़स से आजादी चाहते हैं और शुभ्रता कालिमा से मुक्ति चाहती है। गुलामी कलंक है। स्वतंत्रता सिर्फ राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं होती। राजनीतिक स्वतंत्रता एक पड़ाव है; दूर के गंतव्य का एक महत्वपूर्ण पड़ाव। महात्मा गांधी और भगत सिंह जैसे महान नायकों ने इस तथ्य को बार-बार रेखांकित किया। स्वतंत्रता और स्वतंत्र समाज में बड़ा फासला है। बहुत कठिन है स्वतंत्रचेता समाज के निर्माण की डगर। स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का लक्ष्य हासिल करना बड़ा कठिन है। महात्मा गांधी की आजादी की लड़ाई सिर्फ विदेशी दासता से मुक्ति की लड़ाई न थीं। वह भाषा की भी लड़ाई थी।

अस्पृश्यता के खिलाफ संघर्ष के साथ ही उनका आंदोलन लैंगिक असमानता के विरूद्ध अहिंसक युद्ध भी था। वहां श्रम की गरिमा की पुनर्स्थापना का संकल्प भी था। वहां रूढ़ियों कुरीतियों-बेगारी, सामंतवाद, अशिक्षा, बाल-विवाह, भेदभाव, जातिवाद, दहेज प्रथा आदि से मुक्ति की जद्दोजहद भी थी। इसी को परिलक्षित कर एक भारतीय आत्मा पं. माखनलाल चतुर्वेदी ने 'सिर के ऊपर पेट चढ़ाकर अपना सत्यानाश न कर तू। जनगणमन, अधिनायक तेरा, उसे विश्व का दास न कर तू' जैसी ओजभरी पंक्तियां लिखी थीं। पंद्रह अगस्त तक वह तारीख है, जो सूरज ढलने या रात गहराने से बीतती नहीं, बल्कि पटल पर बनी रहती है। वह हमें सोचने का साजोसामां देती है। सामूहिकता का पाठ पढ़ाती है और कुतुबनुमा मानिंद हमारे जीवन की दिशा तय कर समवेत सार्थक उपक्रमों के लिए प्रेरित करती है। पंद्रह अगस्त के बाद पंद्रह अगस्त का यही तकाजा और संदेशा है।

इन कसौटियों पर हम अपने आज को परखें तो हमें इस बात का आभास हो सकता है कि हम कहां खड़े हैं और विश्व परिदृश्य में गणतंत्र के तौर पर उभरने के उपरांत इस अमृतकाल तक हमने कितना और कैसा सफर तय किया है? हमारी यात्रा सार्थक रही है अथवा निरर्थक? हम इतिहास के गलियारे में कहीं उलटे पांव तो नहीं चल रहे हैं? कहीं हम पुनरूत्थानवादी शक्तियों से परिचालित तो नहीं है? हम अपने वक्त के तकाजों को बूझकर आगामी सुनहरे कल के लिये समवेत प्रयासों के विपरीत कहीं अतीत की गौरव स्थापना कर गुहांधकार में तो नहीं लौट रहे हैं? निर्विविदितः समय कठिन है। चुनौतियां संगीन है; घरेलू मोर्चे पर भी, सरहदों पर भी और राजनय के धरातल पर भी। विचारकों का बार-बार यह कहना अकारण नहीं है कि यह बेढब, हिंस्र और अराजक समय है, जहां असहमति के लिये कोई ठौर नहीं है और व्यवस्था या तो उसे अनसुना करने अथवा उसे कुचलने के फेर में है। प्रख्यात विचारक परकाला प्रभाकर ने संकटग्रस्त गणराज्य पर अपने आलेखों के संकलन 'नये भारत की दीमक लगी शहतीरें' में 'फादर स्टैन स्वामी का हत्यारा कौन' शीर्षक अध्याय में इसके अनेक संदर्भ उजागर किये हैं। उनकी और राजीव भार्गव की किताब 'राष्ट्र और नैतिकता हमारे आज के अनेक महत्वपूर्ण सवालों से जूझती है और चतुर्दिक फैलते बेहिसाब अंधेरे को दर्शाती है। परकाला स्पष्ट कहते हैं कि हिन्दुत्व को राष्ट्रीयता का सत्यापित सूचक मान लिया गया है। बात सही है, लेकिन क्या यह हिंदुत्व ही वास्तविक और प्रतिनिधि हिन्दुत्व है? इसी से यह यह प्रश्न भी उभरता है कि आगामी समय में भारत गणराज्य अनेक धर्मों के प्रति कैसे सलूक से गुजरेगा, जबकि संविधान ने उसे सेक्यूलर और समाजवादी विशेषण से नवाजा है। राजीव सचान के शब्दों का आसरा लें तो क्या लिबरल या उदार लोकतंत्र की अवधारणा विकृतियों के लिये अभिशप्त है? क्या इस लोकतंत्र में लोग कहने को नागरिक हैं, अन्यथा प्रजा का अस्तित्व कायम है। क्या यह सक्रिय नागरिक के गमन और निश्चेष्ट प्रजा के आगमन का दुःसह काल है? सचान का यह कहना सच है कि राज्यविहीनता कोई कुदरती आपदा नहीं, आदमी का पैदा किया हुआ संकट है। यह सरहदों की सनक में पगलाये नवगठित राष्ट्र राज्यों की पैदाइश है।

कहना कठिन है कि इन 'हांकों' और 'खदेड़ो' अभियानों के क्या नतीजे निकलेंगे? वे लोमहर्षक भी हो सकते हैं। क्या गरीबों और हाशिये के लोगों के मूलभूत अधिकारों के लिए लड़ना आगे और मुश्किल होता जायेगा? क्या लोग सच के लिये हलफनामा उठाने से कतरायेंगे? प्रश्न यह भी है कि घृणा की मानसिकता अंततः हमें कहां ले जायेगी? दंभ और सत्ता में बने रहने की ज़िद क्या गुल खिलायेगी? अमेरिका में फेडरेलिस्ट पार्टी ने सन 1798 में राजद्रोह कानून बनाया था। कानूनन आलोचना जुर्म हुई। बड़ी संख्या में विपक्षी दंडित हुये। राष्ट्रपति जॉन एडम्स पर टिप्पणी के एवज में रिपब्लिकन सांसद ने जेल की हवा खाई। मगर परिवर्तन ही शाश्वत है, अतः सत्ता बदली और विपक्षी थॉमस जेफरसन राष्ट्रपति बने। न्यायमूर्ति डीवाई चंद्रचूड़ ने टिप्पणी की थी कि असहमति लोकतंत्र का फकत सेफ्टी वाल्व नहीं है, बल्कि सार्थक सामाजिक जीवन जीने के लिए भी महत्वपूर्ण है। भारत में असहमति और मत-मतांतर की भव्य और सुदीर्घ परंपरा रही है। लोकतंत्र में 'लोक' ही सर्वोपरि है। हमारा संविधान भी 'वी द पीपुल' की बात करता है।

स्वतंत्रता दिवस पर यह कामना अनुचित नहीं कि इस महादेश में 'जनगणमन अधिनायक' के जयगान की परंपरा अक्षुण्ण रहेगी। यह सुखद है कि पंद्रह अगस्त की बेला में हमें राष्ट्रव्यापी तिरंगा अभियान देखने को मिला और इसमें उन समूहों ने सोत्साह शिरकत की, जिनकी दैनंदिन परंपरा में तिरंगा अनुपस्थित रहा है। तिरंग त्रिदेव की भारतीय परंपरा की याद दिलाता है। वह बहुलता और सामासिकता का प्रतीक है। उसके रंग क्रमशः त्याग-बलिदान, शांति और हरीतिमा व समृद्धि के द्योतक है। 15 अगस्त, सन् 47 को एक महादेश जनमा था; जनपदों सूबों, रियासतों के भेदों से ऊपर एक महादेश, सार्वभौम गणतंत्र जिसकी नियति था। संविधान ने से शक्ति और संकल्प दिया। इन अर्थों में 15 अगस्त और 26 जनवरी एकमेक होते हैं। संविधान हमारी ताकत है और एकता, अखंडता और सार्वभौमिकता की गारंटी भी। यह संविधान भी पंद्रह अगस्त का ऋणी है। वस्तुतः भारत छोड़ों आंदोलन 15 अगस्त और पंद्रह अगस्त, छब्बीस जनवरी की भूमिका रचता है। याद रखें कि पंद्रह अगस्त पंद्रह अगस्त को खत्म नहीं होता। वह प्रेरक है और उत्प्रेरक भी। निस्संदेह, पंद्रह अगस्त के बाद क्या का उत्तर भी पंद्रह अगस्त की प्रासंगिता और महत्ता में निहित है।

ट्रंप की टैरिफ़ से बेपनाह आशिकी

वक्रोक्ति

प्रभुनाथ शुक्ल

लेखक पत्रकार हैं।

हमारे ट्रम्प चचा दिल फेंक आशिक मिजाज हैं। बांके और छिछोरे भी हैं। वे मन के मनमौजी हैं। दिल में जो आया वह जुबाँ पर उड़ेल देते हैं। कब क्या बोल जाएं कोई मतलब नहीं। वह पूरी दुनिया में सिर्फ अपनी बंशी बजाना चाहते हैं। वह कहते हैं कि बांस बरेली का हो या वाशिंगटन का सुर और संगीत का निर्देशक मैं ही रहूँगा। वह दुनिया की कोई चिंता नहीं करते हैं न अपनी ही करते हैं। उनके पास न कोई वसूल और न सिद्धांत। खाता न बही जो ट्रंप कहें वहीं सही। जी हाँ, आजकल वह इसी सिद्धांत पर चलना चाहते हैं। बारिश के मौसम में वह गोवर्धन खुद उठाना चाहते हैं। इसी बहाने दुनिया को वह बताना चाहते हैं कि देखिए, पूरी दुनिया में मैं ही अकेला ऐसा हूँ जिसने सबको बचा लिया।

ट्रंप चचा आजकल टैरिफ़ की बीमारी से ग्रसित हैं। वह दिन रात टैरिफ़ का कीर्तन कर रहे हैं। जिसे उनका कीर्तन नहीं पसंद है उसे वह अपनी भजन-कीर्तन मण्डली से निकाल देना चाहते हैं। उनका यह कीर्तन दुनिया के अनेक देशों को पसंद नहीं हैं, लेकिन अब वे ठहरे दुनिया के बेताज़ बादशाह भला उन्हें कौन चुनौती दे सकता है। बुढ़ौती में सठिया गए हैं। वह नंगई पर उतर आए हैं। दुनिया के साथ-साथ वे अमेरिका को भी डुबोना चाहते हैं। अगर आप उनकी भक्ति कर रहे हैं तो वे अमेरिका की सारी चीज आपको निछावर कर देंगे। वह आपका गुणगान करेंगे लेकिन अगर आपने ऐसा नहीं किया तो आपकी खैर

नहीं।

चचा हमारी दोस्ती को भूल गए हैं। वह अब दोस्ती को दुश्मनी में बदलना चाहते हैं। बचपन के दोस्त जैसे बात-बात पर दोस्ती तोड़ते और जोड़ते हैं, ठीक उसी लीक पर हमारे ट्रंप चचा भी चल रहे हैं। वह कह रहे हैं कि कसमे, वादे, प्यार वफ़ा यह सब वादे हैं वादों का क्या। आजकल हमारे पड़ोस से वह अधिक चिपक गए हैं। उन्हें आतंकी और भले मानुष में अंतर नहीं दिख रहा है। वह आतंकियों से गले मिल रहे हैं। व्हाइट हाऊस में डिनर पर बुला रहे हैं। हमने शान्ति दूत नहीं बनने दिया तो चचा खिसियाए हैं और टैरिफ़ का खम्भा नोंच रहें हैं। हमारी वजह से बेचारे चचा नोबेल के शान्ति पुरस्कार से वंचित रह गए। हमने भी गलत किया। आखिर चचा हमारे दोस्त थे, तो दोस्ती हमें निभानी चाहिए थीं। क्योंकि दोस्ती में सबकुछ जायज है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

प्रीतम लखवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

अरे! तुम तो फोटोजैनिक होते जा रहे हो

पहले जब मोबाइल का 'म' भी नहीं था तब हम हमारे चेहरे को देखने के लिए आइने का इस्तेमाल किया करते थे। वह आइना जो हमेशा सच बोलता था, ऐसा नहीं है कि आजकल झूठ बोलने लगा हो, लेकिन अब आइने की बखत कम हो गई है। आइना उतना ही इस्तेमाल होता है जब सैलून में केश रंग में रंगे जा रहे हो। वैसे भी आजकल सच बोलने वाले आइने को कोई घर में नहीं रखता। सारा काम तो मोबाइल के सेल्फी वाले कैमरे से कर लिया जाता है, यहां तक की महिलाएं अपने बाल संवारने से लेकर होठों पर रंगीन परत चढ़ाने तक के महत्वपूर्ण कार्य भी इसी कैमरे से कर लेती हैं।

पहले के जमाने में फोटो खिंचवाने के लिए रंगीन पर्दों से सजे स्टूडियो में जाना पड़ता था, कैमरामेन का वह वाक्य अब भी याद आता है, जब वह कहता था कि जरा मुस्कराइये, यस ओके, हो गया। यानि हम जन्मजात फोटोजैनिक नहीं थे। कैमरे के विकास, स्टिल कैमरे से, डिजिटल कैमरे, फिर बित्ते भर के मोबाइल में आगे-पीछे के कैमरे आ जाने के बाद बड़े से लेकर बुजुर्ग तक और महिलाएं सभी फोटोजैनिक हो गए। अगर कोई अपने रंग से नाखुश दिखता तो मोबाइल कैमरे में फिल्टर और आ गए। जो भैंस को भी धवल बना देता है। मोबाइल के इसी चमत्कार के चलते कई फोटोजैनिक युवा नेता अपने आराध्य बड़े नेताजी की सभा में सेल्फी लेकर स्टेटस लगाकर दोस्त, यार, मित्र के साथ-साथ अपने धुर कम्पीटिटर को यह बताने में गुरेज नहीं करता कि भिया अपन कित्ते सेल्फ डिपेंड हो गए हैं।

इधर, रील्स बनाने वाले भी कम नहीं हैं, वे जगह भी नहीं देखते बस उनकी रील्स बननी चाहिए। भले ही किसी शौचालय की दीवार पर स्वच्छ भारत अभियान का संदेश मुस्कान बिखेर रहा हो। हमारे मोहल्ले के युवा नेता, वे 70 साल की उम्र में भी युवा नेता ही हैं धनसुख लपटानी हमेशा फोटो, फोटो एंगल और भीड़ में अपनी गर्दन सारस और जिराफ की तरह उच्च स्तर पर पहुंचाने का बहुत ध्यान रखते हैं। वे निरे श्याम वर्ण के हैं, लेकिन इतने फोटोजैनिक हैं कि अच्छे से अच्छे श्वेत वर्ण वाले को पीछे छोड़ देते हैं। उनका एक और नैसर्गिक गुण है। जब कोई बड़ा मंत्री, नेता सभा करने के लिए आता है तो वे अपनी गर्दन तो ठीक है, अपनी कोहनियों का भरपूर उपयोग करते हैं।

भीड़ में कोहनी मार प्रतियोगिता कर- एकदम नेता जी के पास पहुंचने का उनका यह गुण उन्हें सबसे अलग बना देता है और सुबह अखबारों में उनकी कुटिल मुस्कान नेताजी की मुस्कान पर भारी पड़ जाती है। एक दिन मैंने उन्हें छेड़ दिया कि धनसुख जी आप तो फोटोजैनिक होते जा रहे हो तो वे अपनी बत्तीसी दिखाकर खिलखिला पड़े। फिर अपनी बत्तीसी संभालते हुए बोले-यह सब मोबाइल की माया है भई। वे कोई भी सभा, कवि सम्मेलन, भंडारा, भजन संध्या में जाने का कोई मौका नहीं छोड़ते। कहीं न कहीं उन्हें मुख्यातिथ्य का परम सुख मिल ही जाता है और फिर सुबह उनकी चकाचक फोटो अखबार में इतराती रहती है। वे अभी घर से निकले ही थे कि मैंने पूछा- कहां जा रहे हो? वे बोले-पर्यावरण का संदेश देने, पौधरोपण करूंगा और वे फर्राटे से निकल गए और मैं उनको ओझल होते देखते रह गया।

महिला अपराधी-2

महिलाओं की गिरफ्तारी में मानवाधिकारों का पालन जरूरी

कानून और न्याय

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

महिला कैदियों के साथ व्यवहार पर संयुक्त राष्ट्र बैंकॉक नियम (2010) और महिलाओं के विरुद्ध सभी प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन पर कन्वेंशन में यह दायित्व महत्वपूर्ण है। इनका भारत भी एक पक्ष है। ये मानवाधिकार मानक महिलाओं को हिरासत में दुर्व्यवहार या आघात से बचाने में राज्य के कर्तव्य पर भी जोर देते हैं। अनुच्छेद 21 इस सिद्धांत का समर्थन करता है।

महिलाओं की गिरफ़्तारी के बारे में बॉम्बे उच्च न्यायालय के फैसले में कानूनी महत्व और व्यापक निहितार्थ है। यह फैसला एक महत्वपूर्ण समय पर आया है। खासकर जांच की आड़ में गिरफ्तारी की शक्तियों के बढ़ते दुरुपयोग के साथ। संदिग्धों और औपचारिक रूप से अभियुक्तों के बीच का अंतर, खासकर हाई-प्रोफाइल वित्तीय मामलों और साइबर अपराधों में, तेजी से अस्पष्ट होता जा रहा है। संदिग्ध महिलाओं को अक्सर अपमानजनक व्यवहार का सामना करना पड़ता है। खासकर कॉरपोरेट या आर्थिक अपराधों में, जहां गिरफ्तारी को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। अदालतें यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठा रही हैं कि प्रक्रियाओं का पालन किया जाए। यह सत्ता के किसी भी दुरुपयोग के प्रति बढ़ती असहिष्णुता को भी दर्शाता है। यह मामला भी आपराधिक कानून सुधार, विशेष रूप से दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 41 और 46 के निरंतर महत्व और अनुच्छेद 21 के न्यायशास्त्र से उनके संबंध के बारे में, चर्चा को फिर से शुरू करता है।

बिना महिला कांस्टेबलों के महिलाओं को गिरफ्तार करना या समय सीमा का उल्लंघन करना न केवल अवैध है, बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप से कष्टदायक और अपमानजनक भी है। इसे अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार मानकों से भी जोड़ा जा सकता है। महिला कैदियों के साथ व्यवहार पर संयुक्त राष्ट्र बैंकॉक नियम (2010) और महिलाओं के विरूद्ध सभी प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन पर कन्वेंशन में यह दायित्व महत्वपूर्ण है। सीईएडडब्ल्यू को महिलाओं के अधिकारों का अंतर्राष्ट्रीय विधेयक भी कहा जाता है। यह एक अंतरराष्ट्रीय संधि है, जिसे 1979 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपनाया गया था और 1981 में लागू हुई थी। इनका भारत भी एक पक्ष है। ये मानवाधिकार मानक महिलाओं को हिरासत में दुर्व्यवहार या आघात से बचाने में राज्य के कर्तव्य पर भी जोर देते हैं। अनुच्छेद 21 इस सिद्धांत का भी समर्थन करता है कि हर व्यक्ति तब तक निर्दोष है जब तक कि वह दोषी साबित न हो जाए। उक्त महिला केवल एक संदिग्ध थी। उन पर अभी तक औपचारिक रूप से आरोप नहीं लगाया गया था। इसलिए उन्हें अधिकतम सुरक्षा का अधिकार था। डीके बसु बनाम पश्चिम बंगाल राज्य (1997) के मामले में, हिरासत में किसी भी प्रकार की क्रूरता या प्रक्रियात्मक उल्लंघन संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन है।

अन्य न्यायालयों में भी इसी तरह की सुरक्षा मौजूद है, जो गिरफ्तारी के दौरान व्यक्तियों, विशेषकर महिलाओं, के अधिकारों की रक्षा पर वैश्विक सहमति को पुष्ट करती है। यूनाइटेड किंगडम में, पुलिस और आपराधिक साक्ष्य अधिनियम (पीएसीई) यह सुनिश्चित करने के लिए विस्तृत प्रक्रियाएं निर्धारित करता है। इसमें गिरफ्तारियाँ वैध रूप से और व्यक्ति की गरिमा का उचित ध्यान रखते हुए की जानी चाहिए। इनमें लैंगिक रूप से संवेदनशील गिरफ्तारी प्रोटोकॉल के प्रावधान शामिल हैं। यह किसी महिला की गिरफ्तारी या तलाशी के दौरान एक महिला अधिकारी की उपस्थिति को अनिवार्य बनाता है। यह भी आवश्यक बनाता है कि ऐसी प्रक्रियाएं इस तरह से संचालित की जाए जिससे परेशानी और शर्मिंदगी कम से कम हो। संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान में अनुचित जब्ती और तलाशी के खिलाफ कड़े दिशा निर्देश दिए गए हैं। इसमें गिरफ्तारी शक्तियों का मनमाना या अत्यधिक उपयोग भी शामिल है।

मिरांडा बनाम एरिजोना (1996) प्रकरण में उत्पन्न सुस्थापित मिरांडा अधिकार भी महिलाओं की गिरफ्तारी के मामले में महत्वपूर्ण है। यह आवश्यक है कि हिरासत में लिए गए व्यक्ति को अभियुक्त के अधिकारों, जैसे कानूनी सहायता प्राप्त करना और पूछताछ के दौरान चुप रहने के अधिकार, के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए। ये अंतर्राष्ट्रीय मानक इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि भारत के संवैधानिक और वैधानिक संरक्षण, जैसे कि दंड प्रक्रिया संहिता के अनुच्छेद 21 और धारा 46(4) में निहित, अपवाद नहीं हैं। यह वैश्विक उचित प्रक्रिया मानदंडों के अनुरूप हैं। बॉम्बे उच्च न्यायालय द्वारा हाल ही में इन संरक्षणों की पुनरावृत्ति, मानवीय गरिमा, कानूनी जवाबदेही और कानून के शासन को बनाए रखने के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

यह निर्णय अत्यंत आवश्यक प्रशासनिक प्रशिक्षण और सुधार के लिए एक प्रेरणा का काम करेगा। हमें तत्काल इन पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। कानून प्रवर्तन अधिकारियों के बीच जागरूकता बढ़ाना भी आवष्यक है। खासकर जब महिलाओं की गिरफ्तारी की बात आती है। साथ ही यह सुनिश्चित करने के लिए स्पष्ट मानक संचालन प्रक्रियाएं (एसओपी) स्थापित करना आवष्यक है कि पुलिस ''तत्परता'' या ''अज्ञानता'' के कारण दंड प्रक्रिया संहिता सुरक्षा की अनदेखी न करे। इसके अलावा जवाबदेही उपायों को लागू करना भी आवश्यक है, जिसमें गिरफ्तारियों की परिस्थितियों का दस्तावेजीकरण और न्यायिक निगरानी सुनिश्चित करना शामिल है।

बॉम्बे उच्च न्यायालय का यह निर्णय एक सशक्त अनुस्मारक है कि संवैधानिक अधिकार केवल निर्दोष लोगों के लिए विशेषाधिकार नहीं है। ये सुरक्षाएं सभी पर लागू होती हैं। चाहे वे अभियुक्त हों, संदिग्ध हों या दोषी भी हों। एक ऐसे लोकतंत्र में जहां कानून का शासन कायम आवश्यक है। अगर न्यायालय इन सुरक्षाओं को सक्रिय रूप से लागू नहीं करतीं, तो प्रक्रियात्मक कानून सिर्फ पन्ने पर लिखे शब्द बनकर रह जाएंगे। यह निर्णय इस बात पर जोर देता है कि सबसे कमजोर व्यक्तियों को भी संविधान का सुरक्षात्मक आलिंगन महसूस करना चाहिए। खासकर जब व्यवस्था अपनी शक्ति का इस्तेमाल उनके खिलाफ कर रही हो।

जन-जागरूकता रोकेगी 'स्तन कैंसर' की रफ्तार

विश्व स्तन कैंसर अनुसंधान दिवस

डॉ. रमेश ठाकुर

सदस्य, राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान

चिकित्सक कहते हैं अगर महिलाओं को अपने ब्रेस्ट में छोटी सी भी गांठ बनते दिखे, तो तुरंत जांच करवानी चाहिए। क्योंकि ये स्तन कैंसर अन्य बीमारियों के मुकाबले खतरनाक माना गया है। भारत में इस बीमारी से पीड़ित महिलाओं की जहां जीवित रहने की दर 60 फीसदी रहती है, वहीं अमेरिका में ये दर 80 फीसदी ही है। आंकड़ों में असमानता का मुख्य कारण जागरूकता की कमी और शुरुआती जांच में बिलंवता, ब्रेस्ट कैंसर का इलाज संभव है, खासकर शुरुआती चरणों में उसकी पहचान और सुगम उपचार से ब्रेस्ट कैंसर पर सफलता पाई जा सकती है। हालांकि, उन्नत चरण में, इलाज का लक्ष्य, रोग को नियंत्रित करना और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना होता है। लेकिन पूर्ण रूप से ठीक होना फिलहाल हमेशा संभव नहीं? पूर्ण सफलता जागरूकता और सतर्कता से ही संभव है।

'ब्रेस्ट कैंसर' विश्व भर की महिलाओं में सर्वाधिक खतरनाक बीमारियों के तौर पर प्रमाणित हो चुकी है। प्रत्येक 14 सेकंड में कोई न कोई महिला स्तन कैंसर की चपेट में आने लगी है। आज 'विश्व स्तन कैंसर अनुसंधान दिवस' है जो सालाना 18 अगस्त को समूचे संसार में मनाया जाता है। 4 साल पहले यानी मई 2021 में 'डॉ. सुसान लव फाउंडेशन' ने आधिकारिक तौर पर इस दिवस के रूप में चिह्नित किया था, ताकि न केवल इस गंभीर बीमारी पर ध्यानाकर्षित किया जाए, बल्कि जानलेवा इस बीमारी को समझने, इलाज करने और जागरूकता के प्रयासों पर गंभीरता से प्रकाश डाला जा सके। स्तन कैंसर के खतरे को समझने और उसे बेअसर करने के लिए आज चिकित्सा तंत्र की ओर से विश्व भर में जागरूकता कार्यक्रम किए जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य स्तन कैंसर के उपचार में शोध परक वैज्ञानिक प्रगतियों पर ध्यान केंद्रित है।

अमेरिका प्रत्येक वर्ष 'कैंसर अनुसंधान पर 167 बिलियन डॉलर खर्च करता है। अमेरिकी महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर सर्वाधिक है। वहां के पुरुषों में स्तन कैंसर होने लगा है। खर्च की जहां तक बात है तो अन्य पीड़ित मुल्क भी कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहे। स्तन कैंसर विकसित और विकासशील देशों की महिलाओं में होना अब आम हो गया है। कामकाजी महिलाएं ज्यादा ही पीड़ित हैं। कारण बिगड़ती दिनचर्याएं कहें, खानपीन या भागदौड़ भरी जिंदगी? बढ़ते ब्रेस्ट कैंसर के आंकड़े निश्चित रूप से डरावने हैं। साल 2020 स्तन कैंसर के लिहाज से महिलाओं के लिए बहुत दुखद रहा, जब दुनिया भर की 2.3 मिलियन महिलाएं इस रोग से पीड़ित हुई

जिसमे रिकॉर्ड 685,000 महिलाओं की असमय मृत्यु हुई। भयभीत करने वाले इन आंकड़ों को देखते हुए ही 'डॉ. सुसान लव फाउंडेशन' ने विश्व स्तन कैंसर को मनाने का निर्णय लिया। फाउंडेशन के निर्णय को डब्ल्यूएचओ, यूनिसेफ, विश्व कैंसर संस्थान, के अलावा समूचे विश्व स्वास्थ्य तंत्र ने ना सिर्फ सराहा, बल्कि हर संभव मदद का आश्वासन भी दिया। 193 देश ऐसे हैं जो इस इस दिवस का समर्थन करते हैं।

गौरतलब है महिलाओं में स्तन कैंसर में भारत अभी चौथे पायदान पर है। कैंसर के निदान पर भारतीय चिकित्सा तंत्र काबिले तारीफ शोध कर रहा है। क्योंकि अनुसंधान के जरिए ही स्तन कैंसर पर अंकुश लगाया जा सकता है। शोध से इस बीमारी का पूर्वानुमान अब आसानी से लगाया जा सकता है। ब्रेस्ट कैंसर का पता जब शुरुआती चरण में चल जाता है, तो सर्जरी, कीमोथेरेपी, रेडिएशन थेरेपी और हार्मोन थेरेपी जैसे उपचारों से ठीक किया जा सकता है। लेकिन ये तभी संभव है जब बीमारी के प्रति जागरूक हों? भारत में सालाना करीब एक लाख 62 हजार महिलाओं को स्तन कैंसर होता है जिनसे 87,000 से अधिक महिलाओं की मृत्यु होती है। चिकित्सीय रिपोर्ट पर गौर करें तो हिंदुस्तान में प्रत्येक एक घंटे के भीतर एक भारतीय महिला को स्तन कैंसर होता है। हालांकि, बीते 2022-23 में बढ़ी जागरूकता के चलते बढ़ते इन आंकड़ों पर थोड़ा बहुत सुधार जरूर हुआ है। स्तन कैंसर ग्रामीण और शहरी दोनों जगहों की महिलाओं को होने लगा है। जबकि, पहले स्तन कैंसर की चपेट में ज्यादातर ग्रामीण महिलाएं ही चपेट में आती थीं। क्योंकि वहां, उपचार, सुविधाओं और जागरूकता का अभाव होता था।

चिकित्सक कहते हैं अगर महिलाओं को अपने ब्रेस्ट में छोटी सी भी गांठ बनते दिखे, तो तुरंत जांच करवानी चाहिए। क्योंकि ये स्तन कैंसर अन्य बीमारियों के मुकाबले खतरनाक माना गया है। भारत में इस बीमारी से पीड़ित महिलाओं की जहां जीवित रहने की दर 60 फीसदी रहती है, वहीं अमेरिका में ये दर 80 फीसदी ही है। आंकड़ों में असमानता का मुख्य कारण जागरूकता की कमी और शुरुआती जांच में बिलंवता ब्रेस्ट कैंसर का इलाज संभव है, खासकर शुरुआती चरणों में उसकी पहचान और सुगम उपचार से ब्रेस्ट कैंसर पर सफलता पाई जा सकती है। हालांकि, उन्नत चरण में, इलाज का लक्ष्य, रोग को नियंत्रित करना और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना होता है। लेकिन पूर्ण रूप से ठीक होना फिलहाल हमेशा संभव नहीं? पूर्ण सफलता जागरूकता और सतर्कता से ही संभव है। कैंसर के संबंध में जागरूकता मिशन अब अभियानों में तब्दील हो चुके हैं।

4 फरवरी को संपूर्ण 'विश्व कैंसर दिवस' भी मनाया जाता है। क्योंकि कैंसर कोई एक नहीं, बल्कि विभिन्न प्रकार के होते हैं जिनमें स्तन कैंसर को सर्वाधिक खतरनाक माना गया है।

क्या आठ रुपए में देश के भविष्य की भूख मिटेगी?

मुद्दा

मनीष जैसल

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक देश में जब विकास की बात होती है, तो अक्सर पुल, सड़क, एक्सप्रेस-वे, डिजिटल इंडिया और अंतरिक्ष अभियान आदि चर्चा में रहते हैं। लेकिन इन उपलब्धियों की चकाचौंध के बीच एक गहरी और कड़वी सच्चाई दब जाती है। हम आज भी लाखों बच्चों को भरपेट भोजन नहीं दे पा रहे हैं। और जब कोई सरकार यह कहे कि एक कुपोषित बच्चे के पोषण पर प्रतिदिन मात्र रू. 8 से रू. 12 खर्च किए जा रहे हैं, तो यह एक आंकड़ा नहीं, बल्कि एक चेतावनी है, हमारी प्राथमिकताएं किस ओर झुकी हैं?

मध्य प्रदेश विधानसभा में सामने आए इस सरकारी बयान ने देशभर के जनमानस को झकझोर दिया है। मंत्री द्वारा दी गई इस जानकारी से साफ है कि राज्य सरकार कुपोषित बच्चों के लिए दिन में 8 रुपए (मध्यम कुपोषित) और 12 रुपए (गंभीर कुपोषित) निर्धारित कर रही है। यानी, महीने भर का पोषण खर्च 240-360 रुपए। सवाल उठता है कि इतनी नगण्य राशि में क्या एक बच्चे के लिए न्यूनतम पोषण भी सुनिश्चित किया जा सकता है?

एक औसतन 2 से 6 वर्ष के बच्चे को प्रतिदिन कम से कम 1000-1200 किलो कैलोरी ऊर्जा, 20-25 ग्राम प्रोटीन, पर्याप्त आयरन, विटामिन ए, कैल्शियम और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों की जरूरत होती है। अब जरा देखें कि इन जरूरतों को पूरा करने के लिए एक थाली में क्या-क्या जरूरी है- आधा कटोरी दाल (10 रुपए), एक कटोरी चावल या दो रोटी (6 रुपए), सब्जी (10 रुपए), थोड़ा घी या तेल (5 रुपए), और एक केला या मौसमी फल (6-8 रुपए)। यानी न्यूनतम पोषण देने वाली एक थाली की लागत करीब 35 रुपए से 40 रुपए बैठती है। वह भी अगर थोक या सामुदायिक खरीद हो तो। अब सवाल यह उठता है कि महज 8 रुपए की सरकारी राशि में एक बच्चे की थाली में आखिर आएगा क्या? न दाल, न फल, न दूध और न ही हरी सब्जी। 8 रुपए में शायद एक सूखी नमकीन खिचड़ी या बेस्वाद रेडी-टू-ईट पावडर ही संभव हो पाए। पोषण तो दूर, यह मात्र पेट भरने का भ्रम पैदा कर सकता है, जिससे कुपोषण कम नहीं होता बल्कि भीतर ही भीतर और बढ़ता है। आज जब एक समोसे की कीमत 10 रुपए और एक बिस्किट का पैकेट 12 रुपए में आता है, तो 8 रुपए की थाली केवल कागज़ पर ही बन सकती है, थाली में नहीं।

कहने को तो यह सरकारी योजना है, लेकिन वस्तुतः यह कुपोषण से जूझते बच्चों के साथ क्रूर मज़ाक जैसा है। आंकड़ों के अनुसार राज्य में 1.36 लाख बच्चे कुपोषण का शिकार हैं, जिनमें लगभग तीस हजार बच्चे अति-कुपोषित की श्रेणी में आते हैं। इनमें से बड़ी संख्या आदिवासी और ग्रामीण अंचलों से आती है, जहाँ न तो पोषण की जानकारी है, न ही पर्याप्त साधन। श्योपुर, बड़वानी, धार, छिंदवाड़ा जैसे जिले संकट की गंभीर अवस्था में हैं। इन जिलों में हर चार में से एक बच्चा कुपोषित है। यदि यह कोई प्राकृतिक आपदा होती तो शायद सरकार अलर्ट हो जाती, लेकिन यह तो रोज़मर्रा की त्रासदी है जिसे हमने सामान्य मान लिया है।

चौंकाने वाली बात यह है कि जब इसी प्रदेश में एक गाय के पोषण पर प्रतिदिन 40 रुपए खर्च करने की योजना चल रही है, वहीं एक इंसानी बच्चे के लिए मात्र 8-12 रुपए की व्यवस्था है। इसका तात्पर्य क्या निकाला जाए? क्या एक गाय का जीवन एक बच्चे की तुलना में अधिक मूल्यवान है? यह सवाल केवल विपक्षी दलों का नहीं है, यह आम जनता का सवाल है। समाज में ऐसी प्राथमिकताओं के क्या संकेत हैं?

सरकार की यह सफाई कि हम केंद्र सरकार से अतिरिक्त सहायता की मांग कर चुके हैं, किसी को संतुष्ट नहीं करती। क्या बच्चों की जान तब तक इंतजार करेगी जब तक फंड स्वीकृत हो? यह एक प्रशासनिक उदासीनता नहीं, एक नैतिक विफलता है।

इस व्यवस्था की गहराई में जाएं तो समझ आता है कि सरकारी योजनाएं अक्सर सिर्फ पूरक आहार की भाषा में बच्चों तक पहुंच पाती हैं। आंगनवाड़ी केंद्रों पर वितरित भोजन जैसे सूखी खिचड़ी, रेडी-टू-ईट पैकेट्स या अल्प मात्रा में दलिया-सिर्फ नाममात्र की कैलोरी और ऊर्जा देता है। विटामिन, मिनरल्स, प्रोटीन और फॉलिक एसिड जैसे जरूरी तत्व लगभग गायब होते हैं। कुपोषण केवल भूख नहीं है, यह शरीर की आवश्यक पोषण जरूरतों की गंभीर उपेक्षा है, जो शारीरिक और मानसिक विकास को हमेशा के लिए बाधित कर सकती है।

ऐसी स्थिति में राज्य सरकार को दोहरी रणनीति अपनानी चाहिए, जिससे तत्काल राहत और दीर्घकालिक समाधान मिल सके। तत्काल राहत के तहत प्रति बच्चे 40 से 50 रुपए प्रतिदिन की वास्तविक पोषण लागत को ध्यान में रखकर बजट तैयार किया जाना चाहिए। आंगनवाड़ियों को पुनर्गठित कर पोषण सामग्री की गुणवत्ता, वितरण की निगरानी और माताओं को पोषण शिक्षा देना जरूरी है। वहीं, दीर्घकालिक रणनीति के तहत राज्य को आदिवासी और कुपोषण-ग्रहस्त जिलों में 'सघन पोषण अभियान' चलाना चाहिए। इसमें स्थानीय फसलों को आधार बनाकर फोर्टिफाइड भोजन तैयार किया जाए, जिसमें लघु अनाज (मिलेट्स), दालें, हरी सब्ज़ियाँ और फल शामिल हों। स्थानीय महिला स्वयं सहायता समूहों को इस योजना से जोड़ने से रोजगार भी बढ़ेगा और वितरण तंत्र भी मज़बूत होगा।

अन्य राज्यों के उदाहरण भी प्रेरणा दे सकते हैं। उत्तर प्रदेश में शुरू किया गया 'मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान' एक सफल मॉडल बनकर उभरा है, जहाँ प्रति बच्चा प्रतिदिन 44 रुपए के पोषणीय नाश्ते की योजना चलाई गई है। वहाँ बच्चों को प्रोटीन, आयरन, कैल्शियम और कैलोरी की वैज्ञानिक मात्रा के आधार पर भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। क्या मध्य प्रदेश सरकार ऐसे सफल मॉडल को अपनाने के लिए तैयार है?

यह भी आवश्यक है कि कुपोषण की समस्या को केवल एक विभाग या मंत्रालय की जिम्मेदारी न मानकर, इसे बहुस्तरीय चुनौती के रूप में देखा जाए। स्वास्थ्य, शिक्षा, ग्रामीण विकास, महिला एवं बाल कल्याण जैसे विभागों को समन्वय से काम करना होगा। यह सिर्फ आहार देने का नहीं, जीवन बचाने का काम है।

यहाँ यह दोहराना आवश्यक समझते हैं कि समाज की प्रगति का मूल्यांकन पुलों की लंबाई या एक्सप्रेसवे की चौड़ाई से नहीं, बल्कि बच्चों की हड्डियों की मज़बूती और आँखों की चमक से किया जाना चाहिए। यदि एक समृद्ध भारत की कल्पना करनी है, तो कुपोषित बच्चों की आंतरिक भूख को नजरंदाज़ कर हम उस मंज़िल तक नहीं पहुँच सकते। 8 रुपए में कुपोषण मिटाने की कल्पना, एक गलतफहमी नहीं, बल्कि शासन की असंवेदनशील सोच की उपज है। यह न तो व्यावहारिक है, न मानवीय। यह सवाल किसी एक राज्य का नहीं, बल्कि पूरे देश की नीति दृष्टि का है।

यह स्थिति केवल योजनागत विफलता नहीं, बल्कि हमारे संविधान में निहित मूल्यों का भी स्पष्ट उल्लंघन है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21 हर नागरिक को गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार देता है, जो केवल जीवित रहने तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें पोषण, स्वास्थ्य और सुरक्षित बचपन की गारंटी भी निहित है। इसी तरह अनुच्छेद 47 राज्य को यह निर्देश देता है कि वह पोषण स्तर और जीवन स्तर में सुधार को अपनी प्राथमिक जिम्मेदारी माने। जब राज्य कुपोषित बच्चे के पोषण पर प्रतिदिन 8 रुपए खर्च कर रहा हो, तो यह न केवल सामाजिक न्याय की भावना के खिलाफ है, बल्कि समानता, करुणा और अवसर की संवैधानिक अवधारणाओं की भी अवहेलना है।

एक लोकतांत्रिक और कल्याणकारी राष्ट्र में यह अपेक्षित नहीं कि बच्चों का पेट भरे आंकड़ों से, और उनके भविष्य की बुनियाद इतनी कमजोर रखी जाए। अब वक्त है कि इस 'आंकड़ों के भ्रम' से बाहर निकलकर सच्चाई की ज़मीन पर लौटें जहाँ बच्चे केवल संख्या नहीं, देश का भविष्य भी हैं।

कांग्रेस जिलाध्यक्ष निलय विनोद डागा का प्रथम नगर आगमन आज, जिलेभर में होगा ऐतिहासिक स्वागत

बैतूल। जिला कांग्रेस कमेटी बैतूल के नवनियुक्त जिलाध्यक्ष निलय विनोद डागा का बैतूल जिले में प्रथम आगमन आज 18 अगस्त दिन सोमवार को होने जा रहा है। श्री डागा सुबह 10 बजे भोपाल से बैतूल के लिए प्रस्थान करेंगे, जिसके पश्चात सुबह 11 बजे जिले की सीमा में स्थित ग्राम धार पहुंचेंगे। यहां कांग्रेस कार्यकर्ताओं, वरिष्ठ नेताओं और पूर्व जनप्रतिनिधियों द्वारा उनका प्रथम स्वागत किया जाएगा। इसके बाद श्री डागा का काफिला बैतूल की ओर रवाना होगा और मार्ग में विभिन्न स्थानों पर उनके स्वागत की भव्य तैयारियां की गई हैं। प्राप्त जानकारी अनुसार निलय विनोद डागा सुबह 11.30 बजे भौरा पहुंचेंगे, जहां स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्ता उनका अभिनंदन करेंगे। इसके पश्चात दोपहर 12 बजे शाहपुर, 12.30 बजे बरेठा, 12.45 बजे कान्हावाड़ी जोड़, 1.00 बजे पाढर, 1.15 बजे बासपानी, 1.30 बजे भारत भारती, 1.40 बजे सोनाघाटी, 1.45 बजे टिकारी नाका, 1.50 बजे बी.ओ.एल. और 2.00 बजे गेंदा चौक में जनसमूह द्वारा स्वागत किया जाएगा। 2.10 बजे कारगिल चौक में स्थित अमर शहीद दुर्गादास राठौर की प्रतिमा पर निलय डागा माल्यार्पण करेंगे। इसके उपरांत 2.20 बजे गुरुद्वारा पहुंचकर पूजा-अर्चना करेंगे। कार्यक्रम की अगली कड़ी में 2.25 बजे मैकेनिक चौक, 2.30 बजे कांतिशिवा चौक और 2.40 बजे टांगा स्टैंड पर फलों से तुलादान कर उनका स्वागत किया जाएगा। 2.50 बजे शिवाजी चौक में छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा पर, 3 बजे रानी दुर्गावती चौक में रानी दुर्गावती जी की प्रतिमा पर, 3.10 बजे अंबेडकर चौक में डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर, 3.20 बजे महाराणा प्रताप चौक में महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर, 3.25 बजे राजा भोज चौक में राजा भोज की प्रतिमा पर और 3.30 बजे बस स्टैंड चौक पर सरदार विष्णु गोंड जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। इसके बाद 3.40 बजे लल्ली चौक स्थित प्राचीन शिव मंदिर में पूजन अर्चन कर 3.50 बजे गांधी चौक में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करेंगे। यहां से काफिला डागा हाउस पहुंचेगा, जहां कांग्रेसजनों द्वारा उनका आत्मीय स्वागत किया जाएगा। अंत में शाम 4.30 बजे डागा हाउस में जिले के सभी पूर्व विधायक, जिला कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ नेता, समस्त ब्लॉक कांग्रेस कमेटियों के अध्यक्ष, मोर्चा संगठन पदाधिकारी और कांग्रेस परिवार के समस्त वरिष्ठ सदस्यों की उपस्थिति में संगठन के भावी रोडमैप पर चर्चा की जाएगी। नवनियुक्त कांग्रेस जिला अध्यक्ष निलय विनोद डागा के प्रथम आगमन को लेकर समूचा कांग्रेस संगठन उत्साहित है और जिलेभर में कांग्रेस कार्यकर्ताओं में अपार ऊर्जा और उत्साह देखने को मिल रहा है। यह आगमन कांग्रेस के लिए एक नई ऊर्जा और दिशा तय करने वाला साबित होगा।

स्वतंत्रता दिवस समारोह में केंडू बाबा हुए सम्मानित

बैतूल। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर पुलिस ग्राउंड में जिला स्तरीय मुख्य समारोह में प्रदेश के लोक स्वास्थ्य चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री नरेन्द्र शिवाजी मप्र शासन के मुख्य आतिथ्य में एवं आमला विधायक डॉ.योगेश पंडाग्रे, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, जिला कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी, पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया द्वारा अटल सेना के प्रांताध्यक्ष राजेन्द्र सिंह चौहान (केंडू बाबा) को समाजसेवा और जनहित में उत्कृष्ट और सराहनीय कार्यो के लिए प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया। उन्हें यह सम्मान मजदूरों, महिलाओं, विकलांगों, गरीबों, शिक्षा, यातायात जागरूकता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। इनकी उपलब्धि पर सेवंती साहू, कृष्णा नामदेव, कीर्ति नामदेव, पिंकी तालमपुरिया, नर्मदा शेषकर, सरिता पाल, सुनीता राठौर, ज्योति राठौड़, लक्ष्मी विश्वकर्मा, सुधा खंडारे, नीतू नानकर, साक्षी नानकर गीता आवारे सहित संगठन के पदाधिकारियों और सदस्यों ने बधाई दी है।

हिंदू समाज की रक्षा और संगठन ही परिषद का उद्देश्य

● प्रखंड बैठक में बनी कार्ययोजना, मनाया स्थापना दिवस

बैतूल/ भौंरा। विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल मध्य भारत प्रांत जिला बैतूल प्रखंड शाहपुर के तत्वावधान में नगर के माँ बिजासन मंदिर परिसर में संगठन का 61वां स्थापना दिवस कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान परिषद की स्थापना, उद्देश्य और समाज में उसकी भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। उद्बोधन में बताया गया कि विश्व हिंदू परिषद की स्थापना वर्ष 1964 में मुंबई स्थित सांदीपनि आश्रम में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी, स्वामी चिन्मयानंद तथा अनेक साधु-संतों और सामाजिक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में की गई थी। परिषद की स्थापना का उद्देश्य हिंदू समाज की रक्षा, संरक्षण और संगठन के साथ ही हिंदू धर्म के महान मूल्यों के संवर्धन और संरक्षण के लिए कार्य करना रहा है। कार्यक्रम में जिला मंत्री श्याम राठौर ने बौद्धिक प्रस्तुत करते हुए परिषद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और आज के समय में संगठन की प्रासंगिकता पर विचार रखे। इस अवसर पर जिले के सेवा प्रमुख शुभम चौरे, बजरंग दल के पवन यादव, भौंरा खंड मंत्री विशाल मालवीय, खंड अध्यक्ष सहित शाहपुर से पवन मालवीय, प्रखंड मंत्री ऋतिक प्रजापति तथा बजरंग दल संयोजक प्रदीप यादव विशेष रूप से उपस्थित रहे। स्थापना दिवस अवसर पर प्रखंड बैठक भी आयोजित हुई, जिसमें शाहपुर प्रखंड के दसों करों की कार्ययोजना तैयार की गई और प्रभारी नियुक्त किए गए। बैठक में प्रखंड एवं खंड स्तर के कार्यकर्ताओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और संगठन की भावी योजनाओं पर चर्चा की। इस मौके पर शिवम चोरे ने कहा कि परिषद का मुख्य उद्देश्य हिंदू समाज को संगठित रखना, उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करना और सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करना है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे और स्थापना दिवस के महत्व को आत्मसात किया।

पुलिस ने चोरी के आरोपियों को किया गिरफ्तार

बैतूल। थाना कोतवाली पुलिस ने दो चोरी के प्रकरणों में आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से मिली जानकारी के अनुसार फरियादी बलराम पिता प्रभुदयाल यादव (28 वर्ष) निवासी जैन दादावाड़ी के सामने बैतूल ने रिपोर्ट की कि 16 अगस्त की रात्रि में अज्ञात चोरों ने उसके घर का दरवाजा तोडक़र चोरी का प्रयास किया। जिस पर थाना कोतवाली बैतूल में धारा 64, 305 बीएनएस पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। वहीं फरियादी सायबू पिता बलीराम खातरकर (65 वर्ष) निवासी वैष्णवी नगर गौठाना बैतूल ने रिपोर्ट की कि 16 अगस्त को ही रात्रि में अज्ञात चोरों ने ताला तोडक़र उसके घर से लैपटॉप एवं चांदी की पायल चोरी कर ली। जिस पर थाना कोतवाली बैतूल में अपराध धारा 331(4), 305 बीएनएस पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। पुलिस ने इस मामले में सुनील पिता परसराम नागले उम्र 28 वर्ष निवासी शांति नगर गौठाना बैतूल और एक बाल अपचारी को हिरासत में लिया है। जिनके पास से 1 एचपी कंपनी का लैपटॉप, कीमती करीबन 35,000, 1 चांदी जैसी धातु की पैर पट्टी, कीमती करीब 10,000 और 1 रिंग पाना, कीमती करीब 300 कुल मशरूका 45,300 बरामद किया है। इस कार्रवाही में थाना प्रभारी निरीक्षक रविकांत डेहरिया, उप निरीक्षक पचम सिंह उईके, प्रधान आरक्षक तरुण पटेल, प्रधान आरक्षक ब्रजेश रघुवंशी, प्रधान आरक्षक शुभम चौबे, आरक्षक महेश नगदे, आरक्षक राहुल शर्मा, आरक्षक चन्द्रपाल एवं आरक्षक उज्जवल दुबे थाना कोतवाली बैतूल की सराहनीय भूमिका रही।

जल भराव से खराब होने वाली फसल का व्यक्तिगत बीमा क्लेम कर सकते है किसान

बैतूल। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत ऐसे किसान जिनकी वर्तमान खरीफ फसल स्थानीय प्राकृतिक आपदा से जलभराव होने के कारण खराब हो चुकी है वे कृषि विभाग व बीमा कंपनी को व्यक्तिगत आवेदन देकर अपनी फसल नुकसानी का बीमा क्लेम कर सकते है।

अधिवक्ता दिनेश यादव ने बताया कि वर्षा के कारण किसानों के खेतों में जो नदी, नाले के किनारे हो या रेला हो या डबराई जमीन में जलभराव होने के कारण फसल खराब हो जाती है ऐसे किसान भले पूरे गांव की फसल अच्छी है, एक किसान भी व्यक्तिगत आवेदन बैंक प्रबंधक जहां उसका के.सी.सी. खाता है एवं कृषि विभाग, खरीफ वर्ष 2025 के लिए किसान के जिले में अनुबंधित बीमा कंपनी एवं तहसीलदार को आवेदन में बीमा प्रीमियम राशि, कृषि भूमि का रकबा, के.सी.सी. खाता नंबर की जानकारी के साथ 72 घण्टे के अन्दर आवेदन देकर व्यक्तिगत बीमा क्लेम कर सकता है। ऐसे किसानों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के प्रावधानों के अनुसार 15 दिन में सर्वे व बीमा क्लेम राशि का निर्धारण कर 21 दिन में किसान को भुगतान किया जाता है। इस प्रकार के आवेदन देने वाले किसानों का किसी भी बैंक में फसल बीमा प्रीमियम की राशि ऋणी या अऋणी कृषक के रूप में जमा होना जरूरी है, इस प्रकार के आवेदनों में किसानों को दो सावधानी अत्यन्त आवश्यक है - (1) आवेदन दिनांक के 72 घण्टे के अन्दर जल भराव से फसल खराब होना दर्शाना चाहिए, (2) व्यक्तिगत क्षतिपूर्ति फसल बीमा क्लेम के अंतर्गत फसल खराब होने का कारण जल भराव ही लिखना चाहिए। वर्तमान में जिन किसानों की भी सोयाबीन या अन्य खरीफ फसल खराब हुई है या जो किसान बोनी बिगड़ गई है या जो किसान अपनी कृषि भूमि में बोनी ही नहीं कर पाये हैं तथा उनका बैंकों द्वारा उनकी बीमा प्रीमियम राशि काट ली गई है, वे सभी किसान राजस्व विभाग के सर्वे की चिन्ता किये बगैर व्यक्तिगत सूचना देकर बीमा क्लेम कर सकते है।

अंबेडकर कॉलेज में आजादी का जश्न मनाया

बैतूल। भीमराव रामराव अंबेडकर शिक्षा महाविद्यालय बैतूल में लोकतंत्र के राष्ट्रीय महापर्व के 79 वें स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर श्रीराम शिक्षा परिषद के अध्यक्ष श्रीमती सुशीला देवी अग्रवाल द्वारा कालेज के भव्य भवनों के प्रांगण में ध्वजारोहण किया।

इस समारोह में महाविद्यालय के संचालक इंजीनियर ध्रुव प्रकाश अग्रवाल, इंजीनियर सर्वेश अग्रवाल तथा प्राचार्य, समस्त स्टाफ एवं बी.एड. स्कालर्स की उपस्थिति में प्राचार्य डॉ.जी.डी. देशमुख द्वारा सर्व प्रथम संस्थापक स्व. डॉ. मंगल प्रसाद अग्रवाल को स्मरण किया और उनके व्यक्तिव चरित्र एवं कृतज्ञ पर प्रकाश डालते हुए उनके संदेश हर मतदाता भाग्य विधाता अपने मतदान का प्रयोग जरूर करें, को जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रेरित किया। भारत के स्वतंत्रता को मजबूत बनाये रखने के लिए प्रत्येक भारतीय नागरिक को अपने कर्तव्यों को ईमानदारी, निष्ठापूर्वक पूरा करने का आग्रह किया है। वरिष्ठ व्याख्याता सुनील वर्मा सर द्वारा कार्यक्रम का संचालन करते हुए 15 अगस्त के ऐतिहासिक दिवस पर स्वतंत्रता दिवस के महत्व को बताया।

भौंरा के पीएनबी शाखा में स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण नहीं

46 साल पुरानी परंपरा तोड़ी, नगरवासियों का आक्रोश

बैतूल/भौंरा। भौंरा नगर के मुख्य मार्ग पर स्थित पंजाब नेशनल बैंक की भौंरा शाखा में इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण न होने से नगरवासियों में गहरा आक्रोश है। पिछले 46 वर्षों से यहां हर 15 अगस्त और 26 जनवरी को ध्वजारोहण किया जाता रहा है, लेकिन इस बार शाखा प्रबंधक दीपक कोटिया, जिन्हें मात्र चार माह पूर्व प्रभार सौंपा गया था, ने न तो कार्यक्रम आयोजित किया और न ही कार्यालय खोला। सुबह से ही बैंक का ताला बंद देखकर स्थानीय नागरिकों में नाराजगी फैल गई। दोपहर करीब 12 बजे ग्राम पंचायत भौंरा की सरपंच मीरा धुर्वे, जनपद सदस्य सुधीर नायक, मंडल उपाध्यक्ष जय किशोर मिश्रा, राजेंद्र कावडक़र, राजेश बरगले, सीरीज जायसवाल और अनेक ग्रामीण बैंक पहुंचे। वहां बैंक के बाहर ताला लटका मिला। मौके पर सभी की मौजूदगी में पंचनामा तैयार किया गया और ग्राम पंचायत के लेटरपैड पर जिला कलेक्टर को लिखित शिकायत भेजी गई, जिसमें शाखा प्रबंधक पर तत्काल विभागीय कार्रवाई की मांग की गई है। नगर के वरिष्ठ व्यापारी अशोक दुबे ने कहा, बैंक स्थापना के बाद से यह पहली बार है कि स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण नहीं हुआ। यह केवल एक रस्म नहीं, बल्कि राष्ट्रीय गौरव और जनभावना का प्रतीक है। इसका उल्लंघन अस्वीकार्य है।

इनका कहना है –

स्वतंत्रता दिवस देश के हर नागरिक के लिए गर्व का दिन है। 46 वर्षों से चली आ रही परंपरा को तोड़ना केवल लापरवाही नहीं, यह राष्ट्रीय पर्व की गरिमा के साथ खिलवाड़ है। ग्राम पंचायत की ओर से हमने इस घटना की शिकायत जिला कलेक्टर से की है और मांग की है कि जिम्मेदार अधिकारी पर तुरंत कार्रवाई हो, ताकि भविष्य में ऐसी चूक दोबारा न हो। – मीरा धुर्वे, सरपंच, ग्राम पंचायत भौंरा

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के पुरस्कार वितरित

बैतूल बाजार। अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा देश भर में आयोजित की जाने वाली भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के विकासखंड बैतूल के पुरष्कार स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वितरित किए गए।

सोहागपुर, बघोली, सेलगांव, बारव्ही, बैतूल व बैतूल बाजार के स्कूलों में स्थानीय परिजनों व स्कूल के प्राचार्य व शिक्षकों द्वारा ये पुरस्कार वितरित किये गए। बैतूलबाजार में संदीपनी स्कूल, डिवाइन स्कूल, कार्मल स्कूल, बैतूल में संजीवनी, बालाजी, सेंट्रल स्कूल, लिटिल फ्लावर, इंडियन पब्लिक स्कूल में भी इसी बीच भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के पुरस्कार वितरित किये गए। विकासखण्ड परीक्षा प्रभारी नीलेश्वर कालभोर ने बताया कि बच्चों में भारतीय संस्कृति के प्रति रुचि जागृत करने, भारतीय इतिहास व विज्ञान को बच्चों में जागृत करने के उद्यद्देश्य से यह परीक्षा विगत कई वर्षों से आयोजित की जा रही है। इस वर्ष भी यह ज्ञान परीक्षा नवम्बर माह में आयोजित की जा रही है । गायत्री परिजनों के माध्यम से इनके पंजीयन प्रारम्भ हो चुके हैं।

दही हांडी महोत्सव में आमला की टीम बनी विजेता

● लियो-लायन्स क्लब अमीगोज़ ने किया ऐतिहासिक दही हांडी महोत्सव का आयोजन

बैतूल। जन्माष्टमी के पावन अवसर पर लियो-लायन्स क्लब बैतूल अमीगोज़ द्वारा आयोजित भव्य दही हांडी महोत्सव 2025 भारी वर्षा के बावजूद ऐतिहासिक भीड़ और अपार उत्साह के साथ संपन्न हुआ। क्लब के मीडिया प्रभारी नीलराज पगारिया ने बताया कि दशकों बाद बैतूल में इतने भव्य स्तर पर मटकी फोड़ आयोजन देखने को मिला। जिलेभर से आई टीमों की भागीदारी से यह आयोजन ऐतिहासिक बन गया। लगभग 30 फीट ऊंची मटकी फोड़ प्रतियोगिता ने दर्शकों को रोमांचित कर दिया। प्रतियोगिता में आमला के डीजे बॉयज़ ने शानदार प्रदर्शन कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। विजेता टीम को 21 हजार रुपये नगद पुरस्कार, विजेता शील्ड और सभी खिलाडय़ों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। वहीं मांझी टीम द्वितीय स्थान पर रही। क्लब की ओर से सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों को फूड पैकेट वितरित किए गए। आयोजन की सफलता के लिए क्लब ने खिलाडय़ों और दर्शकों की सुविधा को प्राथमिकता दी। एम्बुलेंस, पेयजल, खिलाड़ियों हेतु लकड़ी के बुरादे का मैदान, चलित शौचालय, कचरा गाड़ी आदि की संपूर्ण व्यवस्था की गई। इन तैयारियों के चलते यह महोत्सव सुरक्षित, अनुशासित और व्यवस्थित ढंग से संपन्न हुआ। क्लब अध्यक्ष तिलक पगारिया ने सभी प्रतियोगी टीमों, गणमान्य अतिथियों, कार्यक्रम के सहयोगियों, समाजसेवियों, राजनेताओं, न्यू बैतूल स्कूल, पुलिस प्रशासन, नगर पालिका, मंच संचालक, टेंट-साउंड सहित सभी उपस्थित जनों का हृदय से आभार व्यक्त किया।

स्कूल के निर्माण होने से राष्ट्रीय कार्यक्रम के आयोजन हेतु पर्याप्त जगह हुई खत्म

विजय भवन प्रांगण में पड़ रही आयोजनों में जगह की कमी

बैतूल/शाहपुर। नगर के हाईस्कूल मैदान पर सांदीपनि स्कूल का निर्माण होने से राष्ट्रीय कार्यक्रम के आयोजन में परेशानी हो रही है। नगर के एकमात्र हाईस्कूल के मैदान का उपयोग राष्ट्रीय कार्यक्रम 15 अगस्त, 26 जनवरी का मुख्य समारोह, मुख्यमंत्री सामूहिक कन्या विवाह, आमतौर पर खेल, खेल-कूद, समारोह और नेताओं की सभा, हेलीपेड, चुनावों सहित, अन्य बाहरी गतिविधियों के लिए किया जाता था, जो यहां मंच सहित राष्ट्रीय कार्यक्रमों के आयोजनों के लिए भी एक महत्वपूर्ण स्थान था। इस उपयोगी मैदान पर अब सांदीपनि स्कूल का स्कूल भवन के निर्माण जोरशोर से किया जा रहा है। हाईस्कूल मैदान पर स्कूल भवन के निर्माण कार्य प्रारंभ होने से अब नगर में इन गतिविधियों के लिए कोई बड़ी जगह नहीं बची। जिससे कि राष्ट्रीय कार्यक्रम के आयोजन या अन्य भव्य आयोजन हो सके। मजबूरन विजय भवन के सामने छोटे से प्रांगण में राष्ट्रीय पर्व के मुख्य कार्यक्रम करवाए जा रहे है। जिस जगह राष्ट्रीय और सामाजिक आयोजन हो रहे है। यह जगह ब्लॉक मुख्यालय के मुख्य कार्यक्रम कराने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। दर्जनों की संख्या में ब्लॉक मुख्यालय पर सरकारी स्कूल हैं। अगर पूरे सरकारी स्कूल के बच्चे कार्यक्रम में पहुंच जाएं तो जगह छोटी पड जायेगी। कुल मिलाकर नगर का एक मात्र मैदान नेताओं की आपसी गुटबाजी का शिकार होकर रह गया। हाईस्कूल के मैदान का उपयोग स्कूल भवन के निर्माण के लिए किया जा रहा हैं, वही छात्रों और समुदाय को इन महत्वपूर्ण अवसरों से वंचित होना पड़ रहा हैं। हाईस्कूल के मैदान पर स्कूल भवन का निर्माण राष्ट्रीय कार्यक्रमों के आयोजन और छात्रों और समुदाय के लिए अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियों में बाधा उत्पन्न हो रही है। नगर के ऐतिहासिक हाईस्कूल मैदान के अस्तित्व को समाप्त करने की कोशिश पूरी हो गई है। मैदान में सांदीपनि स्कूल भवन निर्माण शुरू कर दिया गया है। निर्माण को लेकर नींव भी खोद दी गई है। मैदान के अस्तित्व पर संकट आने से वहां खेलने वाले खिलाडियों के अलावा मॉर्निंग वाक करने वाले लोग व खेल प्रेमी चयनित जगह का विरोध कर रहे थे। हाईस्कूल का मैदान नगर के युवाओं के लिए स्टेडियम से कम नहीं था। हर दिन सैकड़ों लोग फुटबाल, क्रिकेट, कबड्डी खेलने और मॉर्निंग वाक करने के लिए यहां आते थे। वर्षों से युवक यहां खेलने और बुजुर्ग मॉर्निंग वाक करने आ रहे थे। इसी मैदान में कई राज्य स्तरीय व अंतरराज्यीय खेलकूद प्रतियोगिताएं भी आयोजित हो चुकी हैं।

उज्जैन में महाकाल की सवारी क्यों और किस लिए ?

आज अंतिम सवारी

राजशेखर व्यास

(लेखक पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक दूरदर्शन / आकाशवाणी हैं)

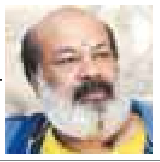

उत्कर्ष के साथ जय करने वाली नगरी उज्जयिनी, भारत की प्राचीनतम महानगरियों में एक महाकालेश्वर की उज्जयिनी। इतिहास, धर्म, दर्शन, कला, साहित्य, योग-वेद वेदांग, आयुर्वेद-ज्योतिष साधु-संत, पर्व, मन्दिर और मस्जिद, चमत्कार, साम्प्रदायिक सद्भाव की विलक्षण नगरी! भारत के हृदय में स्थित है 'मालवा'। मालव प्रदेश! इसी मालवा की गौरवशाली राजधानी है, उज्जयिनी। दुनिया की किसी भी नगरी चले जाइए इटली, रोम, वेनिस पर आपको एक साथ इतनी महानता और महत्व कहीं नहीं मिलेगा, जितनी इस नगरी में, कभी आप उज्जैन की गलियों मे घूमें? एक अद्भुत नगरी है ये, एक तरफ काल गणना का केन्द्र ज्योतिष की जन्मभूमि और स्वयंभू ज्योतिलिंग भूत भावन भगवान महाकाल की नगरी है, तो दूसरी और जगद्गुरु कृष्ण भी जिस नगरी में विद्याध्ययन करने आये उन्हीं महर्षि सान्दीपनि की नगरी है, यहाँ पर संवत प्रवर्तक सम्राट विक्रम ने अपना शासन चलाया। शकों और हूणों को परास्त कर पराक्रम की पताका फहरायी तो यहीं पर महाकवि भास, कालिदास, भवभूति और भर्तृहरि ने कला साहित्य के अमर ग्रंथों का प्रणयन भी किया और वैराग्य की धूनि भी रमायी। श्रृंगार-नीति और वैराग्य की अलख जगाने वाले तपस्वी भृर्तृहरि, 'जदरूप' और योगी पीर मत्स्येन्द्रनाथ की साधना-स्थली भी यही नगरी है।

जदरूप के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। तपस्वी जदरूप से मिलने जहांगीर से लेकर अकबर तक मिलने आते थे , इस बात का जिक्र मेरी पुस्तक 'जयति जय उज्जयिनी' में प्रामाणिक रूप से किया गया है। जहांगीर की 'तुजुक-ए-जहांगीरी' और अकबर की 'आईने अकबरी' मे ऐसे उल्लेख आते हैं कि इस महान विद्वान से मिलने कई मुगल ज्ञान चर्चा के लिए आते थे । पीर मछन्दर की समाधि भी यहां है।

चण्डप्रद्योत उदयन- वासवदत्ता, चण्डाशोक के न्याय और शासन की केन्द्र धुरी रही है उज्जयिनी, नवरत्नों से सजी-धजी कैसी होगी ये उज्जयिनी; जब ज्योतिष जगत के सूर्य वराहमिहिर, चिकित्सा के चरक धनवंतरि और शंकु घटखर्पर-वररुचि जैसे महारथियों से अलंकृत रहती होगी !

यूँ तो वेद, पुराण, उपनिषद्, कथा-सरित्सागर, बाणभट्ट की 'कादम्बरी' 'शूद्रक' के 'मृच्छकटिकम' और आयुर्वेद-योग-वैदिक-वांङमय, योग वेदान्त, काव्य, नाटक से लेकर कालिदास के मेघदूत तक इस नगरी के गौरवगान से भरे पड़े हैं। पाली, प्राकृत-जैन, बौद्ध और संस्कृत साहित्य के असंख्य ग्रंथों में इस नगरी के वैभव का विस्तार से वर्णन हुआ है। 'परिमल' कवि ने इसे 'स्वर्ग का टुकड़ा' कहा है, तो 'सट्टक कर्पूर मंजरी' एवं 'काव्य मीमांसा' के कवि राजशेखर ने इसे स्वर्ग से भी सुन्दर नगरी निरूपित किया है। उज्जयिनी का सर्वाधिक विशद विवरण 'ब्रम्हपुराण', स्कंदपुराण के 'अवन्ति-खण्ड' में हुआ है। कनकश्रृंगा, कुशस्थली, अवन्तिका, उज्जयिनी, पद्मावती, कुमुदवती, अमरावती, विशाला, प्रतिकल्पा, भोगवती, हिरण्यवती अनेक नामों से इस नगरी को सुशोभित किया गया है।

इस नगरी में प्रवेश के लिये प्राचीन काल में 'चौबीस खम्बा' मुख्य द्वार था। कहते हैं 'महाकाल वन' का यही परकोटा था, राजशेखर ने लिखा हैं 'श्रुयते ही उज्ज्यन्यां काव्यकारणं परीक्षणं' -सुनते हैं कि प्राचीन काल में उज्जयिनी में प्रवेश से पूर्व यहीं पर विद्वानों की भी परीक्षा ली जाती थी-सावधान यह विद्वानों की नगरी है!

महाकालेश्वर की यह नगरी सुरम्य क्षिप्राटट पर बसी है। सघन वन, मन्दिर-मस्जिद़ और मठों से लगी सुदीर्घ घाटों से सुसज्जित पुण्य सलिला क्षिप्रा उत्तर की ओर बहती नदी है। क्षिप्रा का उद्गम 'महू' से दूर एक पहाड़ी से हुआ है। 'स्कंद पुराण' में लिखा है-पृथ्वी पर क्षिप्रा के समान कोई नदी नहीं है। इसके तट पर क्षण मात्र खड़े होने से ही मुक्ति मिल जाती है। 'क्षिप्रा महात्म्य' में लिखा है, क्षिप्रा का स्मरण मात्र ही पाप मुक्त करता है। सोचिए कैसी महान नगरी है ये । मैंने इस नगरी पर 1980 में 'जयति जय उज्जयिनी' और ' उज्जयिनी युगे-युगे' ये दो फिल्में बनाई ।

पहली बात यह परिकल्पना है कि यह महाकाल की सवारी क्या है? उज्जैन के जो दर्शनीय स्थान हैं उनमें महाकालेश्वर का स्थान सर्वप्रमुख है। द्वादश ज्योतिर्लिंग में तो महाकाल की गणना होती ही है। लेकिन समस्त मानव लोक के स्वामी का भी पुराणों में उल्लेख है - आकाशे तारक लिंग पताले हाटकेशवरम ।

मृत्युलोके महाकाल लिंगत्रय नामोस्तुते ॥

- अथार्थ आकाश में तारक लिंग है, और पाताल में हाटकेशवर के स्वर है। लेकिन मृत्यु लोक यानी पृथ्वी पर महाकाल ही ईश्वर है।

महाकालेश्वर का स्थान बहुत मनोहर भव्य और बहुत प्रभावोत्पादक है। महाकाल की स्वयंभू प्रतिमा दक्षिण मुखी है। तांत्रिक परंपरा में दक्षिण मुखी परंपरा बहुत महत्वपूर्ण मानी गई। केवल महाकाल को ही यह स्थान प्राप्त है। पुरातन मंदिर कहां था, या जहां अब है , वहीं था इसका ठीक-ठीक आज भी लोगों को नहीं पता। पर इसकी वैभवशीलता, सुंदरता, विशालता का वर्णन आपको प्राचीन ग्रंथ में मिलेगाद्य कई विदेशी जैसे अल्बेरूनी और फरिश्ता ने यहां के वैभव और संपन्नता का बहुत सुंदर चित्रण किया है।

तमाम, महान, राजनेता, लेखक, कलाकार, संस्कार, रविंद्र नाथ टैगोर से लेकर निराला तक ने उज्जयिनी पर लिखा है। आज की पीढ़ी को पता ही नहीं कि श्रावण मास के जो चार सोमवार की सवारी थी, वह सिंधिया शासन काल के समय से निकलती आई है। बड़े लवाजमे में साथ। बाद में इस में आसपास के गांव के लोग भी आ जाते।

अब यह सवारी एक बड़ी यात्रा के रूप मे मंदिर से निकलकर शिप्रा तट पर पहुंचती है। और वहां पूजा होने के बाद फिर पूरे नगर में घूमती है। ढाई तीन घंटे में यथा स्थान पहुंचती है। इस सवारी के पीछे निसंदेह भावुक कवि हृदय कल्पना रही होगी। यह मैंने की थी, अपनी फिल्म में भी दिखाया है, जो फिर वह बात प्रचलन में आ गई । मेरा मानना है कि जो वृद्ध, अपंग, रोगी, अपाहिज, मूक, बीमार, बच्चे अपने प्रजापालक भगवान महाकाल के दर्शन को ना आ पाए और अपनी विवशताओं के चलते किसी कारण महाकाल ना पहुंच पाए , तब श्रावण माह के इस पुण्य पर्व पर स्वयं राजा महाकाल उनसे मिलने आएंगे, मानो उनके दुख -दर्द, उनकी पीड़ाओं का साक्षात्कार करने।

सवारी की बहुत उज्जवल परंपरा थी। कभी महाराज सिंधिया और पंडित सूर्यनारायण व्यास और अनेक गणमान्य विद्वान सवारी में पैदल चलना अपना गौरव समस्या से। मैं स्वयं पच्चीस साल राजमाता विजयराजे सिंधिया जी के साथ और महाराज के साथ खूब सवारी में घूमा हूँ। आज भी सिंधिया परिवार कभी-कभी इस परंपरा का पालन करता है। अंतिम सवारी की शोभा और भव्यता देखने लायक है।

तो मैंने अपनी फिल्म में यह पूरी सवारी शूट की है।

दो दिलचस्प प्रसंग बताना चाहूंगा। जब पहली बार मैंने महाकाल की भस्म आरती शूट की तो इस बात पर बहुत चर्चा हुई कि मैंने महाकाल को दिगंबर रूप में दुनिया को दिखा दिया। हाँ, एक और अफवाह है कि महाकाल में चिताभस्म से पूजन होता है। चिताभस्म से पूजन आज़ादी के बहुत पहले कभी हुआ करता था तांत्रिक परम्पराओं के अनुसार। मगर महात्मा गांधी के अनुरोध पर व्यास जी ने इस परंपरा को बंद करवा दिया था। पहले व्यास जी इस मंदिर के प्रमुख थे । पंडित सूर्य नारायण व्यास का ही नाम आपको पुराने रिकॉर्ड्स में मिलेगा। हमारे परिवार के जल से ही पहले महाकाल का हरिओम का जल चढ़ता और फिर द्वार खुलते थे। शिवरात्रि पर भी पहला जल गृहस्थी के हाथों चढ़ता था।

और शिवजी का भी मिलन क्योंकि एक दूसरे की एक परंपरा है कि बैकुंठ में छह महीने होते हैं, छह महीने वह जागते हैं तो चाबी दे जाते हैं भगवान शिव मैं जा रहा हूं भाई कैलाश। तुम संभालो पृथ्वी। ऐसा मजे़दार परिकल्पनाएं थी। तो महाकाल के पीछे भी यही परिकल्पनाएं थी कि भगवान महाकाल जनता से मिलने निकले हैं,उनको क्योंकि राजा महाकाल ही माने जाते थे उन्हे गार्ड ऑफ ऑनर दिया जाता था सिंधिया शासन काले से ही, जो अब तक जारी है। इक्कीस तोपों में सलामी भी हुई है अंग्रेज़ों के दौर में। लेकिन सवारी का वह रूप अड़सठ में दिया गया है गरुड और नंदीगण रखे होते थे। मैं मुझे अपनी बचपन की स्मृति थी कि मैं हाथी पर बैठकर हाथी का श्रृंगार करवाता था। मेहंदी, आलता, रंगोली , पुष्पों से सुसज्जित हाथी हमारे

मैंने सड़सठ से बहत्तर, चौहत्तर तक देखा कि यहां तक कि सवारी हमारे घर के बाहर से निकलती थी। कई बार यह भी होता था कि सवारी महाकाल से महाकाल खाने के पीछे, नगर खाने की सीढ़ी से उतर के जाती, चार लोग भी मुश्किल से होते थे। और अगर पिताजी सामने से आ रहे हों तो सवारी उनके लिए रुकी खड़ी रहती। साथ मै भी आ रहा होता था। उस समय सवारी को चार पंडे या कहार ही उठाते थे ।

बाद में मुस्लिम कहारों की परंपरा शुरू हुई। तत्कालीन कलेक्टर महेश नीलकंठ बुच ने पंडित व्यास के निर्देश पर श्रावण के सोमवार कि सवारी कि यह परिकल्पना सन अड़सठ में की, अपनी सवारी को और आगे बढ़ाते जन्माष्टमी तक ले जाते हैं. लोगों को रथयात्रा से आनंद मिले। उड़ीसा में रथयात्रा हो ही रही थी और भी कई जगह इस तरह की परंपराएं थी।

तो यह दो सवारियां जो भाद्रपद में बढ़ाई गई है, जन्माष्टमी तक ले गए हैं। इससे क्या हरिहर मिलन हो जाए भगवान कृष्ण घर में ही बैठे रहते थे। मुझे याद है कि गरुड़जी हमारे घर में सबसे पीछे कमरे में थे और नंदीगण बड़े गणेश के सामने रखे हुए थे। आज भी यह सब पुराने लोगों की स्मृति में होगा। यानी महाकाल की सवारी का प्रबंध भी भारती भवन से ही होता रहा, बरसों बरस ।

इस परिकल्पना में काफी कुछ बदलाव आग या। अब आम आदमी फिर महाकाल से दूर होर हा है। व्यवस्था के नाम पर अव्यवस्था होती जा रही है। मेरा एक बहुत ही वैज्ञानिक और आध्यात्मिक प्रश्न है, वह बहुत महत्वपूर्ण है।

जब महाकाल राजा के रूप में जनता से मिलने चल पड़े, तो वह आम आदमी से मिल रहे हैं और आम आदमी उनसे मिलना चाहता है अपने प्रजापालक से। तो फिर मंदिर का द्वार बंद हो जाना चाहिए, क्योंकि वह शिवलिंग से प्राणप्रतिष्ठा के रूप में भगवान महाकाल राजा के रूप में प्रजा के दर्शनार्थ निकले, प्रजा उनके दर्शन करेगी। तो विग्रह इसमें सवार हो गए हैं, सवारी में। तो हम मंदिर में जिसकी पूजा कर रहे हैं, वह कौन है? और अगर भगवान महाकाल तो यह जो शहर में घूम रहे हैं, तो यह मंदिर मे कौन है?

मुझे कई राजनेताओं ज़माने में बाबूलालजैन, राजेन्द्र जैन को भी सुझाव दिया था। तो वह कहते थे कि अरे भगवान तो कणकण में व्याप्त है। उस परंपरा की मर्यादा का सम्मान रखने के लिए महाकाल का द्वार उस समय बंद कर देना चाहिए। जब सवारी नगर में भ्रमण कर रही है, तो इसका असर और गहरा होगा कि महाकाल इस समय सवारी में विराजमान हैं। वे सवारी के रूप में प्रजा को दर्शनार्थ गए। प्रजा और प्रसन्न होगी और वो प्रतिमा और जागृत दिखाई देगी क्योंकि प्राणप्रतिष्ठा के रूप में भगवान यहां विग्रह में जा रहे हैं भाई, जब लौटें तब महाकाल का द्वार खुलना चाहिए। वैसा प्राचीनकाल में मैंने कहीं अध्ययन किया है कि ऐसा होता था। यह सवारी बहुत छोटे रूप में ही निकलती थी। शिप्रा गए महाकाल को स्नान कराके ले आए. बहुत सुंदर परिकल्पना थी। उस परिकल्पना को अगर हमें और बड़ा रूप में रहना है, तो मेरे सुझाव को देखना होगा। महाकाल के अंदर, करीब उन्नीस सौ बीस, तीस के आसपास पुरातत्व विभाग द्वारा खुदाई की गई थी, तब वहां प्राचीन काल/ विक्रम काल की मूर्तियाँ निकली जो महाकाल के चारों तरफ रखवा दी गई थीं। फिर बाद में विक्रम विश्वविद्यालय, विक्रम कीर्ति मंदिर जिसका निर्माण भी पंडित सूर्य नारायण व्यासजी ने किया। उन्होंने उन को वहां रखवा दिया ।

मंदिर के दक्षिण भाग में भी शंकर के अनेक मंदिर हैं। अनादिकालेश्वर, वृद्ध महाकालेश्वर के दो विशाल मंदिर हैं। वृद्ध महाकालेश्वर को ही बहुत से लोग असली महाकाल भी मानते हैं।

लेकिन पुराणों में इस सिद्ध स्थान की पूरी ख्याति महाकाल वन के नाम से है। तो उस ज़माने मैं यहां पर था और एकमात्र हमारा परिवार सांदीपनि युग से महाकाल के साथ बसा हुआ है। हमारा अपना मंदिर बड़े गणेश भी महाकाल के निकट बना हुआ है। और हमारा जो भवन है, जहां व्यासजी महाराज बैठते थे भारती भवन, वह महाकाल के साथ ही है। नारायणजी महाराज,हमारे दादाजी महाराज को ही महाकाल के साथ रहने का अधिकार मिला था और यह भवन बाद में जो व्यासजी ने सिंधिया इस्टेट से भूमि खरीदकर के बनाया, 3 हज़ार वर्ग फीट से लेकर के और 6 हज़ार वर्ग फीट। सिंधिया इस्टेट ने उस समय नीलामी की थी। तो 1932 में पूरा भवन बनाया गया।

इस देश का कितना बड़ा सौभाग्य है कि पह पंडित सूर्यनारायण व्यास और महाकाल दो ही नाम उज्जयिनी से जाने जाते थे। फिर यहां पर राजकपूर, राजेंद्रबाबू, राधा कृष्णन, जवाहरलाल, पटेल, शास्त्रीजी सब आए। भारतभूषण, निरूपा राय को लेकर सूर्यनारायणजी ने यहां कवि कालिदास फिल्म बना दी, 1952 में। 1942 में बना चुके थे इस से पहले विक्रमादित्य फिल्म पृथ्वीराजकपूर, रत्नमाला, प्रेम अदीब को लेकर बनाई थी। इन सब की शूटिंग उज्जयिनी में हुई है महाकाल के आसपास। मेरा बचपन मुझे याद है कि तब महाकाल बिल्कुल सूना आंगन रहता था। हम चार लोग,बच्चे खेल रहे हैं और महाकाल में कभी भी प्रवेश कर सकते हैं। अब जिस तरह से व्यवस्था के नाम अव्यवस्थाएं हैं, उस पर भी शासन को ध्यान देना होगा।

क्योंकि महाकालेश्वर, ज्जैन ही एक प्राचीन नगरी है और यह नगरी नहीं, इस राष्ट्र का गौरव है। इस राष्ट्र का वैभव है।

हिंदी विश्वविद्यालय में जन्माष्टमी उत्सव एवं अटल बिहारी वाजपेई की पुण्यतिथि का आयोजन

भोपाल। हिंदी विश्वविद्यालय में जन्माष्टमी उत्सव एवं भारत के पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई की पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार ने सांस्कृतिक आस्था और राष्ट्रभक्ति का अद्वितीय संगम प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के भारी कुलसचिव प्रोफेसर राजीव वर्मा ने विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. देवानंद हिंडोलिया का संदेश वाचन किया। कुलगुरु प्रो. हिंडोलिया ने अपने संदेश में कहा कि जन्माष्टमी केवल धार्मिक पर्व ही नहीं, बल्कि श्रीकृष्ण के दिव्य अवतार और गीता के शाश्वत संदेश को आत्मसात करने का अवसर है। इसी प्रकार अटल जी का जीवन हमें राष्ट्रभक्ति, लोकतांत्रिक मूल्यों और काव्यात्मक संवेदनाओं के माध्यम से सदैव प्रेरित करता है। इस अवसर पर वक्ताओं ने बल दिया कि अटल जी की कविताओं और उनकी राजनीतिक दृष्टि से आज का युवा वर्ग राष्ट्र निर्माण का मार्गदर्शन प्राप्त कर सकता है। वहीं जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय परिसर में भजन, संगीतमय प्रस्तुतियाँ और कृष्ण जन्म की झांकियों का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अधिकारी, प्राध्यापकगण, कर्मचारी और छात्र-छात्राएँ बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने जन्मदिवस पर किया शिवपूजन, गौपूजन

जनपद पंचायत गंगेव में विभिन्न विकास कार्यों का किया लोकार्पण , रीवा में विभिन्न स्थलों में हुआ जनसम्मान, जनप्रतिनिधियों समाजसेवियों ने किया अभिनंदन

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि कहा कि लोकतंत्र में जनता की सेवा ही सर्वोच्च धर्म है और उन्हें पिछले 21 वर्षों से लगातार जनता का आशीर्वाद मिल रहा है। उन्होंने कहा कि बाणसागर बाँध की नहरों से विन्ध्य के विकास की नई इबारत लिखी गई है, वहीं पिछले दो दशकों में सड़क, बिजली, पानी, सिंचाई और कृषि के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। रीवा की जनपद पंचायत गंगेव में उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल के जन्मदिवस पर विशाल जनसमूह की उपस्थिति में भव्य समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर उन्होंने 6 करोड़ 10 लाख 60 हजार रुपये की लागत के विभिन्न निर्माण कार्यों का भूमिपूजन और लोकार्पण किया। इसमें जनपद पंचायत का नया भवन, अटल सभागार और अन्य विकास कार्य शामिल रहे। समारोह में हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि रीवा के सौर ऊर्जा संयंत्र से दिल्ली की मेट्रो दौड़ रही है, शहर में फोरलेन सड़कें, फ्लाईओवर, रिवर फ्रंट और सुंदर तालाब बने हैं। मुकुंदपुर में सफेद बाघों की पुर्नस्थापना हुई है। आगामी अक्टूबर माह से रीवा एयरपोर्ट से दिल्ली और इंदौर के लिए नियमित हवाई सेवाएँ प्रारंभ होंगी। उन्होंने कहा कि जनता के आशीर्वाद का मोल केवल सेवा और विकास कार्यों के माध्यम से ही चुकाया जा सकता है। जनपद अध्यक्ष गंगेव श्री विकास तिवारी, विधायक मनगवां श्री नरेन्द्र प्रजापति, पूर्व विधायक श्री श्यामलाल द्विवेदी, श्री केपी त्रिपाठी, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती नीता कोल, पूर्व महापौर श्री वीरेन्द्र गुप्ता और अनेक जनप्रतिनिधियों ने उप मुख्यमंत्री को जन्मदिवस की शुभकामनाएँ दीं।समारोह में उप मुख्यमंत्री का जगह-जगह स्वागत हुआ। मनगवां से बाइक रैली के साथ उनका भव्य स्वागत कर उन्हें कार्यक्रम स्थल तक लाया गया। सरपंच संघ, सचिव संघ और स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने भी अभिनंदन किया।

ईको पार्क में शिवपूजन

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने जन्मदिवस के अवसर पर रीवा स्थित ईको पार्क के कुंडेश्वरनाथ शिव मंदिर में सपत्नीक पूजा-अर्चना की। उन्होंने भगवान शिव का दूध, गंगाजल और शुद्ध जल से अभिषेक कर पूजा की और प्रदेशवासियों के सुख-समृद्धि व कल्याण की प्रार्थना की।

लक्ष्मणबाग गौशाला में गौपूजन और कन्यापूजन

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने लक्ष्मणबाग मंदिर परिसर में विभिन्न देवताओं के दर्शन कर पूजा-अर्चना की। तत्पश्चात गौशाला में गौमाता की पूजा कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने कन्यापूजन पूजन कर आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर गौमाता के लिए भंडारे का शुभारंभ करते हुए श्री शुक्ल ने उन्हें विभिन्न व्यंजन खिलाए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि लक्ष्मणबाग की पावन भूमि पर जन्मदिन मनाना उनके लिए परम सौभाग्य है। उन्होंने कहा कि गौमाता और जनता के आशीर्वाद से उन्हें रीवा और विन्ध्य के विकास की शक्ति प्राप्त हुई है। उन्होंने गौसेवा और जनसेवा को जीवन का ध्येय बताया। इस अवसर पर सांसद श्री जनार्दन मिश्रा ने कहा कि उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने राजनीति में सदैव स्वच्छ छवि और विकास के संकल्प के साथ कार्य किया है। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती नीता कोल, पूर्व महापौर श्री वीरेन्द्र गुप्ता और अन्य जनप्रतिनिधियों ने भी इस अवसर पर शुभकामनाएँ दीं।

प्रजापिता ब्रम्हकुमारी संस्थान में सम्मान

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल के जन्मदिवस पर प्रजापिता ब्रम्हकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय रीवा में आयोजित समारोह में सम्मानित किया गया। संस्थान प्रमुख बहन ब्रम्हकुमारी निर्मला जी ने उन्हें अंगवस्त्र, श्रीफल और स्मृति चिन्ह भेंट किए तथा केक खिलाकर शुभकामनाएँ दीं। इस अवसर पर श्री शुक्ल ने कहा कि जन्मदिवस पर आध्यात्मिक चेतना केंद्र से आशीर्वाद मिलना उनके लिए बहुत बड़ा सौभाग्य है। उन्होंने कहा कि ब्रम्हकुमारी संस्थान समाज को कठिन समय में आध्यात्मिक मार्गदर्शन देकर सही राह दिखाता है।

सेन थॉम समूह के विद्यालयों में श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया जन्माष्टमी उत्सव

देवास। जन्माष्टमी का पावन पर्व सेन थॉम एकेडमी, भोपाल रोड तथा सेन थॉम पब्लिक स्कूल, बद्रीधाम नगर में बड़े ही श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। दोनों परिसरों में रंग-बिरंगी सजावट, भक्ति संगीत और भगवान श्रीकृष्ण के जीवन व उपदेशों की दिव्य छटा बिखरी रही।

सेन थॉम अकादमी, भोपाल रोड में विद्यार्थियों ने भजन, नृत्य और एक मनमोहक नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की, जिसमें श्रीकृष्ण के बचपन से लेकर मानवता को मार्गदर्शन देने वाले उनके जीवन प्रसंगों का सुंदर चित्रण किया गया। नन्हे-मुन्ने बच्चों ने राधा और कृष्ण का रूप धारण कर कार्यक्रम को और भी आकर्षक बना दिया।

वहीं, सेन थॉम पब्लिक स्कूल, बद्रीधाम नगर में नन्हे-मुन्ने बच्चे राधा और कृष्ण के रूप में सजे-धजे सबका मन मोह रहे थे। बच्चों की रासलीला और नृत्य प्रस्तुतियों ने वातावरण को भक्ति और उल्लास से भर दिया। कार्यक्रम की विशेष झलक 'मटकी फोड़' गतिविधि रही, जिसमें छोटे-छोटे कृष्ण भक्तों ने भगवान के बाल्यकाल की माखन-चोरी की लीलाओं को सजीव कर दिया। साथ ही, श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं पर आधारित कथा-वाचन ने बच्चों का मनोरंजन करने के साथ-साथ उनका ज्ञानवर्धन भी किया। दोनों संस्थानों में प्री-नर्सरी से लेकर एसआरएम तक के बच्चों ने राधा-कृष्ण का रूप धारण कर उत्सव की शोभा बढ़ाई और वातावरण को निष्छल आनंद और मासूमियत से भर दिया। इस अवसर ने न केवल बच्चों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने का कार्य किया, बल्कि भक्ति, एकता और आनंद के अविस्मरणीय स्मृति-पलों का भी सृजन किया। जन्माष्टमी का पावन पर्व सेन थॉम एकेडमी, भोपाल रोड तथा सेन थॉम पब्लिक स्कूल, बद्रीधाम नगर में बड़े ही श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। दोनों परिसरों में रंग-बिरंगी सजावट, भक्ति संगीत और भगवान श्रीकृष्ण के जीवन व उपदेशों की दिव्य छटा बिखरी रही। सेन थॉम अकादमी, भोपाल रोड में विद्यार्थियों ने भजन, नृत्य और एक मनमोहक नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की, जिसमें श्रीकृष्ण के बचपन से लेकर मानवता को मार्गदर्शन देने वाले उनके जीवन प्रसंगों का सुंदर चित्रण किया गया। नन्हे-मुन्ने बच्चों ने राधा और कृष्ण का रूप धारण कर कार्यक्रम को और भी आकर्षक बना दिया। वहीं, सेन थॉम पब्लिक स्कूल, बद्रीधाम नगर में नन्हे-मुन्ने बच्चे राधा और कृष्ण के रूप में सजे-धजे सबका मन मोह रहे थे। बच्चों की रासलीला और नृत्य प्रस्तुतियों ने वातावरण को भक्ति और उल्लास से भर दिया।

जिला जेल देवास में जन्माष्टमी का भव्य आयोजन, कलेक्टर रहे मुख्य अतिथि

देवास। जिला जेल देवास में जन्माष्टमी के पावन अवसर पर भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में जिले के कलेक्टर श्री ऋतुराज सिंह उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि का तिलक, साफा एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर पारंपरिक स्वागत से हुई। इसके बाद महिला एवं पुरुष बंदियों ने कृष्ण भक्ति से ओतप्रोत विभिन्न नृत्य प्रस्तुतियाँ दीं। महिला बंदियों की प्रस्तुति के दौरान नन्हे-नन्हे बालक 'कान्हा' और 'राधा' के रूप में सजे छोटे बच्चे रथ पर सवार होकर मंच पर प्रवेश किए, जिसने पूरे वातावरण को दिव्यता और आनंद से भर दिया। बंदियों द्वारा भगवान श्रीकृष्ण के गिरिराज धरण की भव्य झांकी भी तैयार की गई, जिसका अनावरण मुख्य अतिथि कलेक्टर महोदय ने किया। इस भव्य झांकी ने सभी को भावविभोर कर दिया। जेल अधीक्षक श्रीमती हिमानी मानवारे ने अपनी मधुर वाणी में भजन प्रस्तुत कर वातावरण को भक्ति रस से सराबोर कर दिया। कार्यक्रम के अंतर्गत बंदियों द्वारा निर्मित पालने में झूलते बाल गोपाल को स्मृति चिन्ह के रूप में मुख्य अतिथि को भेंट किया गया, जिसकी सभी ने सराहना की। इस अवसर पर जिला जेल में 06 नवनिर्मित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कक्षों का उद्घाटन भी कलेक्टर महोदय द्वारा किया गया, जो न्यायिक कार्यवाही और प्रशासनिक गतिविधियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगे। मुख्य अतिथि कलेक्टर श्री सिंह ने संपूर्ण कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए जेल अधीक्षक, समस्त जेल स्टाफ एवं बंदियों को इस भव्य आयोजन की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं।

कार्यक्रम के अंत में उप अधीक्षक श्री अनिल दुबे ने सभी अतिथियों, अधिकारियों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना अंतर्गत वैष्णो देवी यात्रा के लिए 25 अगस्त तक करें आवेदन

देवास। राज्य शासन के निर्देशानुसार मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना अंतर्गत वैष्णो देवी यात्रा 06 सितम्बर से 11 सितम्बर तक होगी। यात्रा में देवास जिले को 100 सीटें आवांटित की गई है। यात्रा के लिए आवेदक 25 अगस्त तक आवेदन कर सकते है। अधिक जानकारी के लिए आवेदक तहसील कार्यालय में सम्पर्क कर सकते हैं। वैष्णो देवी यात्रा में इंदौर-देवास-बड़वानी-उज्जैन-आगर मालवा जिले के यात्री शामिल होंगे।

जिले के ऐसे आवेदक जो पूर्व में मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना अन्तर्गत किसी भी यात्रा में सम्मिलित नही हुए है, आयकर दाता नहीं है एवं 60 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके हे। वे आवेदन पत्र नियत प्रारूप में दो- दो प्रति में मय आवश्यक दस्तावेजों की छायाप्रति,नवीनतम पासपोर्ट साईज फोटो, परिचय पत्र, निवासी साक्ष्य राशन कार्ड, ड्राईविंग लायसेंस, विद्युत देयक, मतदाता पहचान पत्र में से कोई एक एवं आयु संबंधी दस्तावेज की छायाप्रति सलग्न करना अनिवार्य है।

65 वर्ष से अधिक आयु के पति-पत्नी यदि साथ यात्रा कर रहे हो तो उन्हें भी अपने साथ सहायक को ले जाने की पात्रता प्राप्त होगी एवं सहायक को भी आवेदन पत्र पृथक से दो प्रतियो में प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा। दिव्यांग (60 प्रतिशत दिव्यांग) व्यक्ति भी इस यात्रा के लिए पात्र है बशर्ते की वह यात्रा करने के लिए सक्षम है। उस पर आयु का बंधन नही होगा। दिव्यांग (60 प्रतिशत दिव्यांग) व्यक्ति को भी सहायक साथ ले जाने की पात्रता है। तीर्थ यात्रा हेतु आवेदन निर्धारित अंतिम दिनांक तक ही संबंधित तहसील मुख्यालय पर प्राप्त किये जायेंगे।

लॉटरी द्वारा चयनित आवेदक को ट्रेन के स्टापेज तक एवं यात्रा उपरांत अपने गन्तव्य स्थान तक जाने के लिए स्वंय ही व्यय वहन करना होगा। इसके लिये शासन से कोई भुगतान नहीं किया जायेगा आवेदक यदि पूर्व में किसी तीर्थ यात्रा में सम्मिलित होकर यात्रा कर चुका है वह आवेदक दोबारा यात्रा में जाने के लिए आवेदन नहीं कर सकेगा। ऐसे आवेदन पाये जाने पर आवेदन निरस्त कर दिया जायेगा। ऐसे आवेदक जिनके द्वारा पूर्व में इस यात्रा के लिए आवेदन किया गया था और जिनका चयन इस यात्रा के लिये नहीं हुआ था। ऐसे आवेदकों को इस यात्रा हेतु पुनः आवेदन नहीं करना होगा। उन्हें केवल संबंधित तहसील कार्यालय में नवीन तिथि के लिए सहमति का आवेदन देना होगा।

राइट क्लिक

कालजयी फिल्मों के फलक पर अमिट हस्ताक्षर है 'शोले'

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क- 9893699939
ajaybokil@gmail.com

बॉलीवुड की ब्लॉक बस्टर और कल्ट क्लासिक कही जाने वाली फिल्म 'शोले' अपने रिलीज होने की स्वर्ण जयंती पर नए क्लायमेक्स वर्जन के साथ फिर से रि-रिलीज हुई है। बदले क्लायमेक्स में डाकू गब्बर को मार दिया गया है, जोकि इसके अनसेंसर्ड वर्जन में भी था। इसे दर्शक कितना पसंद करेंगे, यह कहना अभी मुश्किल है, क्योंकि बीते 50 सालों में काफी कुछ बदल गया है। दो पीढ़ियां बदल गई हैं। सामाजिक आचार, व्यवहार और आम आदमी की जिंदगी में फिल्मों की भूमिका भी बदल गई है। 'शोले' के जमाने में थियेटर में जाकर फिल्म देखना एक पारिवारिक अथवा फ्रेंड सर्कल का उत्सव भी होता था तो कुछ लोगों के लिए नई फिल्म का 'पहला शो' देखना जीवन-मरण का प्रश्न होता था। अब फिल्में ओटीटी पर कभी भी देखी जा सकती हैं। बहरहाल, निर्देशक रमेश सिप्पी की इस फ़िल्म के अनकट वर्जन का 27 जून को इटली के बोलोनी में इल सिनेमा रित्रोवातो फ़ेस्टिवल में अपना वर्ल्ड प्रीमियर हुआ। अब इसे टोरंटो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में दिखाया जाएगा, जो 4 सितंबर से शुरू हो रहा है। इस प्रीमियर में 'शोले' फ़िल्म के मूल अंत और हटाए गए दृश्य शामिल हैं, जो रिलीज़ के समय सेंसर की आपत्ति के कारण हटा दिए गए थे। 204 मिनट की यह फ़िल्म 'अच्छाई बनाम बुराई' की क्लासिक कहानी है। और एक काल्पनिक गांव 'रामगढ़' पर केंद्रित है। बावजूद तमाम आलोचनाओं के शोले का हर चरित्र अपने आप में एक मूल्य लिए हुए था, जिसका आज तेजी से क्षरण हो रहा है। फ़िल्म पहली बार जब रिलीज़ हुई थी तो मुंबई के मिनर्वा थिएटर में लगातार पाँच साल तक चली थी। बाद में इसे बीबीसी इंडिया के ऑनलाइन पोल में 'फ़िल्म ऑफ़ द मिलेनियम' चुना गया और ब्रिटिश फ़िल्म इंस्टीट्यूट के पोल में इसे 'महानतम' भारतीय फ़िल्म का दर्जा दिया गया। आरडी बर्मन के अमर संगीत और फ़िल्म के फ़ौरन पहचाने जाने वाले डायलॉग्स के पाँच लाख रिकॉर्ड्स और कैसेट बिके। बीबीसी हिंदी के अनुसार इस फिल्म को भारत की एक 'सांस्कृतिक घटना' माना जाता है, क्योंकि इसके चुटीले संवाद बरसों तक शादियों और राजनीतिक भाषणों में इस्तेमाल होते रहे हैं। कई विज्ञापनों में भी मज़ाकिया अंदाज़ में इनका उपयोग किया गया। इस फ़िल्म में अमिताभ के साथ एक छोटे से शहर के बदमाश और छोटे भाई की भूमिका निभाने वाले धर्मेंद्र ने हाल में कहा, शोले दुनिया का आठवां आश्चर्य है।

वैसे फिल्म शास्त्र में 'कल्ट क्लासिक' का अर्थ एक खास दर्शक वर्ग की सर्वकालिक लोकप्रिय फिल्म होता है। फिल्म इस मायने में भी अनूठी है कि इसका हर पात्र और चरित्र अब आइकॉनिक बन चुका है। फिर चाहे वह महज एक दो संवाद बोलने वाला सांभा, हो कालिया हो या फिर केवल एक डांस 'महबूबा..महबूबा' में झलकने वाले जलाल आगा हों। फिल्म के संवाद और पटकथा लेखक सलीम-जावेद ने हर पात्र इस तरह रचा और उसे कहानी में इस तरह से फिट किया कि जहां वह कहानी को आगे बढ़ाता है, वहीं अपने आप में संपूर्ण कैरेक्टर भी है। मूलतः बॉलीवुड फिल्म से प्रेरित इस फिल्म की कथा भारतीय परिवेश में इस तरह से सानी गई थी, ये सारे पात्र नाटकीय होते हुए भी शुद्ध भारतीय ही लगते थे, आज भी लगते हैं बावजूद इसके कि बीते 50 सालों में काफी कुछ बदल गया है। सामाजिक रिश्ते बदल गए हैं। प्रौद्योगिकी का बहुत विकास हुआ है। डाकू समस्या देश के सीमित इलाके में रह गई है। संचार क्रांति हो चुकी है। भाप के इंजन और तांगे अब गुजरे जमाने की बातें हैं। क्रूरता और हिंसा, झूठ और मक्कारी में भी जमाना से 'शोले' से कहीं और ज्यादा भड़क चुका है। कसे हुए डायलॉग, उनकी लाजवाब अदायगी और सटीक संपादन ने 'शोले' को ऑल टाइम हिट बना दिया। इस फिल्म की सफलता का बड़ा श्रेय इसके संपादक एम.एस. शिंदे को भी जाता है, जिन्होंने 3 लाख फीट के शूट किए फिल्म फुटेज को 18 हजार फीट में बदल दिया। इस चुस्त संपादन ने हर चरित्र को सटीक और अत्यंत प्रभावी बना दिया, जो छोटे से रोल में भी दर्शकों के दिलो दिमाग पर छाया रहता है। संपादक शिंदे इस दुनिया में नहीं है। 'शोले' का हर पात्र बाहर से कैसा भी हो, भीतर से कहीं ईमानदार है। जो करता है डंके की चोट पर करता है, दिल से करता है। यही बात दर्शक को गहरे तक प्रभावित करती है।

गौरतलब है कि 15 अगस्त 1975 को जब शोले रिलीज हुई थी, तब देश में आपातकाल लागू हुए 50 दिन ही हुए थे। चारों तरफ भय और आशंका का वातावरण था। सत्ता विरोधी लोग जेल में थे। मेरे जैसे कॉलेज के प्रथम वर्ष के विद्यार्थी इस बात से चिंता में थे कि इमरजेंसी के कारण सागर विवि की परीक्षाएं दो माह टाल दी गई थीं। दूसरी तरफ सरकारी तंत्र देश में जो हो रहा था, उसे 'अनुशासन पर्व' की संज्ञा दे रहा था। इसी अनिश्चितता और डर के माहौल में 'शोले' रिलीज हुई। शुरू में वो खास नहीं चली। लेकिन उस आपातकाल में लोगों को शायद एक ऐसे मनोरंजन की दरकार थी, जो उन्हें जिंदगी और परिवेश के तनाव व भय से दूर ले जाए। और ऐसी फेंटेसी रचे जो उनके जीवन से अलग भी न हो। 'शोले' मानो इस पैमाने पर फिट बैठ गई। उसमें डाकू गब्बरसिंह का जो अमर कैरेक्टर अमजद खान ने निभाया, वह असल जिंदगी के डाकुओं से मेल भले न खाता हो, लेकिन सनकी काल्पनिक डाकुओं के हिसाब से एकदम सटीक था। इसी तरह जय और वीरू जैसे भागे हुए अपराधी भी थे तो पश्चिम की तर्ज पर लेकिन सोचते- बोलते भारतीयों की तरह थे। अलबत्ता बसंती तांगे वाली का चरित्र अति नाटकीय होते हुए भी शुद्ध भारतीय था। इसी तरह ठाकुर बलदेवसिंह का पात्र अभिनेता सलमान खान के फौजी नानाजी से प्रेरित था। उन दिनों जो भी यह फिल्म देखकर लौटता था, अपने साथ फिल्म के कुछ डायलॉग भी बांध लाता था। फिर चाहे वह गब्बर सिंह हो, जय-वीरू या जेलर असरानी या फिर सूरमा भोपाली हो। जगदीप अभिनीत सूरमा भोपाली के अमर पात्र को देखकर भोपाल में रहने वाली असली भोपाली सूरमा यानी फारेस्ट ऑफिसर नाहर सिंह नाराज हो गए थे। असली सूरमा को लगा था कि उन्हें बदनाम किया गया है, जबकि वास्तविकता इसके विपरीत थी। फिल्म के संवाद आपसी बातचीत और घर-परिवार में दोहराए जाते। इससे फिल्म की माउथ पब्लिसिटी तेजी से होने लगी। और कुछ लोग तो बार-बार इस फिल्म को देखने जाने लगे। फिर तो फिल्म ने ऐसा जोर पकड़ा कि करीब 3 करोड़ में बनी यह फिल्म 35 करोड़ कमा गई। 'शोले' की आंच से उस जमाने में केवल एक ही फिल्म अछूती रही और वह थी कम बजट में बनी 'जय संतोषी मां।' लोग उसे श्रद्धा भाव से देखते थे। इस हिसाब से 'शोले' और 'जय संतोषी मां' बॉलीवुड और भारतीय समाज का दिलचस्प कंट्रास्ट था।

लेकिन शोले की गर्मी कुछ अलग ही थी। पान की दुकानों, बस स्टैंडों, चौराहों पर शोले का साउंड ट्रैक और डॉयलाग सुनना और खूब मजे लेना लोगों का शगल बन गया। कई जगह पर 'शोले' के रिकॉर्ड बजते रहते थे और लोग उन्हें सुनने के लिए ठिठक जाते थे। दरसअल शोले के स्क्रीन पर आने के एक महीने बाद पॉलीडोर म्यूज़िक कंपनी ने 48 मिनट का एक फिल्मी डायलॉग रिकॉर्ड रिलीज़ किया था। यही रिकॉर्ड जगह-जगह खूब बजता था। तकनीकी रूप से भी शोले' स्टीरियोफोनिक साउंड और 70 एमएम वाली पहली फिल्म थी। जब थियेटर में इसके गाने बजते थे और तब अलग तरह की गूंज होती थी। तबके दर्शकों के लिए भी यह अलग और दिलचस्प अनुभव था। तब इस फिल्म के डॉयलॉग और साउंड ट्रैक गली, चौराहों और दुकानों पर बजता था, जिसे सुनने के लिए लोगों का हजूम उमड़ता था। 'अरे, ओ सांभा, कितने आदमी थे', 'मियां पान खा लो, 'तुम्हारा नाम क्या है बसंती?', हम अंग्रेजों के जमाने के जेलर हैं, 'आधे इधर जाओ, आधे उधर जाओ, बाकी मेरे पीछे आओ', 'इतना सन्नाटा क्यों है भाई?' 'तूने सरदार का नमक खाया है, अब गोली खा', 'ये हाथ मुझे दे दे ठाकुर', जैसे कई संवाद लोगों को आज तक जुबानी याद हैं। इस फिल्म के 70 एमएएम होने के कारण कुछ थियेटरों में नए पर्दे भी लगाए गए थे। यह भी भारतीय दर्शकों के लिए नया अनुभव था। फिल्म में 'द्वारका दिववेचा' की सिनेमेटोग्राफी लाजवाब थी।

वो वक्त, वो माहौल कहां से लाओगे

बेशक, शोले बदले हुए एंड के साथ फिर रिलीज हुई है। डायलॉग, सीन, अभिनय, संगीत और निर्देशन के हिसाब से आज भी यह एक आइकॉनिक फिल्म है। लेकिन बदले हुए एंड के साथ यह कितनी चलेगी, यह देखने की बात है। इसका मुख्य कारण तो बीते पचास सालों में काफी कुछ बदलना है। संचार क्रांति ने बहुत कुछ बदल डाला है, जबकि 'शोले' में कोई पात्र फोन तक नहीं करता, क्योंकि तब फोन शहरों तक ही सीमित थे। आज हर व्यक्ति के हाथों में मोबाइल फोन है।

शोले में बसंती तांगा चलाती है। क्योंकि तब रेलवे स्टेशन से रामगढ़ तक जाने के लिए सवारी के रूप में तांगा ही उपलब्ध था। नई पीढ़ी के लिए तांगा अब अजूबा है। इसी तरह बसंती का तांगेवाली बनना भी उस जमाने के हिसाब से भले महिला का स्वावलंबन और प्रगतिशीलता का प्रतीक रहा हो, लेकिन अब तो महिलाएं फाइटर प्लेन उड़ा रही हैं।

शोले में दिखाई ट्रेन, जिस पर जय और वीरू चढ़ जाते हैं, वो भाप के इंजन वाली है, ऐसी ट्रेन अब भारत में कहीं नहीं चलती। भले ही शोले नए एंड के साथ रिलीज हो चुकी है, लेकिन अभी यह स्पष्ट नहीं है कि यह भारत के थियेटरों में कब दिखाई जाएगी। दिखाई भी जाएगी तो अब यह कितनी चलेगी, कहना मुश्किल है। क्योंकि 70 एमएम तो क्या अब थ्री डी और एआई फिल्मों का जमाना आ चुका है। सिने संगीत का माधुर्य अब कर्कश और चीखते भावविहीन कसरती संगीत में तब्दील हो चुका है। जीवन में हिंसा कई गुना बढ़ चुकी है। सामाजिक मूल्यों का तेजी से क्षरण हुआ है। अलबत्ता मूल मानवीय चरित्र वैसे ही हैं। सामाजिक प्रवृत्तियां और आग्रह-दुराग्रह, राग- द्वेष वैसे ही हैं। इसीलिए 'शोले' कमाई की कसौटी पर खरी उतरे न उतरे, लेकिन कथानक और किरदारों के पैमाने पर वह 'ऑल टाइम हिट' ही रहेगी। जिन कलाकारों ने शोले को अपना कला से सुलगाया, उनमें से कई आज फिल्म की स्वर्ण जयंती के साक्षी बनने के लिए दुनिया में नहीं हैं। महान कलाकार और ठाकुर बलदेव सिंह की भूमिका निभाने वाले संजीव कुमार, जिन्होंने डाकू चरित्र की परिभाषा ही बदल दी, वो गब्बरसिंह यानी अमजद खान, सुरमा भोपाल की चरित्र को अमर करने वाले जगदीप, हरिराम यानी केश्टो मुखर्जी, विजू खोटे, मॅक मोहन आदि अब दुनिया के पर्दे के पीछे चले गए हैं। फिल्म पश्चिमी ढंग का गीत महबूबा महबूबा गाने पर अभिनय करने वाले जलाल आगा भी नहीं हैं। फिल्म के निर्माता जीपी सिप्पी भी अब नहीं हैं।

इस फिल्म का यादगार और स्टीरियोफोनिक संगीत देने वाली तो पूरी टीम ही अब स्वर्गवासी हो चुकी है। संगीतकार आर. डी. बर्मन, गीतकार आनंद बख्शी, गायक किशोर कुमार और मन्ना डे तथा लता मंगेशकर।

यूं भी किसी भी फिल्म के निर्माण की स्वर्ण जयंती मनना कोई साधारण बात नहीं हैं। कालजयी फिल्मों की किस्मत में ही यह लिखा होता है। 'शोले' की सबसे बड़ी खूबी यही है कि इसके संवाद और अभिनय पचास साल बाद भी उतने ही मारक, प्रेरक और दिलकश हैं। ऐसी फिल्में समय के फलक पर स्थायी हस्ताक्षर होती हैं। जिसे न तो कोई मिटा सकता है और न ही भुला सकता है। सौ साल बाद तो शोले को उन्नीसवीं सदी की उत्तराद्ध के भारतीय समाज, चिंतन और चाल चलन के आईने के रूप में भी देखा जाएगा।

एमपी के बुजुर्ग को देख राहुल गांधी ने रोका काफिला

94 वर्षीय करुणा मिश्रा ने कहा- मुझे भी बिहार की वोट अधिकार यात्रा में चलना है

भोपाल (नप्र)। रविवार सुबह कांग्रेस नेता राहुल गांधी बिहार में शुरू हो रही वोट अधिकार यात्रा में शामिल होने के लिए दिल्ली में अपने आवास से रवाना हो रहे थे। राहुल जैसे ही घर से बाहर काफिले के साथ रवाना हुए। उन्हें हाथ में तिरंगा लिए एक बुजुर्ग दिखाई दिए। राहुल गांधी ने अपनी गाड़ी रोकी और उन्हें बुलाकर करीब एक मिनट तक चर्चा की।

राहुल गांधी के साथ कर चुके पदयात्रा

तीन साल पहले कन्याकुमारी से कश्मीर तक निकाली गई भारत जोड़ो यात्रा में राहुल गांधी के साथ करूणा मिश्रा ने पदयात्रा की थी। करुणा मिश्रा उज्जैन से श्रीनगर तक भारत जोड़ो यात्रा में पदयात्रा करके पहुंचे थे।

वो बुजुर्ग जिनके लिए राहुल ने काफिला रोका

सीधी जिले में चुरहट के रहने वाले करीब 94 वर्षीय करुणा मिश्रा इंदिरा गांधी के समय से कांग्रेस से जुड़े हैं। वे पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय अर्जुन सिंह के परिवार से जुड़े रहे हैं। वे पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह को अपना समधी कहते हैं।

राहुल गांधी से हुई मुलाकात को लेकर करुणा मिश्रा ने कहा- हमारी राहुल गांधी से बहुत पुराना रिश्ता है। भारतीय नवयुवक ने हिन्दुस्तान में ऐसी यात्रा की। जो गांधी जी के बाद अद्वितीय थी। अभी बिहार की यात्रा के संबंध में चर्चा हुई है।

राहुल गांधी ने कहा हम आपके बिहार आने की व्यवस्था कराते हैं। अपना मोबाइल नंबर नोट करा दीजिए। राहुल जी ने यहां (दिल्ली) में ठहरने की व्यवस्था कराने के लिए भी पूछा। तो मैंने कहा मैं ठहरूंगा नहीं सीधे बिहार आऊंगा।

किले से कूदी छात्रा, डेढ़ घंटे झाड़ियों में अटकी रही

ग्वालियर में भाई ने डांटा तो लगा दी छलांग ; रेस्क्यू टीम ने रस्सी की मदद से निकाला

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में 17 साल की एक नाबालिग छात्रा ने किले से कूदकर खुदकुशी की कोशिश की। वह झाड़ियों में अटक गई। किले पर मौजूद लोगों ने देखा तो पुलिस को सूचना दी। जिसके बाद मौके पर पहुंची रेस्क्यू टीम ने करीब डेढ़ घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद नाबालिग को निकाला। पुलिस पूछताछ में छात्रा ने बताया कि भाई ने उसे डांट दिया था। जिससे नाराज होकर वह किले से कूदकर अपनी जान दे रही थी। फिलहाल पुलिस ने नाबालिग के परिजनों को सूचना देकर मामले की जांच शुरू कर दी है।

लाइट एंड साउंड पॉइंट से लगाई छलांग- घटना शनिवार शाम की है। ग्वालियर किले पर बड़ी संख्या में पर्यटक सुहाने मौसम का मजा लेने पहुंचे थे। लोग लाइट एंड साउंड पॉइंट पर किले के साथ सेल्फी ले रहे थे। तभी छात्रा उस पॉइंट से कूद गई। आसपास खड़े लोगों ने जैसे ही यह सब देखा तत्काल पुलिस को सूचना दी।

कॉन्स्टेबल ऋषि सिंह अकेले तलहटी में उतरे

सूचना मिलते ही किले पर स्थित पुलिस चौकी पर तैनात कॉन्स्टेबल ऋषि सिंह तोमर मौके पर पहुंचे। वे आसपास खड़े लोगों की मदद से रस्सी के जरिए किला तलहटी में अकेले ही उतर गए। वहां जाकर देखा कि नाबालिग की सांसें चल रही है। इस पर उन्होंने तत्काल सीनियर पुलिस अधिकारी के साथ नगर निगम की रेस्क्यू टीम को भी मौके पर बुलाया।

डेढ़ घंटे चले रेस्क्यू में छात्रा को निकाला

रेस्क्यू टीम मौके पर पहुंची और लगभग डेढ़ घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद रस्सी की मदद से नाबालिग को किला तलहटी से खींचकर सुरक्षित ऊपर लाया गया। उसे हल्की चोटें आई हैं। इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

बेटी नहीं बेटा चाहती थी सास, नहीं कराया 1 साल के बच्ची का इलाज तो कुपोषण से मौत

शिवपुरी (नप्र)। मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले में एक ऐसी घटना सामने आई है जिसने प्रशासन के दावों की पोल खोल दी है। कुपोषण से ग्रसित 1 साल 3 महीने के बच्ची की मौत हो गई है। बताया जा रहा है कि परिजनों ने उसका इलाज नहीं कराया क्योंकि वह लड़की थी। लड़की की मां कहना है कि उसकी सास बेटी नहीं बेटा चाहती थी। उसी ने बच्ची को मारा है।

बच्ची की मां ने सास पर लगाया गंभीर आरोप- बच्ची का नाम दिव्यांशी था। उसकी मां खुशबू धाकड़ ने अपनी सास पर गंभीर आरोप लगाया है। उसने कहा कि सास को बेटी पसंद नहीं थी और वह उसका इलाज नहीं करवाना चाहती थी। खुशबू ने बताया कि जब बेटी बीमार होती थी, तो उसकी सास कहती थी कि यह लड़की है, इसे मरने दो। खुशबू ने अपने पति और देवर से इलाज के लिए कहा तो उन्होंने उसे मारा। बच्ची को अस्पताल में इलाज कराने के लिए नहीं ले जा रहे थे।

सीएमएचओ ने क्या कहा?- इस मामले को लेकर सीएमएचओ डॉ. संजय ऋषिश्वर ने बताया कि 1 अगस्त को दस्तक अभियान के दौरान दिव्यांशी की पहचान हुई थी। हमने परिवार को समझाया कि उसे अस्पताल में भर्ती करवा दें। लेकिन वे नहीं माने। फिर हमने गांव के सरपंच और लोगों को बुलाकर पंचायत की। उन्हें भी समझाया गया। इसके बाद बच्ची को अस्पताल में भर्ती करवाया गया। लेकिन परिवार वाले उसे घर वापस ले गए। हालत बिगड़ने पर उसे फिर अस्पताल लाया गया। लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

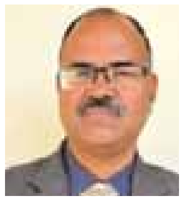

अगले हफ्ते साय मंत्रिमंडल का विस्तार

चर्चा है कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय विदेश जाने से पहले अपने मंत्रिमंडल का विस्तार कर देंगे। मुख्यमंत्री 21 से 31 अगस्त तक जापान और दक्षिण कोरिया की यात्रा पर रहेंगे। खबर है कि 18 अगस्त को शपथ समारोह का आयोजन हो सकता है। शनिवार को मुख्यमंत्री की राज्यपाल से मुलाक़ात के बाद मंत्रिमंडल विस्तार की संभावना प्रबल हो गई है। हरियाणा का फार्मूला लागू कर छत्तीसगढ़ में भी मुख्यमंत्री समेत 14 मंत्री बनाए जाएंगे। इससे साय कैबिनेट में तीन नए लोगों को जगह मिल जाएगी। कहा जा रहा है कि किसी मंत्री को कैबिनेट से नहीं हटाया जाएगा और डॉ रमन सिंह मंत्रिमंडल में मंत्री रहे या वरिष्ठ विधायकों को मंत्री नहीं बनाया जाएगा। नए मंत्री के लिए सरगुजा के विधायक राजेश अग्रवाल, आरंग के विधायक गुरु खुशवंत साहेब और दुर्ग शहर के विधायक गजेंद्र यादव का नाम हवा में तैर रहा है। रायपुर उत्तर के विधायक पुरंदर मिश्रा भी दौड़ में हैं। बताते हैं मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय बिलासपुर के विधायक और पूर्व मंत्री अमर अग्रवाल को अपने कैबिनेट में रखना चाहते हैं। दिल्ली के नेता अमर अग्रवाल के नाम पर सहमत हैं, पर छत्तीसगढ़ के नेता अमर अग्रवाल के पक्ष में नहीं हैं। माना जा रहा है कि साय कैबिनेट के दो मंत्री अमर अग्रवाल के खिलाफ लॉबिंग कर रहे हैं। दोनों मंत्री एक ही संभाग के हैं। दोनों मंत्रियों को राज्य के दो ताकतवर भाजपा नेताओं का साथ है। सुनने में आया है कि राज्य के नेता तर्क दे रहे हैं कि अमर अग्रवाल को मंत्री बनाए जाने से राजेश मूणत, अजय चंद्राकर, रेणुका सिंह और लता उसेंडी को भी मंत्री बनाना पड़ेगा। इन लोग भी सशक्त दावेदार हैं। अब शपथ के बाद ही साय कैबिनेट का असल खाका सामने आएगा। अब लोगों को शपथ की तारीख का इंतजार है।

राहुल टिकरिहा को तोहफा

प्रदेश भाजपा की नई कार्यकारिणी में राहुल योगराज टिकरिहा को भारतीय जनता युवा मोर्चा का अध्यक्ष बनाया गया है। चर्चा है कि राहुल टिकरिहा ने 2023 के विधानसभा चुनाव में बेमेतरा विधानसभा सीट से भाजपा की टिकट की मांग की थी, पर पार्टी ने तब टिकट नहीं दिया था।पार्टी ने दिपेश साहू को उम्मीदवार बना दिया। वे विधायक का चुनाव जीत गए। बताते हैं इससे राहुल को झटका लगा था और नाराज भी हो गए थे। अब उन्हें भाजयुमो का प्रदेश अध्यक्ष बनाकर तोहफा दे दिया गया है। राहुल को रवि भगत की जगह भाजयुमो का प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया है। मंत्री ओपी चौधरी के खिलाफ खुली बगावत कर पिछले दिनों रवि भगत चर्चा में आए थे। पार्टी ने उन्हें कारण बताओ नोटिस भी जारी किया था। रवि भगत को भाजयुमो के प्रदेश अध्यक्ष पद से तो हटा दिया गया, पर कारण बताओ नोटिस पर कार्रवाई का अता-पता नहीं है। कहते हैं रवि भगत ने भी ताल ठोंक लिया था। इसलिए पार्टी के बड़े नेताओं ने चुप्पी में ही भला समझा।

कौन होगा रायपुर का पहला पुलिस कमिश्नर ?

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने 15 अगस्त को अपने भाषण में रायपुर में पुलिस कमिश्नर सिस्टम लागू करने का ऐलान किया है। जब से छत्तीसगढ़ बना है, तब से रायपुर में पुलिस कमिश्नर सिस्टम लागू करने की बात चल रही है। अब कब से रायपुर में पुलिस कमिश्नर सिस्टम अस्तित्व में आता है, यह बड़ा सवाल है ? पुलिस कमिश्नर सिस्टम को लेकर आईएएस और आईपीएस अफसरों का अब तक कोई खास रिएक्शन भी नहीं आया है। एक रिटायर्ड आईपीएस ने ही फैसले का स्वागत किया है और पुलिस को बधाई दी है। रायपुर का पुलिस कमिश्नर एडीजी स्तर के अफसर को बनाया जाता है या आईजी स्तर के अधिकारी को, यह भी चर्चा का विषय है। पर रायपुर में पुलिस कमिश्नर सिस्टम लागू करने की घोषणा के बाद पहले कमिश्नर को लेकर कयासों का बाजार गर्म हो गया है। रायपुर के पहले पुलिस कमिश्नर के लिए सुंदरराज पी., राहुल भगत और अमरेश मिश्रा का नाम चर्चा में है। राहुल भगत और अमरेश मिश्रा 2005 बैच के आईपीएस अफसर हैं। सुंदरराज पी. 2003 के आईपीएस हैं और काफी साल से बस्तर के आईजी हैं। वे नक्सलियों के खिलाफ मोर्चा संभाले हुए हैं। राहुल भगत मुख्यमंत्री के सचिव हैं और उन्हें मुख्यमंत्री का काफी करीबी माना जाता है। अमरेश मिश्रा अभी रायपुर रेंज के आईजी हैं, साथ में ईओडब्ल्यू के मुखिया भी।

महिला आईएएस को दिल्ली से फटकार

कहते हैं केंद्र सरकार की एक योजना में छत्तीसगढ़ की कमजोर स्थिति को लेकर भारत सरकार के अफसरों ने राज्य की महिला आईएएस अफसर को खरी-खरी सुनाई। बताते हैं केंद्र के अफसरों की नाराजगी के बाद मुख्यमंत्री सचिवालय के एक अफसर ने भी महिला आईएएस की क्लास ले ली। बताते हैं महिला आईएएस जिस विभाग की मुखिया हैं, उस विभाग को मुख्य सचिव के समकक्ष वाले अफसर देखते थे। पिछली सरकार ने परंपरा तोड़ी तो वह चली आ रही है। चर्चा है कि महिला आईएएस अफसर मंत्रालय में प्रतिनियुक्ति पर दो अफसरों की राय पर ही चलती है। सुनने में आ रहा है कि प्रतिनियुक्ति पर आए अफसर महिला आईएएस को गलत -सलत सलाह दे जाते हैं। इससे विभागीय मंत्री भी नाराज हैं। विभागीय मंत्री ने दोनों अफसरों को हटाने का प्रस्ताव भेजा, जिसे महिला आईएएस ने अपने तर्क के आधार पर मंत्री जी को लौटा दिया। महिला आईएएस ने टीप दे दी कि दोनों की प्रतिनियुक्ति अवधि दो साल नहीं हुई है, इसलिए उन्हें वापस मूल विभाग में भेजना उचित नहीं होगा। महिला आईएएस की इस टीप से विभागीय मंत्री खफा बताए जाते हैं। चर्चा है कि धरती पुत्रों से संबंधित इस विभाग में महिला आईएएस की मंत्री जी से पटरी शुरू से नहीं बैठ रही है।

क्या अमिताभ जैन को और एक्सटेंशन मिलेगा ?

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के साथ मुख्य सचिव अमिताभ जैन के विदेश जाने की ख़बरों के बीच अमिताभ जैन के एक्सटेंशन की भी अटकलें शुरू हो गई है। अमिताभ जैन को मुख्य सचिव के पद पर एक जुलाई से तीन महीने का एक्सटेंशन मिला है। यह अवधि 30 सितंबर को पूरी हो जाएगी। अमिताभ जैन जब विदेश से लौटेंगे तो उनके पास काम करने के लिए एक माह ही बचेगा। कयास लगाया जा रहा है कि अमिताभ जैन को मुख्य सचिव के पद पर तीन महीने का एक्सटेंशन और मिल जाएगा। अब देखते हैं आगे क्या होता है। वैसे मुख्य सचिव के दावेदार कुर्सी हासिल करने की कोशिश में लगे हैं।

गृहमंत्री विजय शर्मा पर सवाल

नक्सली मोर्चे पर साय सरकार को लगातार सफलता मिल रही है, पर राज्य में कानून व्यवस्था को लेकर सवाल भी उठने लगे हैं। रायपुर के तीन युवकों की धमतरी में और रायपुर में एक डिलीवरी ब्यॉय की हत्या ने प्रदेश की जनता को हिलाकर रख दिया है। छत्तीसगढ़ में सरेआम ऐसी घटनाओं की कल्पना नहीं की जाती। छत्तीसगढ़ में चाकूबाजी और नशाखोरी भी चरम पर दिखाई पड़ रही। इसके अलावा रील और सेल्फी का शौक भी बड़ी समस्या बनती जा रही है। स्वतंत्रता दिवस के दिन कवर्धा के समारोह में और कोरबा में जिस तरह उत्पात की खबरें आईं, उससे लग रहा है कि पुलिस का इकबाल खत्म हो गया है। नक्सल मोर्चे पर जीत से ही सरकार की साख नहीं चमकने वाली। राज्य भर में बढ़ते अपराध को रोकना होगा। अपराध रोकना पुलिस का काम है। अनियंत्रित अपराध कहीं न कहीं गृहमंत्री विजय शर्मा के क्षमता पर भी सवाल खड़े कर रहे हैं। फायर ब्रांड नेता को राज्य के भीतर अपराध रोकने पर भी काम करना होगा। वैसे भी कांग्रेस खराब कानून-व्यवस्था पर सवाल खड़े कर रही है।